सरस्वती वंदना गीत

दैंण ह्वे जाए माँ सरस्वती

दैंण ह्वे जाए माँ सरस्वती, माँ सरस्वती दैंण ह्वे जाए.
हिंग्वाली अन्वार तेरि, हंस की सवारी मैय्या, हंस की सवारी.
तू हमरी ज्ञानदात्री, हम त्यारा पुजारी मैय्या हम त्यारा पुजारी.
बुद्धि दी दिए मति दी दिए, माँ सरस्वती दैंण ह्वे जाए.
तेरि कृपा की चाह में छ्युं, सच्चाई की राह में छ्युं, सुण ले माँ पुकार.
जाति धर्म छोड़ि छाड़ि, नक विचार छोड़ि छाड़ि, भल दिए विचार.
ध्यान धरिए, भल करिए माँ सरस्वती दैंण ह्वे जाए.
श्वेत हंस, श्वेत कमल, श्वेत माला मोती.
एक हाथ में वींण छाजि रै, एक हाथ में पोथी.
झोली भरिए पार करिए माँ सरस्वती दैंण ह्वे जाए.
मन को अन्ध्यार मिटाए, ज्ञान को दीपक जलाए, ज्ञान को दीपक.
तेरि करछूं मैं विनती, मेरि धरिए लाज मैय्या, मेरि धरिए लाज.
ज्ञान दी दिए विवेक दी दिए मां सरस्वती दैंण ह्वे जाए.
दैंण ह्वे जाए माँ सरस्वती, माँ सरस्वती दैंण ह्वे जाए.

सन्दर्भ : सत्यम जोशी, भाषा: कुमाऊँनी

प्रवाह

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका प्रवेशांक (संयुक्तांक)

2017-25

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी
चम्पावत, उत्तराखंड

प्रवाह

स्वात्वाधिकार एवं प्रकाशन राजकीय महाविद्यालय- अमोड़ी (चम्पावत)

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित

(प्राचार्य)

मो.- 9410718740

प्रधान सम्पादक

डॉ. अतुल कुमार मिश्र

मो.- 9532510299

संयुक्त संपादक

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

छात्र सम्पादक - राम सिंह

छात्रा सम्पादक - अंजली बिष्ट

शब्द संयोजन - भागीरथी भट्ट

प्रपत्र-4

1. **प्रकाशन का नाम** - प्रवाह
2. **प्रकाशन अवधि** - वार्षिक
3. **मुद्रक का नाम** - उत्तराखण्ड प्रकाशन संस्थान, रूद्रपुर, उधम सिंह नगर
4. **प्रकाशक का नाम**- प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित
   राष्ट्रीयता - भारतीय
   पता - प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) उत्तराखण्ड
5. **उन व्यक्तियों के नाम व पते**

मैं प्रो0 डॉ0 अजिता दीक्षित घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य है। पत्रिका प्रवाह में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता हेतु रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। रचनाओं में व्यक्त अभिमत से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्राचार्य

प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित

अनुक्रमणिका

खण्ड-1

1. प्राचार्य की कलम से 16
2. अनुशासनात्मक और ज्ञानवर्धक विद्यार्थी जीवन 17
3. प्रगति के चरण: स्थापना से गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक विकास की ओर 18
4. राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) -एक परिचय 19
5. महाविद्यालय गीत 20
6. प्रभु श्रीराम 21
7. उत्तराखंड में ई-शासन और समान नागरिक संहिता 26
8. 'गीतांजलि' और 'दीपशिखा' का साहित्यिक तीर्थ 27
9. नवयुग की धारा में प्रवेश करती अश्लीलता की अपसंस्कृति 30
10. उत्तराखण्ड में पर्यटन और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र का भविष्य: स्थाई विकास और रोजगार सृजन 31
11. कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ 33
12. पं. गोविन्द वल्लभ पन्त जी का जीवन परिचय 34
13. सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा 36
14. उत्तराखण्ड में महिला सशक्तिकरण 37
15. डॉ राजेन्द्र प्रसाद का आत्मानुशासन 38
16. शिक्षा के क्षेत्र में संचार माध्यम 39
17. विकसित भारत के लिए दृष्टिकोण 2047 40
18. राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण 41
19. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं पर निबंध 42
20. 14 सितम्बर हिन्दी दिवस 43

खण्ड-2

21. कविताएँ 45
22. उलटबांसी 46
23. माँ ने कहा था 46
24. मेरे पापा 47
25. भाई-बहन 47
26. हिन्दी दिवस 47
27. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 48
28. मैं नारी हूं 48
29. स्वामी विवेकानंद 48
30. शिक्षक 49
31. गाँधी जी 49

खण्ड-3

32. बहु विषयक-निबंध 51
33. उत्तराखण्डस्य इतिहासकार: 52
34. भारतरत्नम् गोविन्द बल्लभपन्त: 52
35. मानवजीवनस्यलक्ष्यम् 53
36. विद्यार्थी जीवनस्य 53
37. संस्कृत सुभाषित 53
38. आतंकवाद 54
39. व्यायाम: 54
40. परोपकार: 54
41. हिमालय पर संस्कृत में लेख 54
42. अर्थविज्ञानम् 55
43. परोपकार: 56
44. राजनीति विज्ञान विभाग 58
45. क्रीड़ा विभाग-राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी 61
46. Importance of Education for Girl child 57
47. Swami Vivekananda 57
48. Department of English the foundation 60
49. इतिहास विभाग: एक झलक 62
50. शिक्षा शास्त्र विभाग (आख्या) 63
51. संस्कृत विभाग आख्या 65
52. हिन्दी विभाग 67
53. हिंदी विभाग (परिषद गठन) 67
54. हिंदी विभाग 67
55. अर्थशास्त्र विभाग 68
56. अर्थशास्त्र विभाग के छात्र-छात्राओं के परीक्षा परिणाम 70
57. रोवर्स और रेंजर्स आख्या 71
58. छात्र संघ 72
59. कैरियर काउंसिलिंग (आख्या) 74
60. राष्ट्रीय सेवा योजना 75
61. आजादी का अमृत महोत्सव 76
62. स्वीप कार्यक्रम 77
63. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान: 77
64. बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान: समद्ध बेटियां व समृद्ध समाज 78
65. कम्प्यूटर ज्ञान से बेटी का भविष्य एक नयी शुरूआत 79
66. शीर्षक महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ 79
67. आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ 79
68. रोवर्स प्रशिक्षण शिविर 99
69. समाचार पत्रों में महाविद्यालय की खबरें 103
70. महाविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियॉ व गतिविधियां 82-102

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून- 248001
सचिवालय फोन: 0135-2716262
0135-2650433
फैक्स: 0135-2712827
विधान सभा फोन: 0135-2665100
0135-2665497
फैक्स: 0135-2666166
Email: cm-ua@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी, चम्पावत द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रवाह' का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्र-पत्रिकाएँ छात्र-छात्राओं को उनकी सृजनात्मक, रचनात्मक क्षमताओं के विकास के साथ ही संवेदनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु सशक्त मंच उपलब्ध कराती हैं, जिससे उनमें नई ऊर्जा का संचार होता है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका में प्रकाशित लेख छात्र-छात्राओं के साथ ही अन्य पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे, ऐसी मेरी आशा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

श्री पुष्कर सिंह धामी
(मुख्यमन्त्री)

डॉ. धन सिंह रावत
मंत्री
चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा,
विद्यालयी शिक्षा

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
कक्ष सं0 : 20
फोन : 0135-2666410 (का.)
फैक्स : 0135-2666411

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) की वार्षिक पत्रिका "प्रवाह" का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों की रचनात्मकता और विचाराभिव्यक्ति को सार्थक दिशा देने का एक माध्यम होगी। साथ ही महाविद्यालय पत्रिका केवल संस्थान की शैक्षिक, अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि ही नहीं बल्कि यह छात्र-छात्राओं के बौद्धिक, वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच भी प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित होंगी, जो छात्र-छात्राओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ उनके विचारों में रचनात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होंगी।

मैं, इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य, संपादक मंडल, प्राध्यापक वर्ग, कार्यालय स्टाफ तथा समस्त विद्यार्थियों को अपनी ओर से वार्षिक पत्रिका "प्रवाह" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(डॉ. धन सिंह रावत)

20-12-2025

उच्च शिक्षा निदेशालय,उत्तराखण्ड

Mail- Higherducation.director@gmail.com 05946–240555, 240666,240777

प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ खाली, निदेशक (उच्च शिक्षा)
उच्च शिक्षा निदेशालय हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

शुभकामना संदेश

मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी की वार्षिक पत्रिका "प्रवाह" का प्रकाशन हो रहा है। किसी भी शैक्षिक संस्था की पत्रिका उसकी बौद्धिक चेतना, रचनात्मक दृष्टि एवं अकादमिक वातावरण का सजीव प्रतिबिंब होती है। महाविद्यालय द्वारा पत्रिका "प्रवाह" के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अपने विचारों, साहित्यिक अभिव्यक्तियों, शोध परक लेखों तथा सृजनात्मक लेखन को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह प्रयास विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच प्रदान करने के साथ-साथ उनमें सृजनशील चिंतन, नवाचार तथा आत्मविश्वास को भी सुदृढ़ करता है।

मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हो रही है कि दुर्गम पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद महाविद्यालय शैक्षिक गुणवत्ता, सांस्कृतिक मूल्यों एवं रचनात्मक गतिविधियों के संवर्धन हेतु निरन्तर सक्रिय है। यह पत्रिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों के अनुरूप समग्र, मूल्यपरक एवं कौशलोन्मुख शिक्षा की दिशा में एक प्रशंसनीय पहल है।

इस अवसर पर मैं महाविद्यालय की प्राचार्या, संपादक मंडल, शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों को इस सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि "प्रवाह" भविष्य में भी ज्ञान, विचार और सृजन की अविरल धारा के रूप में निरन्तर प्रवाहित व प्रकाशित होती रहेगी।

दिनांक : 18-12-2025

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. वी.एन खाली

प्रो. (डॉ0) कमल किशोर पाण्डे
पूर्व निदेशक (उच्च शिक्षा)

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत) अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रवाह' का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जाएगी जिससे छात्रों को सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृति और अध्ययन रुचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आएगा। छात्र-छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

मंगलकामनाओं सहित।

(डॉ0 कमल किशोर पाण्डे

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा उत्तराखंड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो० – +91 7579138434
ईमेल – vcssju@gmail.com

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत) द्वारा 'प्रवाह' शीर्षक से संयुक्तांक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। उत्तराखंड का प्रत्येक क्षेत्र अपने आप में ऐतिहासिक विरासत से जुड़ा हुआ है। इस पर्वतीय राज्य में कई-कई सांस्कृतिक धरोहरें, इतिहास एवं पुरातत्व की सामग्री फैली हुई है। जब चम्पावत क्षेत्र की चर्चा आती है तो यह पूरा क्षेत्र उत्तराखंड के मानचित्र में एक अविस्मरणीय योगदानों का साक्षी रहा है। इस क्षेत्र में चंद शासकों की राजधानी रही है तथा यहां के महान विभूतियों ने उत्तराखंड राज्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, धरोहरों और जनमानस में बिखरे हुए परम्परागत ज्ञान को संकलित कर और विद्यार्थियों को उनसे जोड़कर इस अंचल को विकसित किया जा सकता है। साथ ही उनमें रचनात्मकता और कौशल विकसित करने हेतु शिक्षकों द्वारा कार्य किया जा सकता है। हमारी विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाएं, उनके ज्ञान के स्तर को और अपने क्षेत्र से जोड़ने के इन प्रयासों का प्रकाशन होते रहना चाहिए। इस प्रकार के रचनात्मक प्रकाशनों से विद्यार्थियों में सोचने-समझने की क्षमता विकसित होती है और वे देश, समाज और क्षेत्र के लिए अपना योगदान दे सकते हैं।

मैं राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत) की प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित, पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों, शिक्षकों, छात्रों एवं समस्त सहयोगियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

शुभमस्तु

09 जून, 2025

दिनांक : 18-12-2025

शुभकामनाओं सहित।

(प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट)
कुलपति

उच्च शिक्षा निदेशालय,उत्तराखण्ड

क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर, फैकल्टी लॉज, देहरादून– 248001

संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा

E-Mail - jdhedehradun@gmail.com

शुभकामना संदेश

अत्यन्त का हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) द्वारा संयुक्तांक वार्षिक पत्रिका "प्रवाह" का संपादन एवं प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चित ही यह पत्रिका महाविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों के दर्पण के साथ ही विद्यार्थियों और प्राध्यापकों की प्रतिभा, सृजनशीलता और विचारशीलता को प्रदर्शित करती है। इस सृजनात्मक कार्य के सफल संपादन और प्रकाशन हेतु मैं महाविद्यालय की प्राचार्य, संपादनमंडल, समस्त प्राध्यापकगण, कार्यालयी स्टाफ एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता/करती हूँ।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता और सामूहिक ऊर्जा को व्यापक रूप से साझा किया जाएगा। इस प्रेरणादायक और सराहनीय प्रयास के लिए मेरी ओर से ढेरों बधाई व शुभकामनाएँ।

दिनांक : 23-12-2025

प्रो.(डॉ.) आनन्द सिंह उनियाल
संयुक्त निदेशक उ.शि

स्वामी विवेकानंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लोहाघाट (चम्पावत)

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी द्वारा महाविद्यालय की संयुक्तांक वार्षिक पत्रिका "प्रवाह" का सुसंपादन एवं प्रकाशन किया जा रहा है।

इस सराहनीय कार्य के लिए मैं महाविद्यालय की प्राचार्य, संपादन समिति, समस्त शिक्षकगण, कार्यालय स्टाफ एवं समस्त छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। यह प्रयास विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ-साथ लेखन, चिंतन और नवाचार के लिए प्रेरित करेगा।

पत्रिका "प्रवाह" निश्चित रूप से महाविद्यालय की शैक्षणिक पहचान, सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक परंपरा को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन ज्ञान, विचार और मूल्यों के प्रवाह को निरंतर बनाए रखेगा।

मैं कामना करती हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी निरंतर प्रगति करे और सभी पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत बने।

दिनांक : 22-12-2025

Shubla

प्राचार्य

प्रो. (डॉ.) संगीता गुप्ता
स्वामी विवेकानंद राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय लोहाघाट (चम्पावत)

संरक्षकः
प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित
प्राचार्य

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादकः
डॉ. अतुल कुमार मिश्र

संयुक्त सम्पादक
डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

सदस्य

डॉ. अर्चना वर्मा

डॉ. रंजना सिंह

श्री संजय कुमार गंगवार

श्री हरीश चन्द्र जोशी

छात्र सम्पादक
राम सिंह

छात्रा सम्पादक
अंजली विष्ट

शब्द संयोजन
भागीरथी भट्ट

महाविद्यालय परिवार

बायें से दायें क्रमशः डॉ. रंजना सिंह - अंग्रेजी विभाग, श्रीमती पुष्पा - इतिहास विभाग, डॉ. अर्चना वर्मा - हिन्दी विभाग, प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित - प्राचार्य, डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता - अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. संजय कुमार -राजनीति विज्ञान विभाग, डॉ. अतुल कुमार मिश्र - संस्कृत विभाग, श्री संजय कुमार गंगवार - शिक्षाशास्त्र विभाग, पीछे खड़े बायें से दायें क्रमशः श्री हरीश चन्द्र जोशी - प्रधान सहायक, श्री दशरथ सिंह बोहरा - अनुसेवक तथा नीचे बायें से दायें क्रमशः श्री हरीश चंद्र ओझा - योगाचार्य व श्री दिनेश चंद्र सिंह रावत - स्वच्छक/चौकीदार।

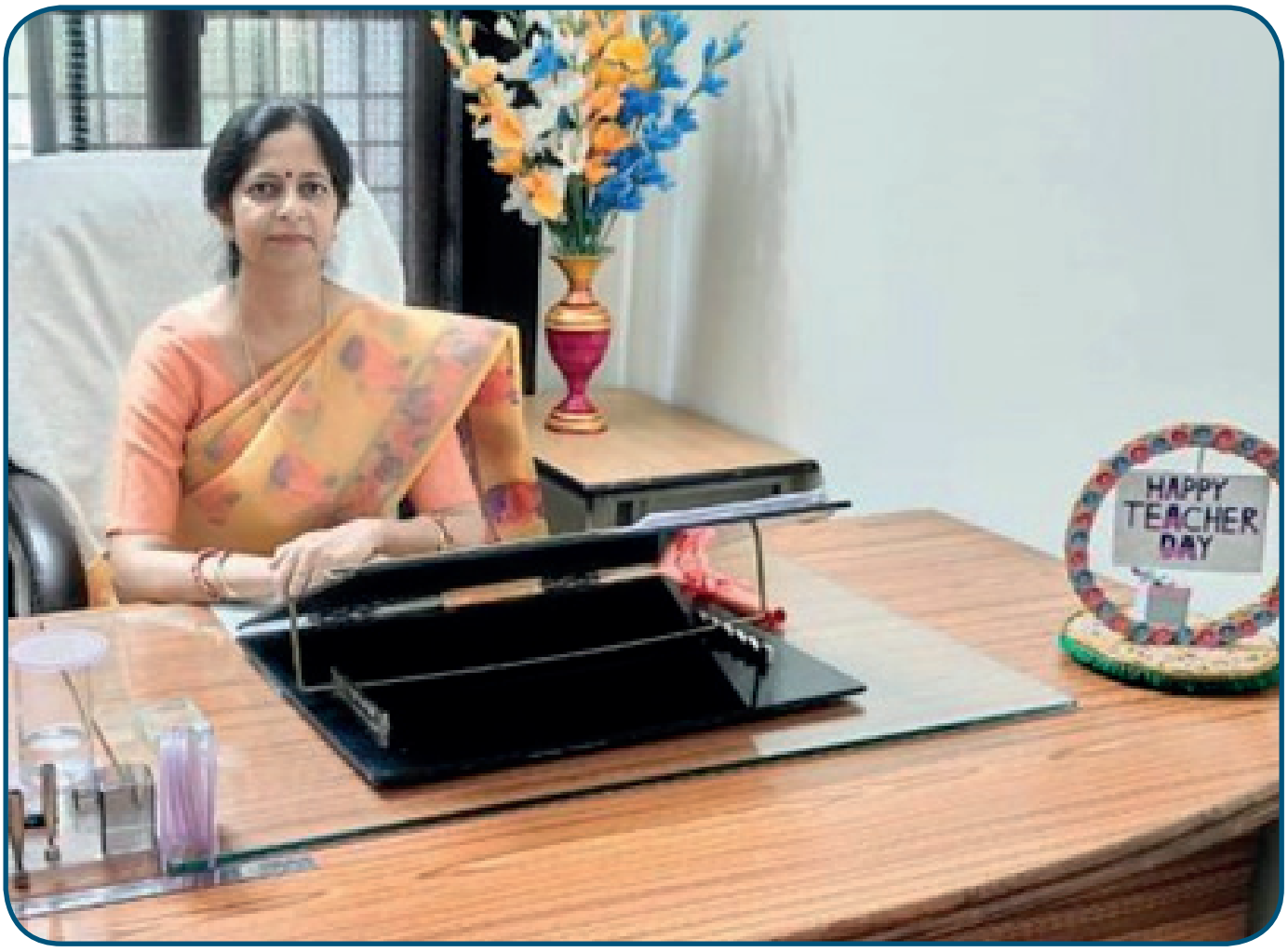

प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित
(प्राचार्य)
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी चम्पावत, उत्तराखंड

प्राचार्य की कलम से ....

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका प्रवाह का प्रथम अंक संयुक्तांक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है।

"प्रवाह" पत्रिका का आसय निरंतरता, चेतना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक है। उत्तराखंड राज्य के चम्पावत जनपद में स्थित नैक बी ग्रैड से आच्छादित राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी के उच्च शिक्षा-परिप्रेक्ष्य में यह पत्रिका विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के विचारों, ज्ञान और रचनात्मक ऊर्जा की अविरल धारा को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। प्रवाह का उद्देश्य महाविद्यालयीन जीवन में बौद्धिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता, राष्ट्र के विकास की भावना, और सृजनशीलता को प्रोत्साहित करना है, जिससे ग्रामीण व पर्वतीय परिवेश में उच्च शिक्षा अधिक सार्थक, जीवंत और प्रेरणादायी बन सके। आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहाँ शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। आज के विद्यार्थी बहुआयामी हैं। वे अध्ययन के साथ-साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझते हैं। शिक्षा एक प्रक्रिया है, जो हमें एक बेहतर इंसान, जिम्मेदार नागरिक और संवेदनशील व्यक्तित्व बनाने में सहायता करती है।

मैं अपने समस्त विद्यार्थियों से कहना चाहती हूँ कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल अंक-प्राप्ति ही नहीं, बल्कि एक संतुलित, सशक्त और सजग व्यक्तित्व का निर्माण है। आत्मविश्वास, अनुशासन और निरन्तर प्रयासख्रयही तीन स्तम्भ हैं, जो आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिला सकते हैं। सभी विद्यार्थी इस महाविद्यालय की सबसे बड़ी शक्ति हैं। आपकी सुंदर सकारात्मक सोच और विचार इस संस्थान को जीवन्त और ऊर्जावान बनाते हैं। आप अपने लक्ष्य के प्रति गंभीर रहें तथा अध्ययन के साथ-साथ पाठ्येतर गतिविधियों में भी भागीदारी करें।

असफलताओं से डरने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक प्रयास, प्रत्येक असफलता भी जीवन का एक अध्याय है, जो अन्ततः सफलता की भूमिका तैयार करता है। जीवन के प्रत्येक अनुभव से कुछ-न- कुछ सीखते हुए आगे बढ़ते रहने का प्रयास करना चाहिए। महाविद्यालय में शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में प्राध्यापकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मियों की अहम भूमिका है, जिसके फलस्वरूप संस्था उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। पत्रिका के प्रकाशन से विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को रचनात्मक दिशा देने का अवसर प्राप्त होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह प्रवेशांक उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और नई स्फूर्ति जाग्रत करेगा। पत्रिका हेतु जिन विद्यार्थियों के लेख, स्वरचित कविताएँ आदि प्रकाशित हुई हैं, उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। जो विद्यार्थी किंचित कारणवश रचनाएँ नहीं दे सके, वे आगे प्रयास करें। निश्चित ही यह पत्रिका हमारे महाविद्यालय परिवार, विद्यार्थियों की सोच, सृजनात्मकता और सपनों का प्रतिबिंब है।

मैं अपने उन सभी सहयोगी विद्वतजनों को भी बधाई देती हूँ, जिनके सृजनात्मक एवं विचारोत्तेजक लेख विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन एवं मार्गदर्शन में अहम भूमिका का निर्वहन करेंगे। अन्त में पत्रिका के प्रकाशन पर प्रधान सम्पादक, संयुक्त संपादक एवं सम्पादक-मण्डल के समस्त सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ, जिनके प्रयासों से यह अंक सम्भव हो पाया है। अतः सभी को उज्ज्वल भविष्य की अनन्त शुभकामनाएँ।

सर्वे भवन्तु सुखिनःसर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्

प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित (प्राचार्य)
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत), उत्तराखण्ड

अनुशासनात्मक और ज्ञानवर्धक विद्यार्थी जीवन

हेतु योगः-"योग" शब्द में समस्त सृष्टि का सार छिपा है विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में योग का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है योग से परिचित होने के बाद विद्यार्थी शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक रूप से प्रबल बनते हैं तथा विद्यार्थी उत्साह एवं सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपने जीवन पथ पर निरंतर अग्रसर होते हैं। योग के काल की बात करें तो योग आदि-अनादि काल और हमारे पूर्वजों के पूर्वज भी इससे भलीभांति परिचित थे वह भी योगिक क्रिया का अभ्यास निरंतर करते थे आज हमें अपनी खोई हुई संपत्ति के रूप में योग विद्या प्राप्त हुई है सबसे अच्छी बात यह है योग को शिक्षा के साथ जुड़ने का अवसर अब प्रदान होने लगा है और आने वाली पीढ़ी बड़ी सौभाग्यशाली है कि उन्हें यह अमूल्य ज्ञान स्कूलों में प्राप्त होने लगा है ।

प्राचीन समय से ही हमारे पूर्वज, ऋषि मुनि योग विद्या के प्रयोग से स्वास्थ्य लाभ व मनन, चिंतन, स्मरण, धारणा ध्यान, समाधि की अवस्था प्राप्त कर परम तत्व परमेश्वर को प्राप्त होते थे। अगर हम योगिक क्रिया के प्रभाव की बात करें तो इससे विद्यार्थी एकाग्र व आलस्य रहित, शक्ति से परिपूर्ण व पूर्णतया स्वस्थ लाभ लेकर अपने कार्यक्षेत्र में दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की कर असीम सकारात्मक ऊर्जा के साथ कार्य कर और हमारे समाज देश की दिशा और दशा बदलने में अपना महत्वपूर्ण स्थान निभा सकते हैं तथा योगिक क्रिया का सकारात्मक प्रभाव जब विद्यार्थी जीवन में पड़ता है जीवन का मूल तत्व योग तत्व को समझ जाता है विद्यार्थी जीवन में अगर योग को अपनाता है तो वयासनो से मुक्त भारत को बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है विद्यार्थी के लिए योग जीवन में उतना ही लाभदायक है जितना उसके लिए पोषक तत्व युक्त भोजन , पोषक तत्व भोजन ग्रहण कर शरीर की कार्यक्षमता बढ़ती है वैसे ही योगिक क्रिया द्वारा मानसिक , शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रुप से विद्यार्थी प्रबल बनता है मानसिक रूप से विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में स्थिरता , ध्यान क्षेत्र प्रबल एकाग्र , और दृढ़ संकल्प बनता है। शारीरिक रूप से वह शक्ति से परिपूर्ण होता है उसमें अत्यधिक ऊर्जा का प्रभाव देखने को मिलता है। आध्यात्मिक प्रक्रिया में विद्यार्थी शरीर, मन और आत्मा को भलीभांति समझ जाता है तथा सामाजिक रूप में सुसंस्कारिक रूप से अपनी छवि को प्रदर्शित करता है । योग वा योगिक प्रभाव के कारण विद्यार्थी ज्ञान क्षेत्र का विस्तार होता है योग को व योग के चमत्कारी प्रभाव को संपूर्ण विश्व ने अपनाया है इससे भारत की छवि योग गुरु के रूप में प्रचलित वह प्रदर्शित हुई है विश्व में योग को अधिकतम देशों ने अपने शिक्षा के साथ अनिवार्य रूप से जोड़ना शुरू कर दिया है अब शिक्षा के साथ-साथ योग की वैकल्पिक चिकित्सा पर भी कार्य करना शुरू हो चुका है आज संपूर्ण विश्व योग के चमत्कारी प्रभाव से अछूता नहीं है आज पूरा विश्व योगिक क्रिया का अभ्यास करने के साथ-साथ एक दूसरे को भी योग व प्रकृति की शरण में आने की सलाह दे रहा है । आज छात्रों के लिए योग अत्यंत आवश्यक इसलिए हो चुका है क्योंकि आज का छात्र कल का भविष्य निर्माणकर्ता बनेगा। बहुत अभिभावकों के मन में यह प्रश्न उठता है की योग की शुरुआत बच्चे को कब से कराई जाए इसके प्रत्युत्तर मैं बताना चाहता हूं बचपन से ही बच्चों को आसन, प्रणामयाम का अभ्यास योग गुरु के निर्देशन में कराया जाए तो आप पाएंगे उसमें योग ना करने वालों की अपेक्षा 100 गुना अंतर आपको देखने को मिलेगा जैसे बच्चे का शरीर का अत्यधिक लचकदार होना, वज्र के समान शक्ति से परिपूर्ण होना, एकाग्र होना अध्ययन क्षेत्र में भी बहुत अच्छा प्रभाव देखने को मिलेगा । योग अमृत रस समान है इसका सेवन स्वयं भी करें और दूसरों को भी करवाएं तथा उचित योग गुरु के निर्देशन में योग का अभ्यास करें।

योग प्रशिक्षक
योगाचार्य एवं योग चिकित्सक हरीश चंद्र ओझा

प्रगति के चरण: स्थापना से गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक विकास की ओर

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी की स्थापना 18 मई, सन 2016 में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा स्थानीय समाजसेवियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा उच्च शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु की गई। तत्कालीन प्राचार्य डॉ0 जी. प्रकाश के निर्देशन में यह महाविद्यालय राजकीय इंटर कॉलेज अमोड़ी के एक कक्ष में संचालित हो रहा था। जनवरी 2022 से यह महाविद्यालय प्रभारी प्राचार्य डॉ. सिद्धेश्वर सिंह के संरक्षण में अपने नवीन भवन में स्थानांतरित हो गया। भौगोलिक दृष्टि से अति दुर्गम क्षेत्र में स्थित यह महाविद्यालय उत्तराखंड राज्य के चम्पावत जनपद के अंतर्गत आता है। जिला मुख्यालय चम्पावत से इसकी दूरी लगभग 30 किलोमीटर है। महाविद्यालय में एक पद प्राचार्य, 07 पद प्राध्यापक तथा समूह 'ग' के अंतर्गत 04 नियमित एवं 01 आउटसोर्स पद तथा समूह 'घ' के अंतर्गत 05 आउटसोर्स पद स्वीकृत हैं। वर्तमान में प्राचार्य सहित 07 प्राध्यापक, 01 प्रधान सहायक, 01 अनुसेवक एवं 01 स्वच्छक/चौकीदार कार्यरत हैं। महाविद्यालय में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र विषयों में कुल 152 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। किसी भी महाविद्यालय की आधारशिला वहाँ के विद्यार्थी होते हैं। यहाँ के छात्र-छात्राएँ न केवल अपने बौद्धिक विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, बल्कि खेल-कूद, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा एन.एस.एस., रोवर-रेंजर्स, रेडक्रॉस आदि गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता कर अपने सर्वांगीण विकास हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। विगत वर्ष से महाविद्यालय में देवभूमि उद्यमिता कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वरोजगार हेतु प्रेरित किया जा रहा है, जिससे उनमें आत्मनिर्भरता एवं उद्यमशीलता की भावना का विकास हो सके। बाल विकास एवं महिला सशक्तिकरण विभाग, चम्पावत द्वारा महाविद्यालय में 03 माह का नि:शुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इसके अंतर्गत 33 छात्राएँ बेसिक कंप्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं तथा 21 छात्राओं को एडवांस कंप्यूटर प्रशिक्षण दिया गया है। अति दुर्गम क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह प्रशिक्षण छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है तथा वे स्वयं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने में सफल रही हैं। महाविद्यालय में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र भी सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिससे क्षेत्र के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के वैकल्पिक अवसर प्राप्त हो रहे हैं। छात्र-छात्राओं में अध्ययन की अभिरुचि को प्रोत्साहित करने हेतु महाविद्यालय के पुस्तकालय में समस्त विषयों की पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं। वाचनालय में दैनिक समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं, जिनका विद्यार्थी लाभ उठाते हैं। इससे महाविद्यालय में एक श्रेष्ठ एवं सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण हुआ है। विभिन्न विभागीय परिषदों द्वारा समय-समय पर निबंध, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक समिति द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासनिक दक्षता एवं छात्र-केंद्रित गतिविधियों के परिणामस्वरूप इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा वर्ष 2024 से 2029 तक के लिए 'बी' ग्रेड (सीजीपीए 2.22) से प्रत्यायित किया गया है, जो संस्थान की सतत प्रगति एवं उच्च गुणवत्ता-संवर्धन को प्रदर्शित करता है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप महाविद्यालय में स्मार्ट लैब, भाषा प्रयोगशाला तथा कंप्यूटर कक्ष की स्थापना की गई है। इन सुविधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को तकनीक-संवर्धित शिक्षण, संप्रेषण कौशल विकास तथा डिजिटल दक्षता प्रदान की जा रही है, जिससे वे आधुनिक शैक्षणिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को सक्षम बना सकें। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की आधुनिक वेबसाइट www.gdcamori.in विकसित की गई है, जिसके माध्यम से शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं छात्र-संबंधी सूचनाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा रही हैं। साथ ही महाविद्यालय का अपना सोशल मीडिया पेज है जिससे सूचनाएं निरन्तर प्रदर्शित की जाती है, इससे ई-गवर्नेंस को सुदृढ़ करने के साथ-साथ पारदर्शिता एवं प्रभावी सूचना-प्रसार सुनिश्चित हुआ है।

प्रोफेसर (डॉ.) अजिता दीक्षित
(प्राचार्य)

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)-एक परिचय

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) की स्थापना मई 2016 में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा ग्रामीण एवं दुर्गम क्षेत्र के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई। यह महाविद्यालय विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तथा छात्राओं के शैक्षिक सशक्तीकरण हेतु समर्पित है और उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड के अंतर्गत पूर्णतः अनुदानित संस्था है।

महाविद्यालय को उत्तराखंड शासन द्वारा 2016 मे राज्य सरकार के अधीन स्थापित किया गया। अल्प समय में ही इस संस्थान ने क्षेत्र में अपनी सशक्त शैक्षणिक पहचान स्थापित की है। यह महाविद्यालय अमोड़ी ग्राम,कोईराला नदी के तट पर स्थित है। यह जनपद मुख्यालय चम्पावत से लगभग 32 किमी तथा उच्च शिक्षा निदेशालय, हल्द्वानी से लगभग 165 किमी की दूरी पर स्थित है। शांत हिमालयी वातावरण तथा श्यामलाताल, मायावती आश्रम, पूर्णागिरि मंदिर एवं रीठा साहिब जैसे प्रमुख धार्मिक-सांस्कृतिक स्थलों की निकटता इसे विशिष्ट बनाती है। महाविद्यालय का कुल परिसर क्षेत्रफल 2.107 एकड़ है, जो हरित, स्वच्छ एवं अनुशासित शैक्षणिक वातावरण प्रदान करता है। कुल निर्मित क्षेत्रफल 1631.57 वर्ग मीटर है, जिसमें भूतल, प्रथम तल एवं द्वितीय तल पर शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कक्ष सुव्यवस्थित रूप से उपलब्ध हैं।

संस्थान में हवादार कक्षाएं, पुस्तकालय एवं वाचनालय, प्रयोगशालाएं, आईसीटी आधारित शिक्षण सुविधाएं, इंटरनेट कनेक्टिविटी तथा आवश्यक आधारभूत संरचना उपलब्ध है, जिससे शिक्षणख्रअधिगम प्रक्रिया सुदृढ़ होती है।

महाविद्यालय में स्नातक कला (B.A.) स्तर पर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजनीति विज्ञान, शिक्षा, इतिहास एवं अर्थशास्त्र विषय संचालित हैं। प्रत्येक विषय में 80 विद्यार्थियों की प्रवेश क्षमता है तथा पाठ्यक्रमों का उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ विश्लेषणात्मक क्षमता, शोध प्रवृत्ति एवं सामाजिक चेतना का विकास करना है। महाविद्यालय मे उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी द्वारा दूरस्थ शिक्षा मोड मे स्नातक/स्नातकोत्तर/ डिप्लोमा कोर्स संचालित है। महाविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा बी ग्रेड प्रदान किया गया है तथा इसे CGPA 2.22 प्राप्त है, जो इसकी

शैक्षणिक गुणवत्ता एवं संस्थागत कार्यप्रणाली को दर्शाता है। साथ ही, महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की धारा 2(f) के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है। महाविद्यालय के प्रशासनिक नेतृत्व में समय-समय पर विभिन्न योग्य शिक्षाविदों का योगदान रहा है। इस संस्थान के प्रथम प्राचार्य स्व. डॉ. की प्रकाश रहीं। उनके पश्चात डॉ. कमला जोशी तथा डॉ. सिद्धेश्वर सिंह ने प्राचार्य पद पर कार्य करते हुए महाविद्यालय के शैक्षणि ाक एवं संस्थागत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में महाविद्यालय की प्राचार्य के रूप में प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित कार्यरत हैं, जिनके नेतृत्व में महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ महाविद्यालय में एनएसएस, सेमिनार, कार्यशालाएं, सांस्कृतिक एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करते हैं।

प्राकृतिक परिवेश, मूल्य-आधारित शिक्षा एवं कौशल विकास पर केंद्रित दृष्टिकोण के कारण राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी विद्यार्थियों को एक शांत, प्रेरणादायक एवं अनुशासित शैक्षणिक अनुभव प्रदान करता है। इस प्रकार राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत) ग्रामीण क्षेत्र में सुलभ, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर राज्य एवं राष्ट्र के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

संपादक मण्डल

महाविद्यालय गीत

"यह सुन्दर मन्दिर वाणी का,
जीवन-पथ प्राणी-प्राणी का।
खड़ा है सत्पथ सबको दिखाने,
चिर विनोद बन कल्याणी का।। यह सुन्दर.....
"दिग-दिगन्त में भुजा पसारे,
नभ तक अपना शीश उठाये।
युग-युग से कुछ बोल रहा है,
उर में झंझावात छिपाये।। यह सुन्दर.....
"इसके सम्मुख विनत हिमालय,
इसके सम्मुख नत विद्यालय।
इसके गौरव से लज्जित हैं,
तीर्थ-तीर्थ के सब देवालय।। यह सुन्दर....
"बालेश्वर दिव्य पूर्णेश्वरी माता,
उस संस्कृति की छाप पड़ी है।
शारदा अंक में आकर इसके,
सुख से अपने आप पड़ी है।। यह सुन्दर.....
"मानव में देवत्व भर रहा,
निस्तत्त्वों में तत्त्व भर रहा।
देवभूमि में, पुण्य धरा पर,
कण्ठ-कण्ठ में सत्त्व भर रहा।। यह सुन्दर...

रचयिता
डॉ. अतुल कुमार मिश्र
राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत)

प्रभु श्रीराम

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बहुत उचित ही लिखा है कि "हम कोई नौसिखिए नहीं हैं, जो रातों रात अनजान जंगल में पहुँचाकर अरक्षित छोड़ दिये गये हों। हमारी परम्परा महिमामयी, हमारा उत्तराधिकार विपुल और हमारा संस्कार उज्ज्वल है"। ऋग्वेद से समारम्भ होने वाली संस्कृत एवं राष्ट्र के धर्म की अजस्र तरङ्गिणी लौकिक महाकाव्यों के उदधि में अक्षुण्णता को अद्यावधि धारण कर रही है। ऋग्वेद में सम्प्राप्त संवादसूक्तों एवं आख्यानों का ब्राह्मण ग्रन्थों में किञ्चित् विस्तार मिलता है, परन्तु ये आख्यान तब तक पूर्ण नहीं हैं जब तक इतिहास और धर्म का अनुशीलन न करते हों। अतः भारतीय धर्म की आबाधता की परीक्षा हेतु इतिहास एवं धर्म का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है। भारतीय परम्परा में आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ अथवा इतिहास के रूप में रामायण को सम्मान प्राप्त है। अतः रामायण महाकाव्य होते हुए भी इतिहास है और इतिहास होते हुये भी महाकाव्य भी। रामायण की परक्रिया इतिहास की प्रसिद्धि सर्वविदित है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित होने से रामायण को आर्ष काव्य भी कहा जाता है। वाल्मीकि ने ब्रह्मा की आज्ञा से रामकथा का प्रणयन किया। रामस्य अयनमिति रामायणम। राम की यात्रा एवं उस यात्रा का धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक महत्त्व को प्रतिपादित करने वाला ग्रन्थ रामायण के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

वेदों और धर्मशास्त्रों में हमें धर्म का स्वरूप और उपदेश तो मिलता है किन्तु उस धर्म का प्रयोग कैसे होना चाहिए, इसका मूर्त रूप मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के चरित्र में मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में स्पष्ट निर्देश है कि यदि कर्त्तव्य के निर्णय में या सदाचार के विषय में शंका हो तो सदाचार में लगे उत्तम विचारवालों के आचरण को देखकर उसके स्वरूप का निश्चय कर लेना चाहिए–

"अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्ति विचिकित्सा वा स्यात। ते तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्षिनः। युक्ता आयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्त। तथा तत्र वर्तेथाः॥"

तैत्तरीय उपनिषद् के इस कथन के आलोक में यदि हम धर्मपूर्ण आचरण का आदर्श किसी एक महापुरुष में देखना चाहें तो इसके श्रेष्ठ उदाहरण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ही हैं।

महर्षि वाल्मीकि भारतीय धर्म की निर्बाधता को तभी सुनिश्चित कर देते हैं जब रामायण की रचना करते समय उदात्त गुणों एवं चरित्र आदि वाले पात्र की अपेक्षा करते हैं। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि अपने काव्य के लिए एक ऐसे आदर्श नायक–धीरोदात्त नायक का अनुसंधान कर रहे थे जिसमें सभी सद्गुणों की प्रतिष्ठा हो जिसका जीवन ही धर्म और सदाचार की कसौटी हो। उन्होंने देवर्षि नारद से पूछा –

कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चौकः प्रियदर्शनः॥
आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥

वाल्मीकि कह रहे हैं कि ऐसे गुणों वाला, धर्मज्ञाता, कृतज्ञ, सत्यवक्ता, दृढव्रत, चरित्रवान और सभी प्राणियों के हित में लगा रहने वाला कौन ऐसा व्यक्ति विद्यमान है? इसके उत्तर में नारद उनको बताते हैं कि भगवान् राम इन सभी गुणों के आदर्श हैं और आप उनको ही अपनी कथा का आधार बनाएं।

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।
बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान्शत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः।
महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिंदमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।

वाल्मीकि के राम धर्म की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं क्योंकि राम का चरित्र धर्म का मूल है इसलिये समस्त परम्परा के आदर्श राम हुये और मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये, जैसा कि कहा गया है "रामादिवत्वर्तितव्यं न रावणादिवत।" राम पिता की आज्ञा पालनहेतु राज्य त्याग कर वन गये

यह पिता की आज्ञापालन का उदात्त रूप है। राम स्वयं कहते हैं कि पिता की सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन ही परम धर्माचरण है।

न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम। यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया।

वाल्मीकि ने राम के जीवन को इतना उदात्त चित्रित किया है कि इससे बढकर कोई आदर्श हो ही नही सकता। वाल्मीकि कहते हैं "रामो द्विर्नाभिभाषते" अर्थात् राम दो तरह की बात नही करते। तुलसीदास जी भी लिखते हैं-रघुकुलरीति सदा चलि आई। प्राण जांय पर वचन न जाई।

नरेश मेहता का खण्ड काव्य "संशय की एक रात" में उन्होनें युद्ध की अनिवार्यता के प्रश्न पर राम के मन की द्विविधा को चित्रित करते हैं। राम में मन में संशय का उदय युद्ध की समस्या को लेकर होता है। शान्ति स्थापना के लिए युद्ध अनिवार्य और अपरिहार्य है। इस विभीषिका को सामाजिक एंव वैयक्तिक धरातल पर सभी युगों में भोगा जा रहा है।' विभीषण का चिन्तन और भी तीव्र है। नैतिक मूल्यों की रक्षा और अनैतिकता के विरोध में ही उसे राष्ट्र विरोधी कार्य करना पड़ा। राम ऐतिहासिक काल के आरम्भ में युद्ध के बीज नहीं बोना चाहते हैं। आने वाली पीढ़ी इस रक्तपात को अपना सकती है। राम युद्ध-संन्धि सभी से मुक्त होना चाहते हैं- इतिहास के हाथों बाण बनने से अधिक अच्छा है। स्वयं हम अँधेरों में यात्रा करते हुए खो जाएँ। राम तो मानवता को जगाना चाहते हैं-

मैं केवल युद्ध को बचाना चाहता रहा हूँ बन्धु!
मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है। उसको ही।
हाँ, उसको ही जगाना चाहता रहा हूँ बन्धु

राम अपना चिन्तन परिषद् की इच्छा को समर्पित कर देते हैं। युद्ध विरोधी भाव प्रखर ही रहते हैं किन्तु मध्य रात्रि के निर्णय के साथ ही राम के संदिग्ध मन में संकल्प उभरने लगता है। इसके साथ ही राम का संशय शमित हो जाता है, सभी प्रश्न तिरोहित हो जाते हैं, लोकमत के आगे राम का संशय युद्ध के दृढ़ निश्चय में परिवर्तित हो जाता है-

प्रश्नों की बेला अब नहीं रही। युद्ध की वास्तविकता सूर्योदय ला रही।

राम समस्त प्रजा ने राजकुमार के रूप में स्वागत किया, समस्त प्रशासन उनके राजा बनने से प्रसन्न था, राम को सभी भाइयों का निर्विरोध समर्थन प्राप्त था किन्तु माता कैकेई के वरदान में राम के लिये वनवास मांग लिया, इस स्थिति में राम को तीन परामर्श प्राप्त हुए,

- ❒ राज्यसिंहासन को छीन कर राज्य पर शासन करना।
- ❒ दशरथ कों बन्दी बनाकर कारगार में रखा जाये और राज्य पर शासन करो।
- ❒ अयोध्या का त्यागकर नया राज्य बसाकर शासन किया जाये। कुलगुरु वशिष्ठ द्वारा।

इन विकल्पों के उपलब्ध होते हुए भी राम से सबसे समीचीन उपलब्ध धर्म का चयन किया। अर्थात् राम ने ऐसी स्थिति में सत्य धर्म का चयन किया। साथ ही यह भी संदेश दिया कि जब धर्म पालन के लिये अनेकों विकल्प उपलब्ध हो तब व्यक्ति को सर्वोच्च उचित धर्म का पालन करना चहिये न कि नियमों और अपवादों को आधार बनाकर धर्म से भागना चाहिये।

"न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया।।"

राम धर्म की ही नही अपितु धैर्य की भी प्रतिमूर्ति हैं। राज्याभिषेक के किञ्चित् समय पूर्व ज्ञात होता है कि पिता की आज्ञा से वन को जाना है तब भी उनके मुख मण्डल की आभा में किञ्चिदपि रोष नही दिखाई पडता है, जिसका वर्णन वाल्मीकि करते है कि राम सम्पूर्ण गाम्भीर्य, धैर्य एवं विनय से युक्त हैं और स्वयं ही पिता के व्याकुल होने पर पिता से वन जाने की आज्ञा मांग रहे हैं -

न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया॥

ऐसे ही चित्रकूट प्रकरण में जब भरत गुरुजनों सहित राम को राज्य हेतु प्रत्यावर्तन करवाने के लिये जाते हैं, तब भी राम भरत का आग्रह अस्वीकार कर देते हैं और पिता की मृत्यु के बाद भी पिता की आज्ञा का त्याग न करने का निश्चय व्यक्त करते हैं –

लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद् वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत।
अतीयात् सागरो वेलां न प्रतिज्ञामहं पितुः॥

राम ने इससे भी आगे जाकर आदर्श प्रस्तुत किया है। माता कैकेई के वरदान मांगने और पिता की आज्ञा से वनगमन करना पडा किन्तु राम माता कैकेई पर रोष न करके कहते हैं –

बनभुवि तनुमात्रत्राणमाज्ञापितं मे सकलभुवनभारः स्थापितो वत्समूध्नि।

तद्ह सुकरतायामावयोस्तर्कितायां मयि पतति गरीयानम्ब ते पक्षपातः॥

अर्थात् वनप्रान्तमें केवल अपनी देहकी रक्षा करनेका कार्य मुझे दिया गया और सारी पृथ्वी के पालन का भार भरतके शिर पर डाल दिया गया। यदि यहाँ पर हम दोनों के कार्योकी सुकरताका विचार किया जाय तो मां, लोग तुमको राम के प्रति पक्षपात करने का दोष देंगे।

राम समरसता की स्थापना में अग्रसर रहे और ऐसे आदर्श प्रस्तुत किये जो आज तक भारतीय धर्म के उद्धारक राम बने हुये हैं। निषाद के प्रति मैत्री भाव तत्कालीन समस्त जनजातीय समुदाय को मुख्यधारा से जोडने का कार्य तो करता है साथ ही उनके मुख्य धारा में जोडे जाने की वकालत भी करता है। सबरी के उच्छिष्ट फल भक्षण स्वयं में भक्ति एवं समरसता का अप्रतिम उदाहरण बना हुआ है। जटायु के प्रति पितृत्व भी जीव मात्र के प्रति मानव धर्म की उद्घोषणा करता है।

राम अपने क्षत्रिय होने की बात कहते हैं, क्षत्रिय इसलिए धनुष धारण करता है कि संसार में कहीं आर्त-शब्द न हो **"क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्तशब्दो भवेदिति"** इसलिए राम अपनी प्रतिज्ञा बड़े स्पष्ट शब्दों में सुनाते हैं–

अप्यहं जीवितं जयां त्वां वा सीते सलक्ष्मणाम्। न तु प्रतिज्ञां संश्रुत्य ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः क्योंकि उन्हें सत्य सदा प्रिय रहा है–

"सत्यमिष्टं हि मे सदा" राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जो धर्म के सभी रूपों में उत्तम हैं। समाज की व्यवस्था को शुद्ध रखने हेतु एक राक्षसी का वध भी करते हैं, पत्नी के लिये समुद्र लाङ्घ कर रावण का वध करते हैं किन्तु वही राम धर्मनियम के कारण पत्नी का परित्याग भी करते हैं। सुग्रीव के साथ अन्याय करने पर बाली का वध भी करते हैं साथ ही बाली के पुत्र अङ्गद को युवराज भी बनाते हैं, रावण का वध भी करते हैं साथ ही लङ्का का राज्य विभीषण को सौंपते हैं। राम जिस रावण का वध करने हेतु युद्ध कर रहे हैं उसी रावण को निश्शस्त्र होने पर जीवित भी छोडते हैं। राम धर्म की किसी भी परिभाषा के लिये उचित उदाहरण नही हैं अपितु कोई भी परिभाषा राम से अपने औचित्य को प्राप्त करती है। रामो विग्रहवान् धर्मः यह उक्ति सत्य ही राम के स्वरूप को परिभाषित करती है।

राम केवल पितृ धर्म, मित्र धर्म, राजधर्म के ही परिपोषक नही अपितु नीति के महत्तम उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं। रावण की मृत्यु के पश्चात् विभीषण अन्तिम संस्कार हेतु आज्ञा मांगते हैं तब राम की उक्ति है–

मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव॥

अर्थात् शत्रुता मृत्यु के साथ समाप्त हो जानी चाहिये, यह अब् मेरे लिये भी वैसा है जैसा तुम्हारे लिये है। राम ने जटायु का अन्तिम संस्कार किया और विभीषण को रावण का अन्तिम संस्कार करने का आग्रह किया जो कि अन्त्येष्टि संस्कार की महत्ता को स्थापित करता है। शोडष संस्कार भारतीय धर्म का अभिन्न अङ्ग बने हुये हैं।

राम जितने कोमल हैं उतने ही धर्मपालन में कठोर भी हैं। राम कहते हैं कि चोर को राजा दण्ड दे अथवा मुक्त क'दे ऐसी स्थिति में चोर पाप से मुक्त हो जाता है परन्तु चोर को दण्डित न करने वाला राजा अवश्य पाप का भोग करता है। अतः राजा को उचित दण्ड देना ही चाहिये। राम की दृष्टि में कृतघ्नता के लिये भी कोई क्षमा नही है, सुग्रीव के प्रसङ्ग में कहते हैं कि कृतघ्न व्यक्ति के मृत शरीर का मांस मांसाहारी जीव भी नही खाते हैं।

"कृतघ्ने नास्ति निष्कृति:"। बाली वध के कारण के रूप में रामचरित मानस में राम ने कहा है कि चार व्यक्तियों को कुदृष्टि डालने वाले का वध करना पाप नही है- अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी। इन्हई कुदृष्टि बिलोकई जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई राम के जीवन का लक्ष्य क्या था, यह बात, प्रथम सर्ग में मूल-रामायण में वाल्मीकि के नारद से प्रश्न में ही बीज रूप में व्यक्त कर दी गयी कि इस समय संसार में गुणवान् वीर्यवान्, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवाक्य, दृढव्रत, चारित्र से युक्त, सभी प्राणियों का हित करने वाला विद्वान् समर्थ आदि कौन है। वस्तुत: राम के महनीय व्यक्तित्व की यह सूचना मात्र थी जो बालकाण्ड में नारद के उत्तर में व्यक्त हुई है। यदि सबको समेटकर एक शब्द में व्यक्त किया जाय तो वह 'चारित्र' है। हम समझते हैं कि इस शब्द में राम के निर्दिष्ट अनेक गुण सिमट आते हैं, जैसे उनका धर्मनिष्ठ होना, अपने कुल के गौरव के प्रति जागरूक होना, सत्य वचन या अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना, पिता के वचन-सत्य की रक्षा के लिए अर्पित होना आदि। राम का यह चारित्र रामायण में आद्योपरान्त अनुस्यूत है, तथा सूत्र की भाँति कथावस्तु की माला को धारण किये हुए है। अलक्षित होकर नहीं, बल्कि गूंथी हुई मणियों के भीतर से परिलक्षित होकर। इसी कारण राम मारीच के अनुसार, विग्रहवान् धर्म (रामो विग्रहवान् धर्म:) हैं।

राम ने रावण आदि राक्षसों का संहार किया, सम्भवत: यह उनका पार्यन्तिक उद्देश्य नहीं था, बल्कि वह एक क्षत्रिय का कर्तव्य था, जिसका उन्होंने पालन किया, और साथ ही जो उनके दुर्धर्ष पौरुष के अनुरूप भी था। कालिदास ने राम के मुख से उनके उद्देश्य को 'यश' के रूप में निर्देश किया है-

रक्षोवधान्तो नहि मे प्रयासो व्यर्थ:स वैरप्रतिमोचनाय।

इसलिए राम ने सीता का पुन: परित्याग का कठोर निर्णय लिया था, क्योंकि ''यशोधनानां हि यशो गरीय:" भवभूति के राम, लोकाराधन को अपने जीवन का चरम लक्ष्य बताते हैं और कहते हैं-

स्नेहं दयां च सौख्यञ्च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा

वाल्मीकि के राम के व्यक्तिव में भी यह सब कुछ चरित्र में सिमटा हुआ अभिव्यक्त, हुआ है।

सत्य और धर्म की रक्षा एवं पालन के लिये राम अपने आदर्श वैदिक परम्परा से प्राप्त करते हैं और उनका सदैव पालन करते हैं। एक स्थल पर माता कौशल्या से कहते हैं कि धर्म का पालन ही लोक में परम धर्म है, और सत्य भी धर्म में ही प्रतिष्ठित होता है। "धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम" यद्यपि यह वाक्य भी उपनिषद् की श्रुति से अनुप्राणित है जहां धर्म के आचरण का निर्देश दिया गया है "सत्यं वद धर्मं चर"

रामकथा की विश्वव्यापी यात्रा-

रामकथा की यह यात्रा लोक में ऋषि वाल्मीकि ने प्रसारित एवं स्थापित की। ध्यातव्य यह है कि राम का चरित्र इतना उदात्त एवं प्राञ्जल था जिससे लोक में उनकी प्रतिष्ठा मर्यादा पुरुष के रूप में हुई और उसी से प्रभावित होकर भगवान् वाल्मीकि ने रामायण की रचना किया। राम का चरित्र भारत सहित लगभग आधी दुनिया की धर्मयों को जोडने का पर्याप्त अकेला साधन है और रहा है। प्राय: भारत की ऐसी कोई क्षेत्रीय धर्म नही है जिनमें राम के द्वारा स्थापित आदर्श एवं रामत्व का पुट न हो। भोजपुरी, मगही, अङ्गिका, अवधी, वनवासी, मैथिली, बुन्देली, बघेली, निमाडी, उडिया, तेलुगु, मुण्डारी आदि लोक साहित्यों में शताब्दियों से रामकथा का स्थान सुरक्षित रहा है।

राम का आकार इतना महत्तम रहा जिसक कारण अनेकों पन्थों एवं धर्मों तठा धर्मयों ने राम का स्वधर्मीकरण करके अपनी धर्म को संवर्धित किया तथा एक विशिष्ट स्थान बनाया। जैसे- जैन और बौद्ध साहित्य को भी राम के आदर्शों का आश्रय लेना पडा इसी के कारण जैन साहित्य में विमलदेव का पउमचरिय, रविषेण का पद्मपुराण, स्वयम्भू का पउमचरिय तथा बौद्ध रामायण की रचनायें हुई। साथ ही असमिया रामायण, कृत्तिवास बाङ्ला रामायण, नेपाली रामायण, उडिया रामायण, मैथिली, पञ्जाबी, कश्मीरी, तेलुगु, कन्नड, तमिल, मलयालम, गुजराती आदि रामायणों की रचना हुई। राम के उदात्त चरित्र के कारण उनका आकार बृहत्तम हो गया और मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। उनके

द्वारा स्थापित आदर्श न केवल भारत के लिये अपितु संसार के अनेकों देशों के लिये प्रेरणास्पद रहे हैं। यही कारण है कि अनेकों देशों ने अपनी संस्कृति के आदर्शों में राम का समावेश किया है।

सभी संस्कृतियों ने राम के आदर्शों का यथानुसार क्षेत्रीकरण करके अपने अपने इष्ट के रूप में स्थापित किया। अतः कहा जा सकता है कि सबके अपने अपने राम हैं किन्तु सबमें राम के आदर्श एवं धर्मपालन का पुट समान रूप से दिखायी देता है। राम के इसी व्यापक प्रभाव के कारण जैन, बौद्ध, तिब्बती, चीनी, इस्लाम सभी धर्मों अथवा पन्थों में रामायणों का प्रणयन हुआ है, जो इस प्रकार है- तिब्बती रामकथा, खोतानी रामायण, चीनी रामकथा, दशरथ-कथानम, मंगोलिया की रामकथा, जापानी रामकथा, इण्डोनेशिया की रामकथा, रामायण ककविन, मलयेशिया की रामकथा, कम्बोडिया की रामकथा, रामकेर्ति का कथासार, थाईलैण्ड की रामकथा रामकियेन का सार, लाओस की रामकथा, फालक फालाभ की कथा, फिलीपीन्स की रामकथा, ब्रह्मदेश की रामकथा, सिंहली रामकथा आदि। यद्यपि वाल्मीकि रामायण से इनकी पात्र रचना एवं कथा में यत्र तत्र कथञ्चित् भेद मिलता है तथापि राम के कर्तव्य एवं चरित्र सभी को वाल्मीकि के ही इष्ट हैं। कथा में सीता रावण की पुत्री होना, रावण का चित्र बनाने के कारण सीता का निर्वासन, वाल्मीकि द्वारा सीता के द्वितीय बालक की सृष्टि, रामकथा के पात्रों के पारस्परिक रक्त-सम्बन्ध, बौद्ध प्रभाव से कथा सुखान्त बनाया जाना आदि भेदों द्वारा देशीकरण एवं स्वधार्मिकीकरण किया गया है यथा - दक्षिण पूर्व एशिया के अधिकतर देश बौद्ध या मुस्लिम धर्म के अनुयायी हैं इसलिए मलेशिया की रामायण में रावण को भगवान शंकर के बजाय अल्लाह से वर माँगते दिखाया गया है।

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि राम न केवल एक महापुरुष हैं, बल्कि धर्म, मर्यादा और कर्तव्य के आदर्श प्रतीक भी हैं। उन्होंने अपने जीवन में सत्य, न्याय, करुणा और संयम जैसे मूल्यों को अपने आचरण में उतारकर एक ऐसे आदर्श की स्थापना की जो युगों तक अनुकरणीय बना रहेगा। चाहे वह पिता की आज्ञा का पालन हो, राज्य के कर्तव्यों का निर्वहन हो या पत्नी के प्रति प्रेम और सम्मानख़राम ने हर स्थिति में धर्म का मार्ग चुना। वाल्मीकि के राम किसी भी परिस्थिति में भी अपनी ध र्मपरायणता को कदापि नही त्यागते अपितु धर्म ही उनका मार्गदर्शक है। इसी धर्मपरायणता न उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया जिसके कारण देश के घर घर में तुलसीदास की रामचरितमानस को वह अभीष्ट स्थान मिला जो अन्य पात्रों को नही प्राप्त हुआ, यह राम का औदात्य है। यही औदात्य और धर्मपरायणता विश्व संस्कृतियों में राम का समावेश करके उन्हें उत्कृष्टतर बनने का अवसर भी प्रदान करते हैं फलतः सम्पूर्ण विश्व में शताधिक रामाश्रित ग्रन्थ लिखे गये जो तत्तत् संस्कृतियों एवं समाजों को उनके आदर्श स्वरूप की ओर ले जायेंगे। इण्डोनेशिया जैसे देशों में रामलीला का मञ्चन किया जाता है और रामलीला को वहां राज्याश्रय प्राप्त है। राष्ट्रपति सुकर्णो के समय में पाकिस्तान का एक प्रतिनिधिमंडल इंडोनेशिया की यात्रा पर था। उस दौरान प्रतिनिधिमंडल को वहाँ रामलीला देखने का मौका मिला और वह इस बात से हैरान था कि एक मुस्लिम देश में रामलीला का मंचन क्यों किया जाता है। इस बारे में जब उन्होंने राष्ट्रपति से सवाल किया तो उन्होंने सद्यः जवाब दिया, हमने अपना धर्म बदला है, अपनी संस्कृति नहीं। अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से निकलता है कि राम धर्म के प्रतिमान हैं, जिन्होंने न केवल अपने युग को दिशा दी, बल्कि आज भी मानव समाज के लिए नैतिक मूल्यों का प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। भारतीय समाज में राजा भी धर्म के अधीन होता है और राम तो स्वयं धर्म की साक्षात् मूर्ति हैं यह निर्बाध सिद्ध है।

रामो विग्रहवान् धर्मस्साधुस्सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानां मघवानिव॥

डॉ. अतुल कुमार मिश्र
असिस्टेन्ट् प्रोफेसर- संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय, अमोडी, (चम्पावत)

उत्तराखंड में ई-शासन और समान नागरिक संहिता

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग से शासन व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और जनहितकारी बनाने की प्रक्रिया को ई-शासन कहा जाता है। पर्वतीय और भौगोलिक रूप से दुर्गम राज्य उत्तराखंड में ई-शासन ने प्रशासनिक कार्यों को सरल बनाने और नागरिकों तक सेवाएँ शीघ्र पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तराखंड सरकार ने राज्य गठन के बाद से ही ई-शासन को विकास का मुख्य आधार बनाया है। ई-जनपद परियोजना के माध्यम से जाति, निवास, आय, जन्म और मृत्यु प्रमाण-पत्र, पेंशन तथा अन्य सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे नागरिकों को बार-बार सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। इसके अलावा, सामान्य सेवा केंद्र ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं की रीढ़ बनकर उभरे हैं। राज्य में भूमि अभिलेखों का डिजिटलीकरण, ई-कार्यालय, ई-कोष, ई-खरीदारी, ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणाली और डिजिटल भुगतान ने प्रशासनिक कार्यों को तेज और पारदर्शी बनाया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, दूरसंचार चिकित्सा और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में भी ई-शासन ने नागरिकों को अधिक सुविधा प्रदान की है।

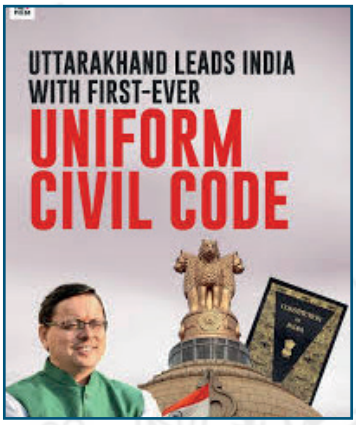

इसी क्रम में उत्तराखंड राज्य ने समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में भी पहल की है। समान नागरिक संहिता का उद्देश्य विवाह, तलाक, गोद लेने और उत्तराधिकार जैसे नागरिक मामलों में सभी नागरिकों के लिए समान कानून सुनिश्चित करना है। ई-शासन के माध्यम से समान नागरिक संहिता से संबंधित डिजिटल पंजीकरण, ऑनलाइन आवेदन, अभिलेख प्रबंधन और निगरानी प्रणाली को सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाया जा सकता है।ई-शासन और समान नागरिक संहिता का समन्वय शासन व्यवस्था को कानूनी समानता, प्रशासनिक दक्षता और नागरिक विश्वास प्रदान करता है। डिजिटल माध्यम से समान नागरिक संहिता से संबंधित सूचनाओं की आसान उपलब्धता, सेवाएँ और समयबद्ध निस्तारण संभव हो पाया है।

निष्कर्षतः

उत्तराखंड में ई-शासन और समान नागरिक संहिता का प्रभावी क्रियान्वयन सुशासन, सामाजिक समानता और समावेशी विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक और सराहनीय पहल है।

श्री हरीश चंद्र जोशी
प्रधान सहायक, राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी

'गीतांजलि' और 'दीपशिखा' का साहित्यिक तीर्थ

यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो!
रजत शंख-घड़ियाल, स्वर्ण वंशी, वीणा स्वर,
गये आरती बेला को शत-शत लय से भर;
जब था कल-कण्ठों का मेला
विहँसे उपल-तिमिर था खेला
अब मन्दिर में इष्ट अकेला;
इसे अजिर का शून्य गलाने को गलने दो!

महादेवी वर्मा

(26 मार्च, 1907, 11 सितंबर, 1987)

आधुनिक हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं।

छायावाद की वृहदचतुष्टयी उनकी सृजनात्मक उपस्थिति से ही पूर्णता को प्राप्त करती है। उन्हें प्रेम की पीड़ा की गायिका और 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि उनकी कविताओं में दु:ख, निराशा, वेदना, विरह और रहस्यात्मकता के आवरण में छिपे प्रिय के प्रति अप्रतिम अनुराग की अभिव्यक्ति हुई है। मीराबाई के बाद हिन्दी कविता में स्त्री स्वर को सबसे सशक्त और स्पष्ट वाणी महादेवी जी की रचनाओं में ही मिली है। उन्हें 'यामा' कविता संग्रह व संपूर्ण साहित्यिक अवदान के लिए भारत का सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' प्राप्त हुआ है। किन्तु क्या महादेवी केवल कवयित्री मात्र हैं? कविताओं में जहाँ वह कोमल, कलुषहीन भावनाओं को कोमलकान्त पदावली में अभिव्यक्ति देती है। वहीं दूसरी ओर अपनी गद्य रचनाओं में वह भारतीय समाज, शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता पर गहन चिन्तन व तार्किक विश्लेषण भी प्रस्तुत करती हैं। आज हिन्दी पट्टी में 'स्त्री विमर्श' का जो बोलबाला है उसकी पीठिका निश्चित रूप से महादेवी वर्मा की गद्य रचनाओं विशेषकर 'शृंखला की कड़ियाँ' से ही तैयार हुई है। उन्होंने न केवल अपनी रचनाओं में अपितु जीवन में भी बहुत-सी शृंखलाओं को तोड़ा है तथा आज की नारी के लिए स्वातंत्र्य की उर्वर भूमि तैयार की है।

यही कारण है कि समकालीन साहित्यिक-सामाजिक विमर्श में उन्हें केवल एक कवयित्री के रूप में ही नहीं बल्कि नारीवाद की सजग, सचेत और सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भी बहुत आदर और सम्मान के साथ याद किया जाता है।

भारत के मुकुट हिमालय से महादेवी वर्मा को बहुत प्रेम रहा है। उन्होंने इस पर्वतीय क्षेत्र की कई-कई यात्रायें की थीं और हिमालयी, विशेषकर उत्तराखंड के जनजीवन को बहुत निकट से देखा जाना था और इस बारे में बहुत कुछ लिखा भी है। महादेवी जी ने यहाँ के निवासियों के प्रति अपने निश्छल प्रेम और उनके सुख-दु:ख को अपने रेखाचित्रों के माध्यम से मूर्तिमान किया है। 'लछमा' व 'पर्वतपुत्र जंगबहादुर और धनिया' जैसे अविस्मरणीय चरित्रों को भला कैसे भुलाया जा सकता है? सत्य है कि ये चरित्र काल्पनिक नहीं हैं। हम सबके लिए यह गौरव की बात है कि कुमाऊँ विश्वविद्यालय का पहला दीक्षान्त भाषण महादेवी जी ने ही दिया था जो कालान्तर में 'भारतीय संस्कृति और शिक्षा' शीर्षक से 'महादेवी साहित्य समग्र' के तीसरे खंड में प्रकाशित हुआ है। इस भाषण में वह कहती हैं-"मैंने पर्वतीय अंचल को घूमकर देखा है कि यहाँ का व्यक्ति शिलाओं को शय्या बना सकता है; काँटों से खेल सकता है और उनके बीस से बर्फ की नदियाँ पार कर सकता है। इसी से मेरे

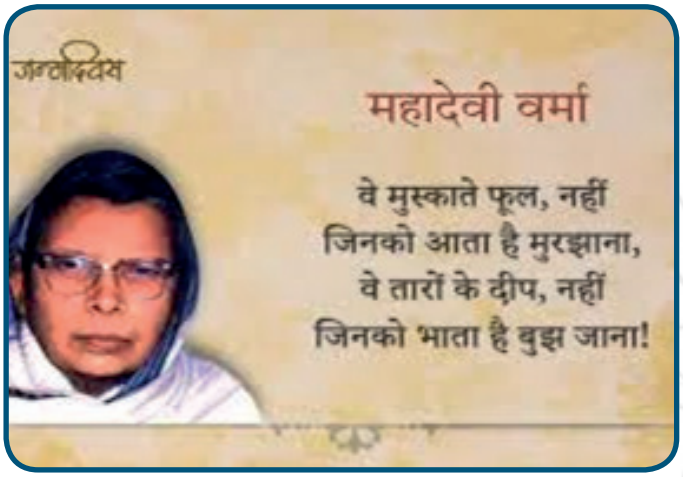

इस स्वप्न का जन्म हुआ कि यदि गुरुकुलों की काई कल्पना सार्थ हो सकती है तो वह पर्वतीय अंचल में हो सकती है, अन्यत्र नहीं।" इसी भाषण में वह आगे कुमाऊँ की प्रकृति के साथ इस अंचल के प्रमुख साहित्यकारों सुमित्रानन्दन पंत, इलाचंद्र जोशी, नाटककर गोविन्द बल्लभ पंत, हेमचंद्र जोशी, तारा पांडेण्य, शिवानी आदि को याद करते हुए कहती है कि 'न महिलायें आपके अंचल की पीछे रही हैं, न पुरुष।' साथ वह कुमाऊँ अंचल के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हुए कहती हैं कुमाऊँ का अंचल मुझे सदा से प्रिय रहा है। सन् 21 या 26 में, जब मैं विद्यार्थिनी थी तब से मैं इन पर्वतों पर घूमी हूँ। मुझे अच्छा लगता है हिमालय।"

नैनीताल से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित रामगढ़ एक सुंदर स्थान है जहाँ से हिमालय की नयनाभिराम चोटियों पर जमे धवल हिम का मुकुट पहने हिमालय के दर्शन किए जा सकते हैं। इस स्थान को कुमाऊँ की फल पट्टी के रूप में भी जाना जाता है। यह जगह गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) के नाम से भी जुड़ी हुई हैं। आजकल जहाँ पर कुमाऊँ मंडल विकास निगम का पर्यटक आवास गृह है उसी पहाड़ी पर के ऊपरी छोर पर एक खंडहरनुमा स्थान है जिसे 'टैगोर टॉप' के नाम से जाना जाता है। यहाँ गुरुदेव ने अपनी रुग्ण पुत्री के स्वास्थ्य लाभ के निमित्त रहने के लिए एक भवन और उससे जुड़ा एक छोटा-सा आवासीय परिसर बनवाया था। वे इस स्थान पर रहे भी और इसी जगह रहते हुए 'गीतांजलि' की बहुत-सी कविताओं की रचना भी हुई जिसके उन्हें 1913 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाद में पुत्री के देहावसान के उपरान्त टैगोर इस जगह नहीं आए और धीरे-धीरे विश्व साहित्य की यह उर्वर रचनाभूमि खंडहर में तब्दील होती चली गई। आज भी रामगढ़ जाने वाले सैलानियों को जब इस स्थान के बारे में जानकारी होती है तो वे वहाँ सुगम मार्ग व अन्य सुविधाओं के अभाव में बहुत मुश्किल से जा पाते हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की डेढ़ सौवीं जयन्ती का आयोजन वर्ष हम मना चुके हैं और रामगढ़ की दो पहाड़ियों के संधिस्थल पर सुरम्य वन-प्रान्तर के बीच अवस्थित यह स्थान जो एक महत्वपूर्ण साहित्यिक तीर्थ से किसी भी रूप में कम नहीं है, वह अपने पुनः निर्माण और जीर्णोद्धार की बाट जोह रहा है।

तल्ला रामगढ़ के उमागढ़ गॉव की एक पहाड़ी को देवीथान या देवीधार के नाम से जाना जाता है। यहाँ से हिमालय का बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इसी स्थान पर महादेवी वर्मा ने 1937 में 'मीरा' कुटीर नाम से एक भवन बनवाया था। जहाँ प्रतिवर्ष गर्मियों में वह अपने सेवक-साथियों व अपने परिवार के सदस्यों की तरह पलने वाले पशु-पक्षियों के साथ आया करती थीं। महादेवी जी ने इस क्षेत्र में रह कर यहाँ के जनजीवन को बहुत निकट से देखा-समझा और समाज को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर तथा चेतनाशील बनाने का प्रयास किया। अपने एक निबंध 'आज का परिवेश और अध्यापक' में वह रामगढ़ और उसके आसपास के क्षेत्रों की प्राथमिक विद्यालयों की दशा-दुर्दशा का ऑखों देखा उल्लेख करते हुए लिखती हैं "मैंने ऐसी प्राथमिक पाठशालायें देखी हैं और भी देखकर आ रही हूँ, रामगढ़ में जहाँ पॉच-पॉच कक्षायें एक ही शिक्षक एक कमरे में बैठाए है, उसमें बैठने के लिए टाट भी नहीं है, कहीं-कहीं पेड़ के नीचे बैठाए हुए हैं एक शिक्षक पॉच कक्षाओं को कैसे पढ़ा सकता है? कैसे मनुष्य बना सकता है।" मीरा कुटीर में हिन्दी के कई वरिष्ठ साहित्यकार आकर रुके तथा हिन्दी के कालजयी साहित्य का सृजन किया। इलाचन्द्र जोशी का प्रसिद्ध उपन्यास 'ऋतुचक्र' इसी भवन में रहकर लिखा गया हैं मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, धर्मवीर भारती जैसे साहित्यकारों ने इस

भवन में रहकर अपने साहित्य की रचना की है। स्वयं महादेवी जी ने इसी भवन में रहकर अनेक गद्य रचनाओं के अतिरिक्त 'दीपशिखा' संग्रह की संपूर्ण कविताओं की रचना की है। इस अर्थ में साहित्य-संस्कृति से अनुराग रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह एक साहित्यिक तीर्थ से कम नहीं है। रामगढ़ का यह घर महादेवी जी ने बांज, देवदार, बुरूंश, चीड़ आदि घने वृक्षों के सानिध्य में 4 नाली 6 मुट्ठी जमीन खरीदकर बनवाया था। आज भी इस निवास में उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ सामान रखा गया है जिसे देखने के लिए पर्यटक प्राय: आते हैं।

सन् 1987 में महादेवी वर्मा के देहावसान के बाद यह भवन खाली पड़ा हुआ था। 1994 में नैनीताल जिला प्रशासन के सहयोग से इसे 'महादेवी साहित्य संग्रहालय' का रूप दिया गया। 6 अप्रैल 1996 को हमारे समय के दो महत्वपूर्ण साहित्यकारों निर्मल वर्मा और अशोक वाजपेयी ने इसका लोकार्पण किया। पूरी दुनिया में फैले साहित्यकारों को स्थापित करने और 'छायावाद' की पुनर्व्याख्या व इस बहाने भारतीय पुनर्जागरण से जुड़ी बीसवीं शताब्दी के रचनातमक निष्कर्षों एवं शोध के आयामों की सार्थक परम्परा की खोज तथा तत्संबन्धी वैचारिक बहस के सूत्रपात करने उद्देश्य कोलेकर निर्मित इस साहित्य संग्रहालय में 'शैलेश मटियानी पुस्तकालय' और अतिथि गृह का निर्माण कराया गया साथ ही कुमाऊँ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष और संग्रहालय के सचिव प्रो. लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटोही' के निर्देशन में कई राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक समारोहों, संगोष्ठियों तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें देश भर के प्रसिद्ध साहित्यकारों, विचारकों, प्राध्यापकों और संस्कृति कर्मियों ने भाग लिया। कुछ समय के लिए यह संग्रहालय महात्मा गॉधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) अकादमिक विस्तार केन्द्र के रूप में भी कार्य करता रहा और सम्प्रति कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अधीन 'महादेवी सृजन पीठ' के रूप में कार्य कर रहा है।

'मीरा कुटीर' को आजकल महादेवी जी के निवास स्थान और 'महादेवी सृजन पीठ' के रूप में जाना जाता है। इसके पुस्तकालय में अध्येताओं के उपयोग के लिए पर्याप्त पुस्तकें व पत्रिकायें उपलब्ध हैं। शोधार्थियों व पर्यटकों के अतिरिक्त प्रकृति प्रेमियों को भी यह स्थान बहुत आकर्षित करता है। पत्र-पत्रिकाओं में इसे लेकर समर्थन व विरोध में बहुत कुछ छपता भी रहा है किन्तु इस बात में कोई दो राय नहीं है कि यह स्थान हिन्दी की कालजयी रचनाओं की सृजनकर्ता व हिन्दी पट्टी में नारीवादी विमर्श की पीठिका तैयार करने वाली एक विदुषी की कर्मस्थली है जिसे आने वाली पीढ़ी के लिए बनाए-बचाए रखने के लिए हम सबको सजग व सक्रिय रहना चाहिए, ताकि हमारा आने वाला कल साहित्य-संस्कृति की रोशनी में नई-नई राहों का अन्वेषण कर सके। दूसरी ओर आज जब पूरी देश और दुनिया में दो देशों के राष्ट्रगान की रचना करने वाले तथा न केवल पहले भारतीय बल्कि पहले एशियाई के रूप में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की जन्म जयन्ती को 100वॉ वर्ष के रूप मना चुके हैं और उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिलने के शतवार्षिकी के आयोजन भी कर चुके हैं तो क्या हमारा यह दायित्व नहीं बनता कि उत्तराखंड में अवस्थित 'टैगोर टॉप' को बचाया, बनाया व सवॉरा जाय। रामगढ़ एक पर्यटन स्थल है, फलों की पट्टी भी है, किन्तु हमें यह भी याद रखना होगा कि यह महीयसी महादेवी वर्मा और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की सृजनस्थली भी हैं आइए, एक साहित्यिक तीर्थ स्थल के रूप में रामगढ़ को विकसित करने के अब तक हुए प्रयासों को गति और दिशा देने में अपना योगदान करे। और अंत में महादेवी जी के ही शब्दों में यह आवाहन:

चिर सजग ऑखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले!
या प्रलय के ऑसुओं में मौन अलसित व्योम रोले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया
जाग या विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान बोले!
पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

डॉ. सिद्धेश्वर सिंह
प्रोफ़ेसर : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय अमोडी (चंपावत)

नवयुग की धारा में प्रवेश करती अश्लीलता की अपसंस्कृति

देह प्रदर्शन आज के सुविधाभागे की समाज में व्यावसायिक दृष्टिकोण के तहत उसे परोसी हुई वस्तु की तरह उपयोग में लाया जा रहा है और उसे अधिक से अधिक जलील किये जाने वाले दृश्यों को अभिनित करवाया जाता है। पत्र-पत्रिकाएँ, दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन या बड़े परदे की फिल्में सभी में नारी के देह का हर आयाम से उपयोग किया जाता है। नग्न सौन्दर्य किसी भी दर्शक के लिए कल्याणकारी सिद्ध नहीं हुआ है बल्कि अश्लील नग्न दृश्यों को देखने से युवा-वर्ग की सोच में घिनौनी कामुकता प्रवेश कर समाज को पतन की ओर धकेलने में प्रेरणा स्रोत बनी। विभिन्न दृश्यों एवं विज्ञापनों में उसकी देह का भोंडा प्रदर्शन देखकर मन शर्म एवं लज्जा से भर उठता है। हमारे अपने चौनल, फैशन, टी.वी. से भी आगे निकल रहे हैं। मॉडर्न कहलाने के नाम पर अश्लीलता स्वीकार की जा रही है और यह लोगों के घरों के अंदर तक पहुँचाई जा रही हैं, जिससे परिवार की नई पीढ़ी पर अश्लीलता के संस्कार बढ़ते जा रहे हैं। समाज को दिशा कौन दे रहा है? कौन सिर्फ पैसा बना रहा है? पैसा नंगा कर रहा है या हम नंगे हो रहे हैं?

भविष्य में नारी का कौन सा रूप सामने लाया जाएगा? ऐसी कई बातों की चिंता आज करनी आवश्यक है। अगर हम नहीं संभले तो पश्चिम का यह बढता हमला भी वही हाल कर देगा, जो पूर्व एशिया के कई देशों का कर चुका है। के. वनजा का स्पष्ट वक्तव्य है

कि "जब स्त्री वस्तु बनती है, तब उसकी जिंदगी दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर बर्बाद हो जाती है।"

भारतीय समाज में नारी का महत्व सदैव महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज में नारी का स्थान उतार-चढाव का रहा। स्त्री की नियति में अंतर आया है तो सिर्फ इतना कि पहले जहाँ वह अज्ञान, अशिक्षा और रुढ़ अंध विश्वासों के अंधेरे में घुट-घुटकर जीने के लिए बाध्य थी, वहाँ आज ज्ञान-विज्ञान के चरमोत्कर्ष पर पहुँचे इस सभ्य समाज की स्त्री पहले तो कन्या रूप में कोख में ही मार दी जाती है बच गई तो दहेज के लिए जलाकर, ज्यादती का विरोध करने पर तेजाब छिड़ककर, चलती कार, बस स्टैंड कहीं भी घारे अमानवीय दुष्कर्मों को अंजाम दकेर, निर्वस्त्र घूमाकर, डायन घोषित कर, प्रेम के जघन्य अपराध में खानदानी इज्जत बचाने के नाम पर पेड़ां पर लटकाकर या गाड़कर सरेआम दंडित कर दी जाती हैं। इन सबको पिछड़े और गये-गुजरे जमाने में डालकर हम तेजी से होते शिक्षा के प्रचार प्रसार से फैली ज्ञान की रोशनी और जागरूकता की बातें सोचकर भविष्य के लिए आशान्वित होते गये थे।

स्त्री ने खुली आँखों से अपनी खुशहाली का सपना देखा था कि अब नई शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वावलंबी स्त्री परिवार और समाज में आदर मान पाएगी, लेकिन उसकी मेधा, मनीषा और विचार शक्ति उनकी आँखों में खटकती थी; दिमाग की बातें करो तो पुरुष

कातर हो उठते हैं। पुरुष वर्चस्वी समाज और बाजार की शक्तियाँ उससे असुरक्षित महसूस करता था। कला, साहित्य, फिल्म, मनोरंजन और दृश्य मीडिया के रास्ते स्त्री की मनस्विता और विचार की प्रतिस्पर्धा में स्त्री शरीर के सौंदर्य को महिमामंडित करने वाला लुभावना बाजार खोल दिया और इसे ही स्त्री की आजादी का मुकाम घोषित कर दिया। स्त्री को बताया जाने लगा कि तुम्हारी असली आजादी का रास्ता यहीं से होकर जाता है....। नारी मुक्ति आंदोलन के इन झंडाबरदारों का सारा ध्यान औरत की देह पर है...। सारी बातचीत घूम फिरकर उसी देह पर अटक जाती है। नारी की जिस उपभोगवादी छवि को उभारा जा रहा है उसे मनोरंजन, वासना अथवा उपभोग की वस्तु में प्रस्तुत किया है, उसके परिणाम स्वरूप महिला-वर्ग पर अत्याचार और कामजन्य हिंसा को भी बढ़ावा मिल रहा है।

नारी को समाज में निरंतर हिंसा और दुराचार का शिकार होना पड़ रहा है। नारी के प्रति यह प्रवृत्ति

भिन्न-भिन्न प्रकार से और नए-नए रूपां में नारी हिंसा को बढा वा दे रही है।

समूचे समाज को विकृत मानसिकता की ओर धकेल चुकी है। स्त्री यदि सीधे नहीं मानती दिखती तो उसे भयभीत करके स्लिमिंग उद्योग में धकेला जाता है। प्रसाधनों की लीपापोती न करने अंग-प्रदर्शन न करने से वे असुंदर दिखेंगी, चर्बी बढ़ने से तरह-तरह की बीमारी तो होगी ही। और नारी? वह इतनी जड़ क्यों हो गई है ? क्या लाभ है इसका? यदि वह ऐसा न करें? तो पति से पिटते वक्त विवाहिता सोलह श्रृंगार में रहती हैं, फिर भी नहीं बचतीं!

स्त्री को अपने सौंदर्य नहीं अपनी प्रतिभा और कार्यकुशलता से प्रत्येक क्षेत्र में विजय हासिल करने की आवश्यकता है। मीडिया और आधुनिकीकरण की जो जबरदस्त भूमिका है उसके साथ तालमेल बिठाते हुए ही नारी अपने अस्मिता, अधिकार और अपने सामाजिक पक्ष को मजबूत कर सकेगी और इस मजबूती में ही नारी-मुक्ति के नये-नये सपने भी हैं और नये-नये आयाम भी; क्योंकि शिक्षा ने उसे जागृत किया है। इस जागृति के फलस्वरूप वह ईश्वरीय सत्ता, धर्मसत्ता, परिवार प्रणाली में पुरुष वर्चस्व और वैवाहिक संस्था के जाल को भेद सकने में समर्थ साबित होगी। नारी के बेहतर भविष्य की कल्पना नारी ही सही तरीके से कर सकती है। स्त्री की स्वतंत्रता बाजार में बिकने वाली फेयरनेस क्रीम नहीं बल्कि वह आज औजार है, जिससे वह अपने मानसिक व शारीरिक बंधनों का स्वयं खंडन करे। यह एकदम सूचना के क्षेत्र में खुल जाने से नये उन्मुक्त माहौल के दुष्प्रभाव से समाज को बचाने का मामला है।

डॉ. अर्चना वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

उत्तराखण्ड में पर्यटन और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र का भविष्य: स्थाई विकास और रोजगार सृजन

उत्तराखंड का गठन 9 नवंबर 2000 को हुआ और यह भारत का 27वां राज्य बना। यह राज्य अपनी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक स्थलों और वैदिक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। हरिद्वार, जो भारत के प्रमुख धार्मिक नगरों में से एक है, हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। ऋषिकेश, जो हरिद्वार के पास है, योग केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अलावा, चार धाम में केदारनाथ, गंगोत्री, बद्रीनाथ और यमुनोत्री हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं, जहां लाखों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। पर्यटन, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण भाग है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6.8 प्रतिशत और रोजगार का 10.2 प्रतिशत हिस्सा बनाता है। उत्तराखंड में पर्यटन का योगदान लगभग 50 प्रतिशत है, जिससे स्थानीय रोजगार को प्रोत्साहन मिलता है। 2018 की पर्यटन नीति का उद्देश्य समावेशी और सुरक्षित पर्यटन को बढ़ावा देना है। राज्य में टिहरी झील, रोपवे, कन्वेंशन सेंटर और वेलनेस केंद्र जैसे निवेश के अवसर भी मौजूद हैं। हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में आवास, रेस्टोरेंट, ट्रैवल एजेंसियां और थीम पार्क शामिल हैं। उत्तराखंड में विदेशी पर्यटकों का आगमन मुख्य रूप से जून-जुलाई में ज्यादा बढ़ता है, जिनमें ब्रिटेन, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया से आने वाले पर्यटक धार्मिक स्थलों को प्रमुख आकर्षण मानते हैं। प्रमुख स्थलों जैसे हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी, नैनीताल और कार्बेट नेशनल पार्क में भारी संख्या में पर्यटक आते हैं।

उत्तराखंड के प्रमुख पर्यटन स्थल प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक महत्व और साहसिक गतिविधियों के समृद्ध संगम हैं, जो हर वर्ष लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। ऋषिकेश, जिसे योग की राजधानी भी कहा जाता है, अपने आध्यात्मिक वातावरण, योग केंद्रों और साहसिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थल सांस्कृतिक, धार्मिक और योग आदि के लिए एक आदर्श स्थान है। नैनीताल अपनी खूबसूरत नैनी झील और ऐतिहासिक विरासत के कारण पर्यटन में खास स्थान रखता है। यहाँ की शांति और सुंदरता पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। मसूरी, जिसे पहाड़ी की रानी कहा जाता है, अपने केम्पटी फॉल, मंदिर रोड, नाव की सवारी आदि के कारण बेहद लोकप्रिय है। ये सभी स्थल परिवारों और साहसिक

गतिविधियों के आनन्द प्राप्त करने वाले लोगो के लिए प्रसिद्ध है। कार्बेट नेशनल पार्क रामनगर भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिजर्व है, जो वन्यजीवन प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। यहाँ विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण किया जाता है। चमोली का वेली ऑफ फ्लावर्स, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, हजारों फूलों का घर है और प्रकृति प्रेमियों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। औली, अपने स्कीइंग और हिमपथ साहसिक गतिविधियों के कारण विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद बना रहता है। केदारनाथ धाम, एक प्रमुख तीर्थस्थल और ज्योतिर्लिंग, धार्मिक श्रद्धालुओं का केंद्र है और यहाँ की यात्रा आध्यात्मिक अनुभूति का अनुभव कराती है। हरिद्वार का गंगा आरती और पवित्र घाट धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के प्रतीक हैं, जो हर साल लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। चोपता, अपनी तुंगनाथ मंदिर, ट्रेकिंग एवं कैंपिंग के लिए प्रसिद्ध है, जबकि चकराता अपने पर्वतीय दृश्यों, टाइगर फॉल और पिकनिक स्थान के रूप में जाना जाता है।

उत्तराखंड में पर्यटन क्षेत्र में अनेक निवेश के अवसर भी मौजूद हैं। विशेष पर्यटन क्षेत्र जैसे टिहरी झील, औली और ऋषिकेश में होटल, रिजोर्ट और कन्वेंशन सेंटर की मांग बढ़ रही है। साथ ही, देहरादून से मसूरी और गौरीकुंड से केदारनाथ तक रोपवे परियोजनाएँ विकसित की जा रही हैं, जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के आवागमन को आसान बनाएंगी। स्वास्थ्य और वेलनेस सेक्टर में योग और आयुष केंद्र स्थापित करने से मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। इसके अतिरिक्त, विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय और कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जो स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित कर रोजगार के नए अवसर सृजित करेंगे। हवाई यात्रा के क्षेत्र में हेलीकॉप्टर जैसी सेवाएँ भी शुरू की जा रही हैं। मनोरंजन, थीम पार्क्स और एडवेंचर स्पोर्ट्स के माध्यम से पर्यटन को और अधिक रोमांचक और आकर्षक बनाया जा रहा है। इन सभी पहलुओं से उत्तराखंड का पर्यटन क्षेत्र एक मजबूत और स्थायी विकास की ओर अग्रसर है।

सरकार के प्रमुख पहलों में 2016 में शुरू हुई चार ध ाम सड़क परियोजना शामिल है, जिसके द्वारा तीर्थ यात्रियों को पूरे वर्ष यात्रा की सुविधा देने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही, ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेलवे लाइन का निर्माण जारी है, जो यात्रा के समय को कम करेगा और

तीर्थस्थलों के बीच संपर्क मजबूत करेगा। ग्रामीण इलाकों में पर्यटन बढ़ाने के लिए होमस्टे योजना शुरू की गई है, वहीं योग और आयुष पर केंद्रित स्वास्थ्य पर्यटन को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इको टूरिज्म के संरक्षण और जागरूकता केंद्रों का विस्तार किया जा रहा है। केदारनाथ, हेमकुंड साहिब और चंडीदेवी के लिए रोपवे परियोजनाएं मंजूर हैं, जो यात्रा को आसान बनाएंगी। नए होटल और पर्यटन संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं, साथ ही झील संरक्षण, सांस्कृतिक केंद्रों और पर्यटन स्थलों का विकास भी किया जा रहा है, ताकि उत्तराखंड का पर्यटन क्षेत्र और अधिक समृद्ध और आकर्षक बन सके।

निष्कर्ष –

उत्तराखंड का पर्यटन और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र राज्य के समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह क्षेत्र बेरोजगारी और गरीबी को कम करने, राज्य की आय बढ़ाने और विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक है। कोविड–19 के बाद, इस सेक्टर का विस्तार अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान सरकार के द्वारा स्थायी और सतत पर्यटन ही यहाँ की मुख्य रणनीति का हिस्सा बनाया गया है। सरकार की नीतियों का मुख्य उद्देश्य एक सुरक्षित, स्थायी और समावेशी पर्यटन स्थल का निर्माण करना है, जो शांति और सौंदर्य का प्रतीक हो। जिससे विकसित भारत 2047 का लक्ष्य पूर्ण हो सके।

डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ

जब एक महिला काम करने में सक्षम होती है तो उसका परिवार स्वस्थ, समुदाय धनवान और पूरा देश संपन्न बनता है। स्वातंन्त्रयोत्तरवर्ती समाज की बदली हुई परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा आरै रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई है। समाज की अनेक इकाइयों के द्वारा उसके सबलीकरण के अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप महिलाओं की समानता और उसके सम्मान के नए मार्ग भी खुले। देश में उपजी आर्थिक समस्याओं, सामाजिक समानता तथा महत्वाकांक्षा के कारण भी नारी के कामकाजी होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। परिवार के बढ़ते हुए खर्चा, महँगाई और अपने रहन-सहन के स्तर को बनाये रखने तथा उन्हें ऊँचा उठाने के लिए भी नारी के लिए कामकाज-नौकरी आवश्यक हो गई है। कामकाजी महिलाओ ं के कधें पर कार्य का बोझ दोहरा होता है, जिससे उनकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ी हैं। महिलाएँ घर-आँगन और पति-बच्चों की दुनिया से बाहर कामकाज के दायरे में आ तो गईं, उन्हें जीवन में कठोर स्पर्धा व कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ऐसी कठिनाइयों पर जरा दृष्टिपात करते हैं-

- भारतीय कामकाजी स्त्रियाँ परिवार और कार्यस्थल के दोहरे दबाव में इतना उलझ जाती हैं कि अवसाद की शिकार हो जाती हैं।
- मूलभूत और प्राकृतिक अधिकार पाने के लिए कई संघर्षों से जूझना पड़ता है। कई आंदोलन करने पड़ते हैं।
- नौकरी और घर दोनों के बीच स्वयं को उच्चतम स्तर पर रखने के फेर में औसतन 46 वर्ष की महिला का फिटनेस और ऊर्जा का स्तर 53 वर्ष की उम्र वाले व्यक्ति के बराबर हो जाता है।
- महिलाओं पर नौकरी का तनाव और सामाजिक तनाव दोनों का गहरा प्रभाव पड़ता है।
- इन तनावों के कारण कोरोनरी हार्ट डिजीज का खतरा भी 21 फीसद तक बढ़ जाता है।
- हर कामकाजी स्त्री अपनी योग्यता के बूते पर उच्च पदों पर पहुँचना चाहती है, उसकी सफलता को उसके 'स्त्री' होने से जोड़कर देखा जाता है। जो उसके आत्मबल को तोड़ता है।
- अब पूजा घर ही कामकाजी स्त्रियों के लिए बैंक, डाकघर, घरौंदा, खेल का मैदान और टेलीफोन -एक्सचेंज नहीं है।
- विधि निषेधों से भागकर 'अपने होने' के क्षणों के बाद बाहरी आंदोलनबाजी में शिरकत करके भी प्राय: वह घर वापस लौटकर उसी घर गृहस्थी में लग आदर्श नारी की भूमिका अदा करने लगती है। इस दायरे से बाहर निकलना भी चाहे तो वह अपनी ही निगाह में अजूबा अथवा यह कहें-'स्वयं महिला होने की बात' भूल जाती है।
- कामकाजी महिलाओं को तनाव उस समय भी उत्पन्न होता है, जब कार्य स्थलों पर उनकी शक्तियाँ सीमित होती हैं। पति की मौत, तलाक या खराब बर्ताव के साथ ही सामाजिक तनाव भी कोरोनरी हार्ट डिजीज के खतरे को बढ़ा सकता है।
- महानगरों में रहने वाली नौकरीपेशा महिलाओं की समस्याएँ कुछ अलग प्रकार की होती हैं उन्हें अनेक रूपों को ओड़कर जीना पड़ता है।
- कामकाजी नारी जीवन में परिवर्तन की इच्छुक तो है; लेकिन मनचाहा बदलाव न कर पाने के कारण तिलमिलाने भी लगती है। तनाव से घिर जाती है। आर्थिक रूप से सक्षम होने पर भी ऐसी नारियां के जीवन में एक तरह का खालीपन आ जाता है।
- परिवार के लिए वित्तीय और निवेश के फैसले लेने में पुरुष अगुवा होते हैं- लेकिन महिलाओं की भूमिका सिर्फ हस्ताक्षर करने की होती है।
- विवाह के बाद अक्सर पति या ससुराल वालों के न चाहने पर महिलाओं को घर की
- देख-भाल व बच्चों के लिए नौकरी छोड़नी भी पड़ जाती है।
- यह एक कड़वा सच है कि कामकाजी नारी को 'मानव' मानने की रियायत पुरुष अपनी शर्त पर देता है- वह शर्त जो उसके वर्चस्व के अनुकूल है।

जीवन जगत के आदि से अंत तक जिस आधी आबादी की सक्रियता रही है, उत्पत्ति और संचालन में जिनकी बराबर की भागीदारी रही है-वह रसोईघर से निकलकर इस सतरंगी दुनिया से यदि परिचय प्राप्त करने लगी हैं तो उपरोक्त दुश्वारियों के बावजूद भी उनकी चेतना, उनके फैसले, उनकी उन्नति और उनकी सोच स्वतंत्र हुई है। सोच में बदलाव लाकर और हौसलों के आधार पर ही महिलाएँ उन्नति के शिखर पर पहुँची है और अपनी पहचान बनाई है। खुद से जुड़ा कोई भी फैसला बिना किसी खौफ के कामकाजी महिलाएँ करने लगें-वही नारी स्वातन्य का सारभूत परिवर्तन होगा। उन्नति की उड़ान और तेज होगी। यह आवश्यक है स्त्री परजीवी न होकर अपने पैरों पर खड़ी होकर एक सह-नागरिक की तरह अपनी पहचान स्थापित कर सके- यह अपने आप में एक शक्ति है और इसे अपनाना चाहिए, जितना भी आगे बढ़े स्त्रियाँ, लेकिन आर्थिक आजादी से ही वे अपनी बात सबके सामने रख सकती हैं। इसलिए महिलाओं का वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है। महादेवी वर्मा जी का कथन है ''कि केवल स्त्री के दृष्टिकोण से ही नहीं, वरन् हमारे सामूहिक विकास के लिए भी यह आवश्यक होता जा रहा है कि स्त्री घर की सीमा के बाहर भी अपना विशेष कार्य क्षेत्र चुनने को स्वतंत्र हो।'' योनी नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित, उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।

डॉ. अर्चना वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

पं. गोविन्द वल्लभ पन्त जी का जीवन परिचय

पं. गोविन्द वल्लभ पन्त या (जी. वी. पन्त) प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और वरिष्ठ भारतीय राजनेता वे उत्तर प्रदेश राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री और भारत चौथे गृहमंत्री थे। इनका जन्म 10 सितम्बर 1887 से 7 मार्च 1961 ई. में हुआ सन् 1957 में उनहें भारतरत्न से सम्मिलित किया गया गृहमंत्री के रूप में उनका मुख्य योगदान भारत को भाषा के अनुसार राज्यों में विभक्त करना तथा हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना था। पंड़ित गोविन्द बल्लभ पन्त (या जी. वी. पन्त) प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी वरिष्ठ प्रथम राजनेता और उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री थे। इनका मुख्यमंत्री काल 15 अगस्त 1947 से 27 मई 1954 तक रहा बाद में ये भारत के गृहमंत्री भी (1955-1961) बना भारतीय संविधान में हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिलाने और जिम्मेदारी प्रथा को खत्म करने में। उनका महत्वपूर्ण योगदान था भारत रत्न का सम्मान ही उनके ही गृहमन्त्रीत्व काल में आरम्भ किया गया था। बाद में यही सम्मान उन्हें 1947 में उनके स्वतन्त्रता का संग्राम में योगदान देने के लिए उत्तर प्रदेश के यह मुख्यमंत्री तथा भारत के मुख्यमंत्री के रूप में उत्कृष्ठ कार्य करने के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद द्वारा यह प्रदान किया गया।

गोविन्द वल्लभ पन्त की जीवनी

गोविन्द बल्लभ पंत का जन्म 10 सितम्बर 1887 ई. को अल्मोड़ा जिले के श्यामली पर्वतीय क्षेत्र स्थित गॉव खूंट में महाराष्ट्रीय मूल के एक कन्हाडे ब्राह्मण कुटुम्ब में हुआ उनकी माता का नाम गोविन्दी बाई तथा पिता का नाम मनोरथ पन्त था। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उनकी परवारिश उनके दादा वृद्धि दन्त जोशी ने की 1905 में उन्होंने अल्मोड़ा दिया और इलाहाबाद चले गये म्योर सेंट्रल कॉलेज में वे गणित साहित्य और राजनीतिक विषयों के अच्छे विद्यार्थियों में सबसे तेज थे। अध्ययन के साथ-साथ वे कांग्रेस के स्वयं सेवक का कार्य भी करते थे। 1907 में बी.ए. और 1909 में कानून की डिग्री सर्वोच्च अंकों के साथ हॉसिल की। इनके उपलक्ष्य में कॉलेज की ओर से लैम्सडेन से अवार्ड दिया गया 1910 में उन्हें अल्मोड़ा आकर वकालत शुरूकर दी वकालत के सिलसिले में वे पहले रानीखेत गये फिर काशीपुर में जाकर प्रेम सभा नाम से एक सभा का गठन किया जिसका उद्देश्य शिक्षा और साहित्य के प्रति जनता में जागरूक उत्पन्न करना था। संस्था का कार्य इतना व्यापक था कि ब्रिटिश स्कूलों ने काशीपुर से अपना बोरिया बिस्तर बदलने में ही खैरियत समझी।

पंत जी की जेल यात्रा

इन्होंने मई 1930 में देहरादून जेल की हवा खाई। 1921, 1903, 1932, 1934 के अलग स्वतंत्रता संग्रामों के उपलक्ष 7 वर्ष जेल की यात्रा की। 1961 में इनकी मृत्यु हो गई। 1955-1961 तक गृहमंत्री भी रहे 1961 में इनका देहान्त हो गया।

पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त या जी.बी. पन्त प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और वरिष्ठ भारतीय राजनेता थे। वे उत्तर प्रदेश राज्य के प्रथम मुख्यमन्त्री और भारत के चौथे गृहमंत्री थे। सन् 1957 में उन्हें भारतरत्न से सम्मा. नित किया गया है। और इनका जन्म 10 सितम्बर 1887 अल्मोड़ा में हुआ था। और इनकी मृत्यु 7 मार्च 1961 नई दिल्ली में हुई थी, और इन्होंने इलाहाबाद के विश्वविद्यालय से 1909 में शिक्षा प्राप्त की थी।

स्वतन्त्रता संघर्ष में दिसम्बर 1921 में वे गाँधी जी के आहान पर असहयोग आन्दोलन के रास्ते खुली राजनीति में उतर आये। 1 अगस्त, 1925 को काकोरी काण्ड करके उत्तर प्रदेश के मुकदमें कुछ नवयुवकों ने सरकारी खजाना लूट लिया तो उनके मुकदमें की पैरवी के लिये अन्य वकीलों के साथ पन्त जी ने जी जान से सहयोग किया। उस समय वे नैनीताल से स्वराज पार्टी के टिकट पर लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य भी थे, 1927 में राम प्रसाद बिस्मिल व उनके तीन अन्य साथियों को फाँसी के फन्दे से बचाने के लिये उन्होंने पण्डित मदन मोहन मालवीय के साथ वायसराय को पत्र भी लिखा किन्तु गाँधी जी का समर्थन न मिला पाने से वे उस मिशन में कामयाब न हो सके। 1928 के साइमन कमीशन के बहिष्कार और 1930 के नमक सत्याग्रह में भी उन्होंने भाग लिया और मई 1930 में देहरादून जेल की हवा भी खायी। मुख्यमंत्री कार्यकाल 17 जुलाई 1937 से लेकर 2 नवम्बर 1931 तक वे ब्रिटिश भारत में संयुक्त प्रान्त अथवा यू पी. के पहले मन्त्री बने। इसके बाद दोबारा उन्हें यही दायित्व फिर सौंपा गया और वे 1 अप्रैल 1946 से 15 अगस्त 1947 तक संयुक्त प्रान्त (यू.पी.) के मुख्य मन्त्री रहे।

गृहमंत्री कार्यकाल- सरदार पटेल की मृत्यु के बाद उन्हें गृह मंत्रालय, भारत सरकार के प्रमुख का दायित्व दिया गया भारत के गृह मंत्री रूप में उनका कार्यकाल सन् 1955 से लेकर 1962 में उनकी मृत्यु होने तक रहा। पंत जी के प्रयत्नों द्वारा प्रेम सभा की स्थापना 1914 में काशीपुर में ब्रिटिश शासकों ने समझा कि समाज सुधार के नाम पर यहाँ आतंकवादी कार्यों को प्रोत्साहन दिया जाता है, फलस्वरूप इस सभा को हटाने के अनेक प्रयत्न किये गये पर पंत जी के प्रयत्नों से वह सफल नहीं हो पाये।

1916 में पंत जी काशीपुर की 'नोटीफाइड ऐरिया कमेटी' में लिये गये, बाद में कमेटी की 'शिक्षा समिति' के अध्यक्ष बने, कुमायूं में सबसे पहले नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा लागू करने का श्रेय पंत जी को ही है। पंतजी ने कुमायूं में 'राष्ट्रीय आन्दोलन' को अंहिंसा के आधार पर संगठित किया। आरम्भ से ही कुमाऊँ के राजनीतिक आन्दोलन का नेतृत्व पंत जी के हाथों में रहा कुमाऊँ में राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ प्रचार तथा विदेशी कपड़ों की होली व लगान बंदी आदि से हुआ।

विनीता भट्ट व वीना नायक

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश है, जिसे हम पुण्य भूमि कह सकते हैं, यदि कोई ऐसा स्थान है; जहाँ पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि कोई ऐसा स्थान है, जहाँ भगवान् को प्राप्त करने की आकांक्षा रखने वाले जीवमात्र को आना होगा और यदि कोई ऐसा देश है, जहाँ मानव-जाति के भीतर क्षमा घृति, दया, शुद्धता आदि सद्वृत्तियों का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है तो मैं निश्चित रूप से कहूँगा कि वह हमारी मातृभूमि भारतवर्ष ही हैं भारत देश हमारे लिए स्वर्ग के समान सुंदर है। इसने हमें जन्म दिया है। इसकी गोद में पलकर हम बड़े हुए है। इसके अन्न-जल से हमारा पालन-पोषण हुआ है।

हमारे देश का नामकरण

हमारे देश का नाम भारत या भारतवर्ष है। पहले इसका नाम आर्यावर्त था। कहा जाता है कि महाराजा दुष्यंत और शकुंतला के न्यायप्रिय पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' प्रसिद्ध हुआ। हिंदू-बहुल होने के कारण इसे 'हिंदुस्तान भी कहा जाता है। भारत की सीमाएँ आधुनिक भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैली हुई है। उत्तर में भारतमाता के सिर पर हिममुकुट के समान हिमालय सुशोभित है तथा दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को निरंतर धोता रहता है।

विभिन्न धर्मों का संगम मेरा प्यारा भारत संसार के बड़े राष्ट्रों में से एक है और यह संसार का एक बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र है। जनसंख्या की दृष्टि से इसका विश्व में प्रथम स्थान हैं यहाँ पर प्राय: सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते है। यद्यपि यहाँ हिंदुओं की संख्या सबसे अधिक है, फिर भी मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी बौद्ध, जैन आदि भी इस देश के निवासी है और उन्हें न केवल समान अधिकार प्राप्त है वरन सरकार द्वारा उन्हें विशेष संरक्षण भी प्रदान किया गया है। सभी धर्मों के मानने वालों को यहाँ अपनी-अपनी उपासना जीवन-निर्वाह करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। इस प्रकार भारत देश एक कुटुब के समान है। भारत का प्राकृतिक सौंदर्य भारत प्राकृतिक-सुंदरी ने अनुपम रूप मे प्रदर्शित किया गया है। चारों ओर फैली हुई प्राकृतिक सुंदरता यहाँ बाहर से आने वालों को मोहित करती रही है। यहाँ हिमालय का पर्वतीय' प्रदेश है। गंगा-यमुना का समतल मैदान है। पर्वत और सभ्यता मिश्रित दक्षिण का पठार है।

महापुरुषों की धरती भारत अत्यंत प्राचीन देश है। यहाँ पर अनेक ऐसे महापुरुषों का जन्म हुआ है। जिन्होंने मानव को संस्कृति और सभ्यता का वर्णन पढाया। यहाँ पर अनेक ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया, जिन्होंने वेदों का गाना किया तथा उपनिषद और पुरणों की रचना की। यहाँ राम जन्मे जिन्होंने न्यायपूर्ण शासन का आदर्श स्थापित किया। यहाँ श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, जिन्होंने 'गीता' का ज्ञान देकर कर्म का पाठ पढाया, यहाँ पर बुद्ध और महावीर ने अवतार लिया, जिन्होंने मानवता एवं अहिंसा की शिक्षा दी। यहाँ पर बड़े-बड़े प्रतीपी सम्राट भी हो चुके है।

भारत के आदर्श भारत त्याग और तपस्या की भूमि है। प्राचीनकाल से आज तक कितने ही महापुरुषों ने इस पवित्र भूमि की गरिमा बढ़ाते हुए अपनी इच्छाओं और विषय-वासनाओं का त्याग कर दिया। अपनी गरिमा, महानता को कुछ काल के लिए विस्तृत कर दिया था; किन्तु आस्था और संकल्प, विश्वास और कर्म सत्य और धर्म इस धरती से न मिटाएँ जा सके।

डॉ संजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

उत्तराखण्ड में महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र और सक्षम बनाना है। उत्तराखण्ड ने इतिहास और आधुनिक काल में कई साहसी और प्रेरक महिलाओं को जन्म दिया है। इनमें सुभद्रा कुमारी चौहान (कवयित्री और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी), अन्नपूर्णा देवी, लक्ष्मी देवी, मालती देवी, रुक्मिणी देवी, और गौरादेवी जैसी महिला स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण और सामाजिक आंदोलनों में चिपको आंदोलन की प्रमुख कार्यकर्ता भूरी देवी, शांति देवी, और सरला देवी उत्तराखण्ड की महिला शक्ति के प्रतीक हैं। ये सभी महिलाएं शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण में प्रेरक उदाहरण हैं।

उत्तराखण्ड में महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा और कौशल के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना, सामाजिक और आर्थिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ाना, अधिकारों और सुरक्षा के प्रति जागरूक करना, और ग्रामीण व पहाड़ी क्षेत्रों में समान अवसर सुनिश्चित करना है। यह महिलाओं की समग्र विकास प्रक्रिया को मजबूत बनाता है और उन्हें समाज में समान अधिकार दिलाने में सहायक होता है। उत्तराखण्ड की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आज उत्तराखण्ड में महिलाएं शिक्षा, स्वरोजगार और राजनीति में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। महिला स्वयं सहायता समूह, हस्तशिल्प, पर्यटन और कृषि जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। पंचायतों और स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया गया है। इसके साथ ही राज्य और केंद्र सरकार की कई पहलें महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक हैं, जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, मुख्यमंत्री महिला उत्थान योजना, महिला हेल्पलाइन, प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र, और स्मार्ट स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम। ये योजनाएं महिलाओं को शिक्षा, कौशल और आर्थिक अवसर प्रदान करती हैं। ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में सामाजिक रूढ़िवादिता और लैंगिक भेदभाव आज भी महिलाओं के विकास में बाधक हैं। घरेलू हिंसा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के सीमित अवसर जैसी समस्याएँ भी महिलाओं के सशक्तिकरण में चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं।

उत्तराखण्ड में महिला सशक्तिकरण निरंतर प्रगति कर रहा है। ऐतिहासिक स्वतंत्रता सेनानियों, सामाजिक और पर्यावरण आंदोलनों में सक्रिय महिलाओं से लेकर आज की शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएं राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। सरकारी पहलें और सामाजिक जागरूकता यह सुनिश्चित करती हैं कि महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक रूप से सशक्त बनें, जिससे समाज और राज्य दोनों की प्रगति संभव हो।

श्रीमती पुष्पा
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी

डॉ राजेन्द्र प्रसाद का आत्मानुशासन

संसार में अनेक एसे उदाहरण हैं कि ऊँचे पद पर पहुँच कर भी महान व्यक्ति भी अनुशासन का दृढ़ता से पालन करते है ऐसी ही एक घटना भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की हैं।

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के साथ राष्ट्रपति भवन में उनकी बहन भगवती देवी भी रहती थी, जो दमे की मरीज थीं, दुर्भाग्यवश गणतंत्र दिवस की पूर्व रात्रि अर्थात् 25 जनवरी की रात्रि को उनकी मृत्यु हो गई। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपनी बहन का शव एक कमरे में बन्द कर दिया।

26 जनवरी के समारोह में बाधा न पडें इस कारण से यह समाचार किसी को नहीं बताया। अगले दिन प्रातः काल 26 जनवरी के समारोह में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हर वर्ष की तरह भाग लिया। समारोह समाप्त होने के दो घण्टे बाद लोगों ने देवा कि राष्ट्रपति अपनी बहन की अर्थी के साथ सड़क पर श्मशान जा रहे थे इस प्रकार 26 जनवरी की शाम को सारे संसार को इस घटनाक्रम का पता चला। इतने बड़े पद पर आसीन होने के बाद भी जीवन में राष्ट्रीय अनुशासन को दृढ़ता से अपनाने का इससे बड़ा उदाहरण शायद ही संसार में कहीं मिले।

शिक्षा का महत्व

मनुष्य आदिकाल से ही शिक्षा के बिना नहीं रह पाया था अर्थात् मनुष्य ने जो भी अपने जीवन में सीखा उसे शिक्षा का ही नाम दिया जा सकता हैं, क्योंकि वह भी एक प्रकार की शिक्षा थी, जिससे मनुष्य ने अपना जीवन यापन किया। बढ़ते समय के साथ मनुष्य शिक्षा का महत्व भी समझने लगा और आज के युग या आधुनिक युग को देखा जायें तो मनुष्य जो बिना शिक्षा के हो उसको कोई महत्व या वरीयता नहीं दी जा सकती हैं। अतः स्पष्ट शब्दों में कहा जाये तो आज के युग में केवल वही पूर्ण मनुष्य समस्या जाता हैं, जिसने शिक्षा को या पढ़ाई-लिखाई पूरी तरह की हों, दूसरें शब्दों में अगर कामकाज की भी बात करें तो वही मनुष्य अपने जीवन को अच्छे से यापन कर सकता हैं, जो अनपढ़ न हों अर्थात् पढ़ा-लिखा हों क्योंकि शिक्षा एक प्रकार का अस्त्र हैं, जिससे हम केवल पढ़ना या लिखना ही नहीं सीखते बल्कि अपने जीवन में आने वाली अनेक कठिनाइयॉ और व उनसे किस तरह समाधान किया जा सकता यह भी सीखते हैं।

शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुत ही आवश्यक साधन हैं, हम अपने जीवन में शिक्षा के इस साधन का उपयोग करके कुछ भी अच्छा प्राप्त कर सकते हैं शिक्षा का उच्च स्तर लोगों की सामाजिक और पारिवारिक पहचान बनाने में मदद करता है, शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप से उपयोगी व महत्वपूर्ण समय होता हैं, यही कारण है, कि शिक्षा हमारे जीवन में इतना महत्व रखती हैं, अंतः शिक्षा केवल मात्र किसी पुस्तक या अकबार को बढ़ना ही नहीं सिखाती बल्कि यह हमें जीवन में कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने में सहायता करती है। शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किया गया कार्य या प्राप्त किया गया ज्ञान हम सभी को और प्रत्येक व्यक्ति को आजीवन के प्रति आत्मनिर्भर बनाती है। अतः अपने जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित होना चाहिए।

भावना
बी ए तृतीय वर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में संचार माध्यम

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा आपूर्ति (रेडियो, टेलिविजन पर शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण) से सभी सीखने वाले और अनुदेशक को एक भौतिक स्थान पर होने की आवश्यकता समाप्त हो गई। जब से सूचना और संचार माध्यम को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया गया है इससे एक ऋतु हीन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है। इसमें वीडियो टेलीविजन, मल्टीमिडिया, कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल है, इससे छात्र-छात्रा कुछ भी सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुड़ते हैं। पिछले कुछ दशकों से प्रौद्योगिकी ने हर संभव मार्ग से हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है भारत एक सफल सूचना और नवीन संचार माध्यम से सज्जित राष्ट्र होने के नाते सदैव सूचना और संचार प्रौद्योगिक के उपयोग पर अत्यधिक बल देता है न केवल अच्छे शासन के लिए बल्कि अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य कृषि और शिक्षा आदि के लिए भी। शिक्षा नि:संदेह एक देश की मानव पूंजी के निर्माण के लिए किए जाने वाले सार्वधिक महत्वपूर्ण निवेशों में से एक और एक ऐसा माध्यम है जो न केवल अच्छे सारक्ष नागरिकों को गढ़ता है बल्कि एक राष्ट्र को तकनीकी रूप से नवचारी भी बनाता है और इस प्रकार आर्थिक वृद्धि की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है। भारत में ऐसे अनेक कार्यक्रम और योजनाएँ जैसे मुफ्त भारत और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता अभियान आदि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा आरम्भ किए गए हैं, हाल के वर्षो में इस बात में काफी रूचि रही है कि सूचना और संचार माध्यम को शिक्षा के क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है।

एक ऐसा समय था जब छात्र अपनी परीक्षा के परिणाम जानने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान में भटकते रहते थे, परन्तु अब पिछले 10 वर्षो से परीक्षा के परिणाम और विभिन्न शैक्षिक प्रवेश और भर्ती, परीक्षाओं के परिणाम जो अनेकों मण्डलों/संस्थानों/आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के परिणाम मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट पर आसानी से देखे जा सकते हैं, छात्र-छात्रा या प्रत्याशियों को वेबसाइट में दिए गए उपयुक्त स्थान पर केवल अपना रोल नम्बर लिखना होता है और परीक्षा का परिणाम/अंक सूची स्क्रीन पर आ जाती है।

नीमा भट्ट
राजकीय महाविद्यालय,
अमोड़ी (चम्पावत) दिनांक 18.09.2019

विकसित भारत के लिए दृष्टिकोण 2047

विकास के पथ पर चलना है
विकसित राष्ट्र बनाना है।

विकसित भारत यानि प्रगतिशील भारत आज हम देखे तो हमारा भारत तेजी से विकसित हो रहा है। भारत देश हर एक क्षेत्र में तेजी से विकास के पथ मे चल रहा है विकसित भारत का सपना हर भारतीयों कि आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक है 2047 तक आजादी के 10 वर्षों का जश्न मनाते हुए हम अपने देश की एक समृद्ध समावेशी और सतत् विकासशील राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। विकसित भारत पर निबंध में हम भारत देश, भारत के लोग, भारत के सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर चर्चा करेंगे और अपने देश को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का प्रयास करेंगे।

जिसका ताज हिमालय है।
गंगा बहती है जहाँ
अनेकता ने एकता है।
'सत्यमेव जयते' जहाँ नारा है।
वह भारत देश हमारा है।

विकसित भारत 2047 भारत के सतत विकास के लिए एक विजन। भारत की स्वतन्त्रता की शताब्दी तक उसके विकास और वृद्धि के लिए एक परिवर्तनकारी रोडमैप का प्रतिनिधित्व करता है। इस महत्वकांक्षा विजन का उद्देश्य एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है जो आर्थिक रूप से मजबूत सामाजिक रूप से समावेशी और पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ हो। आज हमारा भारत हर क्षेत्र में अपना स्थान व विकास कर रहा है। वो फिर चाहे खेल हो, चित्रकारी, विज्ञान का क्षेत्र हो आज व्यक्ति हर क्षेत्र में विकास की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत के लोग अलग-अलग भाषाएँ, धर्म और संस्कृतियों को फॉलो करते है जो इसकी सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाती है। भारतीयों कि जीवनशैली में परिवारिक मूल्य और परम्पराएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत की सांस्कृतिक विविधता

भारत सांस्कृतिक विविधताओं का देश है और यही उसकी ताकत भी है यहाँ अनेकों प्रकार की भाषाएँ

बोली जाती हैं और विभिन्न धर्म, जातियों और संस्कृतियों का संगम है। यह विविधता न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करती है, बल्कि हमें एकजुट भी रखती है। विकसित भारत 2044 वर्तमान सरकार का रोडमैप है लक्ष्य 2047 तक भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस काल को स्वर्णकाल मानते है और उनके अनुसार आने वाले 30 सालों तक हमें बिना रुके लगातार काम करना होगा क्योंकि यही सदी भारत की सदी है और भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए यहीं सबसे अच्छा समय है।

इस संकल्प का उद्देश्य और महत्व

भारत को पूर्ण विकसित और समृद्धशाली राष्ट्र बनाना है। विकसित भारत का उद्देश्या हर भारतीय के जीवन स्तर में सुधार लाना है ताकि सभी को समान अवसर और सुविधाएँ मिल सके यह भारत को एक वैश्विक राष्ट्र बनाने के लिए आवश्यक है। इसके माध्यम से हम न केवल आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देंगे बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी बनायें रखेंगे! भारतीय जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा पारिवारिक मूल्य और परम्पराएं है।

चाँदनी बोहरा
बी.ए. 5th सेमेस्टर
राजकीय महाविद्यालय
अमोडी (चम्पावत)

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण:

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) का गठन 9 नवम्बर 1995 को किया गया था। इसका मुख्यालय दिल्ली में है, यह समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त कानूनी सेवाएं देने व विवादों को सौहार्दपूर्ण तरीके से सुलझाने के लिए काम करता है।

नालसा से जुड़ी खास बातें:-

- नालसा की स्थापना कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के तहत हुई थी।
- नालसा, पूरे देश में विधिक सहायता कार्यक्रमों को लागू करने की देख-रेख करता है।
- नालसा, राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरणों को दिशा- निर्देश जारी करता है।
- नालसा, लोक अदालतों का आयोजन करता है।
- नालसा सभी नागरिकों तक न्याय की पहुंच सुनिश्चित करता है।
- नालसा के जरिए मानसिक रूप से बीमार या विकलांग लोगों के साथ उनके अधिकारों के हिसाब से व्यवहार किया जाता है।

मुफ्त कानूनी सहायता के लिए ऑफ लाइन व ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए, आप अपने नजदीकी विधिक सेवा प्राधिकरण में जाकर तैयार फॉर्म भर सकते हैं या उसे पोस्ट कर सकते हैं।

संदर्भ:

- सभी नागरिकों के लिये उचित निष्पक्ष व न्याय प्रक्रिया सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 9 नवम्बर को राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस मनाया जाता है।
- राष्ट्रीय विधिक सेवा, (NLSD) की शुरुआत पहली बार 1995 में भारत के सर्वोच्च न्यायलय द्वारा समाज के गरीब व कमजोर वर्गो को सहायता व समर्थन प्रदान करने के लिये की गई थी।

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नालसा (National Legal Services Authority & NALSA) का गठन विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 के अंतर्गत समाज के कमजोर वर्गों को नि:शुल्क, कानूनी सेवाएं प्रदान करने के लिये और विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान के लिये अदालतों का आयोजन करने के उद्देश्य से किया गया है।

भारत का मुख्य न्यायधीश, इसका मुख्य संरक्षक होता है व भारत के सर्वोच्च न्यायलय का द्वितीय वरिष्ठ न्यायाधीश प्राधिकरण का कार्यकारी अध्यक्ष होता है।

नालसा के कार्य

मुख्य रूप से राज्य कानूनी सहायता प्राधिकरण जिला कानूनी सहायता प्राधिकरण, तालुक कानूनी सहायता समीतियों आदि को निम्न कार्य नियमित आधार पर करते रहने की जिम्मेदारी सौंपी गई है-

1. सुपात्र लोगों को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करना।
2. विवादों के सौहार्दपूर्ण ढंग से, निपटाने के लिये लोक अदालतों का संचालन करना।

मुफ्त विधिक सेवाएँ

- किसी कानूनी कार्यवाही में कोर्ट फीस व अन्य सभी प्रभार अदा करना।
- कानूनी कार्यवाही में वकील उपलब्ध करना।
- कानूनी कार्यवाही में आदेशों आदि की प्रयोग प्रतियाँ प्राप्त करना।

मुक्त कानूनी सहायता पाने के पात्र

- ❒ महिलाएँ और बच्चे।
- ❒ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के सदस्य।
- ❒ औद्योगिक श्रमिक।
- ❒ बड़ी आपदाओं जैसे हिंसा, बाढ़, सुखे, भूकंप तथा औद्योगिक आपदाओं आदि के शिकार लोग।
- ❒ विक्लांग व्यक्ति।
- ❒ हिरासत में रखे गए लोग।
- ❒ बेगार या अवैध मानव व्यापार के शिकार।

निशुल्क विविध सेवाएँ प्रदान करने वाले विधिक सेवा संस्थानः-

- ❒ **राष्ट्रीय स्तर पर** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण।
- ❒ **राज्य स्तर पर** राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण।
- ❒ **जिला स्तर पर** राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण जिला न्यायधीश इसका कार्यकारी अध्यक्ष होता है।
- ❒ **तालुका स्तर पर** तालुक विधिक सेवा प्राधिकरण इसकी नेतृत्व वरिष्ठ सिविल न्यायधीश करता है।
- ❒ **उच्च न्यायालय** उच्च न्यायालय विधिक सेवा प्राधिकरण।
- ❒ **सर्वोच्च न्यायालय**-सर्वोच्च न्यायालय विधिक सेवा प्राधिकरण।

दीक्षा
बी.ए. 5वी सेमेस्टर
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं पर निबंध

बेटी बचाओं बेटी पढाओं अभियान केवल एक योजना या अभियान नहीं है, यह लोगों की सोच से जुड़ा सामाजिक विषय, हमें इसके पीछे छिपी लोगों की ओछी सोच को बदलना है, जो कि कठिन कार्य है, ईश्वर के बात केवल महिलाओं के पास सृजन की क्षमता है, जरा सोचिए वो आज कैसा होगा जहाँ महिलाएं न हो (Anyone Without Woman) केवल कल्पना करने की जरूरत है, तस्वीर खुद-व-खुद साफ हो जाएगी ऐसा कोई काम नहीं जो लड़कियाँ नहीं कर सकती। वो भी देश की प्रगति में समान रूप से भागीदार है इंदिरा गाँधी से लेकर कल्पना चावला तक ऐसे लाखो नाम है, जिन्होंने देश का नाम रोशन किया है।

बेटी बचाओं बेटी पढाओं अभियान क्या है

देश में लगातार घटती कन्या शिशु दर को संतुलित करने के लिए इस योजना की शुरुआत की गयी, किसी भी देश के लिए मानवीय संसाधन के रूप में स्त्री और पुरुष दोनों एक समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते है। केवल लड़का पाने की इच्छा ने देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है, कि इस तरह के योजना को चलाने कि जरूरत आन पड़ी यह अत्यन्त शर्मनाक है, यद्यपि स्त्रियों के साथ भेदभाव समूल विश्व में होता है, यह कुछ नया नहीं है, आज भी समाज से कार्य के लिए लड़कियों को अपेक्षाकृत कम वेतन दिए जाते है, कहीं अधिक काबिल होने के बाद भी।

बेटी बचाओ, बेटी पढाओं अभियान का उद्देश्य

बेटी बचाओ बेटी पढाओं का शुभारंभ प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत हरियाणा में की थी। हरियाणा में ही करने के लिए मुख्य कारण वहाँ लिंग-अनुपात में सर्वाधिक अन्तर है। यह योजना पूरे देश को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री जी ने पूरे देश का आवाहन किया। और सभी देशवासियों को एक जुट होकर लड़कियों की कम जनसंख्या को संतुलित करने काक संल्प किया इय योजना का दारोमदार तीन मंत्रालयों को सोंपा गया है, यह है महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन मंत्रालय इस योजना के तहत सबसे पहले सम्पूर्ण भारत में पूर्व गर्भाधन और प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम 1994 को लागू किया गया है। कोई भी ऐसा करते पकड़ा गया तो उसके लिए कड़ी दण्ड के प्रवधान है साथ ही साथ यदि कोई चिकित्सक भ्रूण लिंग परीक्षण करते या भ्रूण-हत्या का दोषी पाया गया, तो उसे अपने लाइसेन्स रद्द के साथ-साथ भयंकर परिणाम भोगने पड़ सकते हैं, इसके लिए कानूनी कार्यवाही के आदेश है।

बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं अभियान की आवश्यकता

देश में महिलाओं और पुरुषों की संख्या में प्राप्त अन्तर है, इसी अन्तर को पाटने के लिए इस योजना की जरूरत पड़ी। केवल उनकी संख्या में वृद्धि करना ही नहीं बल्कि उनके खिलाफ हो रहे अपराधों को रोकना भी इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य है, बड़ी अजीब बात है न जितना देश और समाज विकसित होता जा रहा है, उतना ही महिलाओं को खिलाफ क्राइम हिंसा भी बढ़ती जा रही है। यह बात कुछ हजम होने योग्य नहीं है। जितना विज्ञान हमारे लिए वरदान है। कुछ मामलों में अभिशाप भी। मेडिकल और मेडीसीन मानव जाति के भलाई के लिए बनाए गए है, इसका सजीव उदाहरण सोनोग्राफी और अल्ट्रासाउन्ड मशीन है। जिससे गर्भ में पल रहे बच्चे का जैंडर पता कर सकते है, गलती विज्ञान या वैज्ञानिक आविष्कारों की नहीं बल्कि उसके उपयोग की है, 1991 की जनगणना से यह बात सामने आई थी कि देश में लड़कियों की संख्या में भारी कमी देखी गई, तब इस ओर ध्यान दिया जाने लगा। बाद के वर्षों में 2001 की राष्ट्रीय जनगणना में यह स्थिति और भी भयंकर होती गई। महिलाओं की संख्या में गिरावट सन् 2011 तक लगातार जारी रहा 2001 में भारत में लड़कियों और लड़कों का अनुपात 932/1000 और 2011 तक आते आते यह अनुपात 918/1000 तक घट गया था। इसका अर्थ यह है, कि अगर समय रहते नहीं चेता गया तो यह आकड़ा घटते-घटते एक दिन शून्यता की स्थिति में आ जाएगा। 'बिल्डिंग डाइवर्सिटी इन एशिया पैसिफिक बोर्ड नामन संस्था की ताजा रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की संख्या में लगभग 10% कि बढ़ोतरी हुई है, रिप्रेजन्टैशन में महिलाओं की संख्या 2012 में 2.5% से बढ .कर 2015 में 13% तक हो गई बोर्ड की सूचना को आधार माना जाए तो महिलाओं की बोर्ड में लगभग 18% टेलिकॉम क्षेत्र में 12% आई. टी. क्षेत्र में 9% वित्तीय जैसे क्षेत्रों में भागीदार है।

उपसंहार

जब एक बालक को पढ़ाया जाता है। तो केवल एक इन्सान ही शिक्षित होता है। जबकि एक बालिका को पढ़ाने से दो-दो परिवार साक्षर होता है, साक्षर मां ही अपने बच्चे का चरित्र निर्माण करती है। अतः वह जन्मदाता ही नहीं चरित्र निर्माता भी है, क्योंकि उसके अनेको किरदार है। एक लड़की जन्म लेकर सर्व प्रथम बेटी-बनती है, अपने माँ बाप के लिए ढाल बनकर हर संकट में खड़ी रहती है बहन बनकर भाई का सहयोग करती है, तो पत्नी बनकर अपने पति और ससुराल का हर सुख-दुःख में साथ देती है। माँ बनकर अपने बच्चों सर्वस्व नहावर कर देती है। अपनी बच्चों में स संकार विजारोपण करती है रानी लक्ष्मीबाई, मैडम भीकाजी कामा, कल्पना दत्त आदि के नामों से हमारा इतिहास उज्जवल है, विश्व की प्रखायत महिलाओं में सावित्री जिन्दल, इन्दूजैन, किरण मजूमदार, के शोभना इन्द्रा नई, शिखा शर्मा, चन्द्रा कोचर आदि ने विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन किया है।

पूजा आर्या

14 सितम्बर हिन्दी दिवस

हिन्दी राष्ट्र भाषा के रूप में भारत के स्वतंत्र होने पर देश के संविधान परिषद् ने 14 सितम्बर 1949 को राष्ट्रभाषा के रूप में और देवनागरी लिपि को राष्ट्र लिपि के रूप में स्वीकृति प्रदान की।

26 जनवरी 1965 को संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया। हिन्दी में राष्ट्रभाषा के लगभग सभी गुण पाये जाते हैं। यह सरल तथा इसकी लिपि वैज्ञानिक एवं सरल है। तथा इसमें देश की भावनात्मक एकता को बनाये रखने की क्षमता हैं।

राष्ट्र भाषा की विशेषताएँ

1. राष्ट्र भाषा देश के व्यापक क्षेत्र में बोली जाती हैं।
2. उसका व्याकरण सरल होना चाहिये।
3. अन्य भाषा के तत्वों को अपनाने की क्षमता हो।
4. भावनात्मक एकता स्थापित करने की क्षमता हो।
5. 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के रूप में स्थापना की गई।
6. 1955 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया।
7. 14 सितम्बर 1950 को हिन्दी राजभाषा के रूप में घोषित की गई।

कुमारी गीता महरा

खण्ड-२

कविताएँ

उलटबांसी

दाखिल होते हैं
इस घर में
हाथ पर धरे
निज शीश।
सीधी होती जाती हैं
उलझी उलटबाँसियाँ
अपनी ही कथा लगती हैं
सब कथायें।
जिनके बारे में
कहा जा रहा है
कि मन न भए दस बीस।
बनता हुआ मकान
यह एक बनता हुआ मकान है
मकान भी कहाँ
आधा-अधूरा निर्माण
आधा-अधूरा उजाड़
जैसे आधा-अधूरा प्यार
जैसे आधी-अधूरी नफ़रत।
यह एक बनता हुआ मकान है
यहाँ सब कुछ प्रक्रिया में है गतिशील गतिमान
दीवारें लगभग निर्वसन है
उन पर कपड़ों की तरह नहीं चढ़ा है पलस्तर
कच्चा-सा है फ़र्श
लगता है ज़मीन अभी पक रही है
इधर-उधर लिपटे नहीं हैं बिजली के तार
टेलीफोन-टी. वी. की केबिल भी कहीं नहीं दीखती।
अभी बस अभी पड़ने वाली है छत
जैसे अभी बस अभी होने वाला है कोई चमत्कार
जैसे अभी बस अभी
यहाँ उग आएगी कोई गृहस्थी
अपनी सम्पूर्ण सीमाओं और विस्तार के साथ
जिसमें साफ़ सुनाई देगी आलू छीलने की आवाज़
बच्चों की हँसी और बड़ों की एक ख़ामोश सिसकी भी।
अभी तो सब कुछ बन रहा है शुरू कर कर दिए हैं
मकड़ियों ने बुनने जाल और घूम रही है एक मरगिल्ली
छिपकली भी
धीरे-धीरे यहाँ आमद होगी चूहों की
बिन बुलाए आएँगी चीटियाँ
और एक दिन जमकर दावत उड़ाएँगे तिलचट्टे।
आश्चर्य है जब तक आऊँगा यहाँ
अपने दल-बल छल-प्रपंच के साथ
तब तक कितने-कितने बाशिन्दों का
घर बन चुका होगा यहाँ बनता हुआ मकान।

डॉ. सिद्धेश्वर सिंह
प्रोफेसर हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चंपावत)

माँ ने कहा था

मैंने 'माँ' का कहा अभी तक तो याद रखा है, 'माँ' ने कहा था कैसा ही ब्रांड वाला डिटर्जेंट लगा लेना पर कोयला सफेद नहीं हो सकता।

शराब की दुकान पर बैठकर चाहे जितना दूध पी लेना, पर कोई विश्वास नहीं करेगा, चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा और याद रखना कुत्ते को भी नहीं पचता। जो कान से देखता है उसको सच के दर्शन नहीं हो सकते अंधे बगुलों की लाचारी होती है की उनको कीचड़ ही खानी पड़ती है यह दुनिया है इसमें दूसरों से पार पाने के दो ही तरीके हैं पहला चुप, जो सौ को हराता है और दूसरा मौके पर कही बात जो तलवार से बढ़कर होती है, इस पर भी याद रखना

दुनिया अपनी मुहार चलती है
इसकी अदालत में ऐसे निर्णय होते हैं कि
नानी खसम करेगी तो दोहता भुगतेगा।

दीया कितनी भी चमक के साथ जल रहा हो दिन निकलते ही उसमें फूंक मार दी जाती है। इतना नाजुक बनने से क्या फायदा की

फलूदा खाने में भी दांत हिलने लगें।

दुनिया में एक से एक फाटे चंद गिरधारी भरे पड़े हैं। जो निबोली खाकर आएंगे,

ऊपर से ऐसा पोज मारेंगे कि मुनक्का खाकर आए हों।

अपनी बिठिया मुंह चाट-चाठकर पूंछ हिलाएंगे जहाँ काम निकला, थूक लगाकर छोड़ देंगे

कि बेटे! जा चढ़ जा ऊंट पर याद रखना
ऐसे-ऐसे हाजमेदार लोग मिलेंगे
कि दुनियाभर की बात सुनकर भी

इस तरह मुस्कुराएगें कि दूज का चांद चमक रहा हो। और शिकार को भेड़िया की तरह हँसा-हँसाकर मारेंगे। अपने घर में खुद दीया जलाना।

अपने हाथों पावों पर भरोसा करना,
सोएगा भी तो आँख खोलकर सोना
मैंने माँ का कहा अभी तक तो याद रखा है।

माँ-कुछ कविताएँ

एक मेले में ला मुझको घबराती है 'माँ'
उसकी उंगली छोड़ भटकता हूँ, जब भी
खुद मेरे पीछे-पीछे आती है 'माँ'।

दो मेरे हर प्रश्न का उत्तर रही है शुभाशीषों भरी वो दृष्टि वत्सल, मेरा रक्षा-कवच बनकर रही है।

तीन वेदना-विह्वला रही होगी खैरियत से कटा सफर मेरा, आज माँ निर्जला रही होगी।

चार मेरे सरपे उसका आंचल मेरे सर पे
आसमां है
मुझे है नहीं अभीप्सा
किसी तीर्थ में भ्रमण की,
मेरे दोस्तो! अभी तो
मेरे घर में मेरी
माँ है।
पांच खो गए पल की
याद आती है
जब भी घिरते हैं
मेघ
आँखों में,
माँ के आँचल की
याद आती है।

नीमा भट्ट

मेरे पापा

शाम हो गई अब तो घुमने चलो न पापा
चलते-चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा
अंधेरे से डर लगता है, सीने से लगा लो न पापा
मम्मी तो सो गई।
आप ही थपकी देकर सुलावों न पापा
स्कूल तो पूरा हो गया है,
अब कॉलेज जाने दो ना पापा
पाल पोस कर बड़ा किया है,
अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली में बिठा ही दिया तो
आंसू तो मत बहाओं न पापा
आपने तो मेरी हर बात मानी
एक बात और मान जाओ न पापा
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनियाँ को समझाओ न पापा।

किरन

भाई-बहन

बड़े होकर भाई-बहन कितने दूर हो जाते हैं, इतने व्यस्त कि मिलने से भी मजबूर हो जाते है। एक दिन भी जिनके बिना रह नहीं सकते थे हम, जब जिंदगी में अपनी मशरुफ हो जाते है। छोटी-छोटी बात बताए बिना रह नहीं पाते थे हम अब बड़ी-बड़ी मुश्किलों से हम अकेले जूझते जाते है। ऐसा भी नहीं की उनकी अहमियत नहीं है, पर अपनी तकलीफे जाने क्यूँ उनसे छिपा जाते है। रिश्ते नए जिंदगी से जुड़ते चले जाते है और बचपन के ये रिश्ते कहीं दूर हो जाते है। खेल-खेल में रुठना मनाना रोज रोज की बाद थी, अब छोटी सी गलतफहमी से दूर कर जाते है। सब अपनी उलझनों में उलझ कर रह जाते है कैसे बताए उन्हें हम वो हमें कितना याद आते है। वो जिन्हें एक पल भी हम भूल नहीं पाते थे, बड़े होकर वो भाई बहन हमसे दूर हो जाते है।

पल-पल से बनता है अहसास
अहसास से बनता है विश्वास
विश्वास से बनते है रिश्ते
और रिश्तो से बनता है कोई खास
हम वो नहीं जो तुम्हें गम में छोड़ देगें
हम वो नहीं जो तुमसे नाता तोड़ लेगें
मैं हूँ तेरी बहन हर खुशी को तेरी तरफ मोड़ देगे।

Love you brother

निर्मला

हिन्दी दिवस

14 सितम्बर को बस एक दिन ही करते हम
हिन्दी का गुणगान
बाकि दिन हम क्यों भूल जाते हैं
हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान
सिर्फ एक दिन मंच बना हमारे नेता भाषण देते
हिन्दी का हो सम्मान तभी बन पायेगें।
हम महान,
और अगले ही दिन समझने लगते हम
हिन्दी बोलने में अपना अपमान
अंग्रेजी बोलने में अपना महान

अंग्रेजी बोलने वाले को मिलता हिन्दुस्तान की
जमीन पर सम्मान
वह समझता अपने आप को महान
और भूल जाता कि इसी अंग्रेजी ने बनाया
हमें वर्षो ं तक गुलाम
सुन-अरे राह से भटके हुये हिन्दुस्तानी इंसान
अब तो दिला अपनी हिन्दी भाषा को सम्मान
लौट आये तेरा स्वाभिमान-स्वाभिमान
उठ खड़ा हो, कर बार-बार प्रयास
रख हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा
बनाने की ऑस।

नीमा भट्ट

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

धरती जैसी सहनशीलता है। नारी में
पानी जैसी शीलता है। महिलाओं में
नारी को प्रकृति ने दी है शक्ति सारी
अपमान न करो इसका कहके बेचारी
नारी भी छू सकती है आकाश
बस उसे मैके की तलाश
वही ही है देश महान
जो करे नारी का सम्मान
समानता का अधिकार पाइऐ।
महिला अब आगे आइऐ।।

बबिता चौहान

मैं नारी हूं

तोड़ के हर पिंजरा,
तोड़ के हर पिंजरा,
जाने कब मैं उड़ जाऊँगी,
चाहे लाख बिछा लो बंदिशे
फिर भी दूर आसमान मैं,
अपनी जगह बनाऊँगी मैं।
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ,
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ,
भले ही परम्परावादी जंजीरो से बांधे है,
दुनिया के लोगों ने पैर मेरे,
फिर भी उस जंजीर को तोड़ जाऊँगी मैं
मैं किसी से कम नहीं,
सारी दुनिया को दिखाऊँगी, मैं।
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ,
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ

पुष्पा चौहान

स्वामी विवेकानंद

1. एक अच्छे चरित्र का निर्माण
   हजारों बार ठोकर
   खाने के बाद ही होता है।
2. जो तुम सोचते हो वो हो जाओगे,
   यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो
   तुम कमजोर हो जाओगे
   अगर खुद को ताकतवर सोचते हो,
   तुम ताकतवर हो जाओगे
3. "ना खोजो ना बचो,
   जो आता है ले लो"
4. "कुछ मत पूछो, बदले में कुछ मत मांगो
   जो देना है वो दो, वो तुम तक वापस आएगा,
   पर उसके बारे में अभी मत सोचो"
5. "जो अग्नि हमें गर्मी देती है:
   हमें नष्ट भी कर सकती है:
   यह अग्नि का दोष नहीं है"
6. "अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे,
   तो इसका कुछ मूल्य है, अन्यथा
   ये सिर्फ बुराई का एक ढेर है,
   और इससे जितना जल्दी छुटकारा
   मिल जाए उतना बेहतर है"
7. "मस्तिष्क की शक्तियाँ
   सूर्य की किरणों के समान हैं
   जब वो केन्द्रित होती हैं
   चमक उठती हैं।
8. "एक समय में एक काम करो,
   और ऐसा करते समय
   अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो,
   और बाकी सबकुछ भूल जाओ,"
9. सबसे बड़ा धर्म है
   अपने स्वभाव के प्रति सच्चा होना,
   स्वयं पर विश्वास करो,
10. सच्ची सफलता और आनंद का सबसे बड़ा रहस्य यह है, वह पुरुष या स्त्री जो बदले में कुछ नहीं मांगते वही सफल हैं पूर्ण रूप से निस्वार्थ व्यक्ति सबसे सफल है,

11. स्वतंत्र होने का साहस करो
जहां तक तुम्हारे विचार जाते हैं वहां तक
जाने का साहस करो
और उन्हें अपने जीवन में उतारने
का साहस करो:
12. एक विचार लो, उस विचार को
अपना जीवन बना लो, उसके बारे में
सोचो उसके सपने देखो,
उस विचार को जियो, अपने मस्तिष्क
मांसपेशियों नसो शरीर के हर हिस्से को
उस विचार में डूब जाने दो और
बाकी सभी विचार को किनारे रख दो
यही सफल होने का तरीका है।
13. उठो जागो और
तब तक नहीं रूको जब
तक लक्ष्य प्राप्त ना हो
14. जब तक आप खुद पर विश्वास
नहीं करते
तब तक आप भगवान
पर विश्वास नहीं कर सकते
15. बाहरी स्वभाव केवल अंदरुनी स्वभाव का स्पष्ट
रूप है।

(A) एक युवा सन्यासी जिसने
सोच बदल दी दुनिया की
निर्बल शोषित पीड़ित के प्रति
जिसके मन में करुणा थी।
भारत की संस्कृति के ध्वज को
जिसने यूँ फहराया हो,
जिसके कारण स्वाभिमान
जनमानस ने गहराया हो।

(B) सोची दुनियां को जगाया,
सिंहों को सिंह बनाया,
प्रेम योग हो या भक्ति योग हो,
एक रहस्यमयी सूत्र उपजाया
वही आत्मज्ञान का महापुरुष,
स्वामी विवेकानंद कहलाया।।

शिक्षक

हम आपके सुखमय जीवन की मनोकामना करते हैं। आप भरी हुई वो गागर हैं जो खाली गागर भरते है। सफल जीवन हो सकता है शिक्षक की सच्ची भक्ति से शिक्षक वह जलता दीपक है जो बुझ नहीं सकता शक्ति से। कोमलता के भावों को शिक्षक कभी नहीं ठुकराते है।

शिक्षक कि इक मुस्काते हैं। सच्चाई की राह पर चलना शिक्षक हमे सिखाते है।

जीवन में सच्ची मानवता शिक्षक ही दे जाते है।

अंधकार से ज्योति तक भी शिक्षक ही ले जाते है

शिक्षक एक एसा अस्त्र है जिससे शस्त्र भी सारे डरते है। हम वह बेरंगी तस्वीर है जिसमें शिक्षक ही रंग भरते है। कर्मों के प्रकाश से शिक्षक जीवन उजियारा करते हैं शिक्षक एक एसा चित्रक है जो मानवता, सच्चाई, विद्या के रंग जीवन में भरते है। हम आपके सुखमय जीवन की मनोकामना करते है।

आप भरी हुई वो गागर हैं जो खाली गागर भरते हैं।।

रविन्द्र कुमार

गाँधी जी

जब-जब भारत माता पर संकट के बादल छाते हैं आसमान से उतर जमी पर अनमोल फरिश्ते आते है। याद करो जब अंग्रेजों के चंगुल में यह देश था।

आजाद कराने वाला कोई
महापुरुष ना शेष था।।
तब भारत माँ की कोख से
एक महापुरुष ने जन्म लिया
अंग्रेजों से इस धरती को
उसने था आजाद किया।।
जो भारत माता पर अपने
न्यौछावर प्राण कर जाते हैं।।
सरहद पर देखो ना जाने कितने
जवान मर जाते हैं।।
भारत माता पर बापू का बहुत
बड़ा एहसान है।।
जिसकी कुर्बानी से अब भारत
कही इतनी शान हैं।।
इस सच्चाई की ताकत से
दुश्मन सारे डर जाते हैं।।
आसमान से उतर जमी पर
अनमोल फरिश्ते आते हैं।।
जब-जब भारत माता पर
संकट के बादल छाते हैं।

रविन्द्र कुमार

खण्ड-३

बहु विषयक-निबंध

उत्तराखण्डस्य इतिहासकारः

उत्तराखण्डः रत्नप्रसूता धरा अस्ति। अत्र अनेके महापुरुषाः अभवन्। तेषु शिवप्रसादः डबरालः 'चारणः' अपि अस्ति। सः प्रख्यातः साहित्यकारः सम्पादकः पुरात. त्ववेत्ता इतिहासकारः ज्योतिर्विद भाषाविद् प्राध्यापकः च आसीत्। विलक्षणप्रतिभासम्पन्नः शिवप्रसादः डबरालः चारणः महाभागः 1692 तमे खीष्टाब्दौ नवम्बरमासस्य द्वादशनिङ्के पौडी जनपदस्य गहलीनाम ग्रामे जन्म अलभत् अस्य पिता कृष्णदत्तः डबरालः कर्त्तव्यनिष्ठः प्रधानाध्यापकः आसीत्। माता च भानुमती देवी सुयोग. या गृहिणी आसीत्। पर्वतीये ग्राम्यवातावरणे सः प्रारम्भिक शिक्षाम् अलभत् तथा च मेरठवाराणसीआगराप्रभृतिषु विश्वविद्यालयेषु अस्य उच्चशिक्षा सम्पन्ना अभवत्। स्वजीवने सः अनेकानेककाव्यनाटका दीनि अलिखत बालानां कृते वीरवन्दना नाम अन्तराक्षरिपुस्तिकाम् अपि अरचयत्। पुस्तके-प्रकाशनार्थं वीरगाथाप्रकाशनस्य स्थापनाम् अकरोत्। वीररसप्रधानकाव्यलेखनेन तथा निरन्तरं पुरातात्विक भ्रमणकारणेन तस्य चारण इति नाम सार्थकम् अभवत्। सः एकविशतिखण्डेषु उत्तराखण्डस्य इतिहासम् अलिखत्। स्वस्य सरूड़ानाम ग्रामे उत्तराखण्डविद्याभवने वृहद्पुरातत्वसंग्रहलयस्य पुस्तकालयस्य च स्थापनाम् अकरोत्।

सः अनेकानेकपत्रपत्रिकाणां सम्पादनमपि अकरोत्। उत्तराखण्डस्य साहित्य-संस्कृति सन्दर्भे अस्य लेखनी महर्शिवेदव्यासवत्आजीवनं प्रवह माना आसीत्। अतएव जनैः एवम् 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ उत्तराखड' अपि उच्यते। नवम्बरमासस्यैव 24 दिनाङ्के 1966 तमे खीष्टाब्दौ अयं दिवगतः। अधुना अपि तस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च जनानां कृते अनुकरणीयम् अस्ति।

गरिमा भट्ट

भारतरत्नम् गोविन्द बल्लभपन्तः

एकः नवयुकः अधिवक्ता श्वेतवेषः शिरसि
टोपिकां धृत्वा न्यायालयं प्रविष्टवान्।

आग्लन्यायाधीशः एतस्य नवयुवकंस्य गौरवमयं भारतीयं वेशं दृष्टवा तम आदिष्टवान् यत टोपिकां विना न्यायालयं प्रविशतु अन्यथा बर्हिगच्छतुः। सः नवयुवकः आंग्लन्यायाधीशस्य समक्षम् अवद्रत अहं न्यायालयं वक्तुं शक्नोमि परं स्वटोपिकाः न निष्कासयिष्यामि, यतो हि एषः मम आत्मगौरवस्य विषयः अस्ति।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तुनिरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्

पण्डितगोविन्दवल्लभपन्तस्य पारम्भिकी शिक्षा तस्य मातामहस्य श्रीबद्रीदतजोशीमहोदयस्य गृहे, स्थित्वा अभवत्। तस्य मातामहः कस्याचित आंग्लाधिकारिण प्रमुखः सहायिकाः आसीत्। पण्डितगोबिन्दबल्लभ पन्तस्य उच्चशिक्षा, शिक्षायाः प्रसिद्धे केन्द्रे प्रयागनगरे सम्पन्ना अभवत्। प्रयागनगरे सः श्रेष्ठराजनीतिज्ञानां सम्पर्के आगच्छत। ततः एवं तस्य राजनीतिक जीवनम् आगच्छत विधिशिक्षायाः अध्ययनान्ते सः अधिवक्तृरूपेण जीविकोपार्जनम् आरब्ध वानसमाजोद्धानाय विविधानि कार्याणि कुर्वन् सः जीवनस्य उच्चशिखरं प्राप्तवान। आरम्भकाले तस्य राजनैतिकं क्षेत्रम् उत्तराखण्डमेव आसीत् परं शनैः-शनैः तस्य व्यक्तित्वस्य प्रभावः राष्ट्रव्यापी अभवत्।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहिताः विरमन्ति मध्या
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चौत्तममनाः न परित्यजन्ति

पण्डितगोविन्दवल्लभपन्त स्वप्रतिभाबलेन भारतस्य संविधानपरिषदः सदस्यः संयुक्तप्रान्तस्य मुखमंत्री, भारतसर्वकारस्य गृहमंत्री अनेकासां समितीनां संघटनानां च सदस्य अपि भवतु पण्डितगोविन्दबल्लभ पन्तः देश भक्तः समाजसेवकः नेता, कुशलेः राजनीतिज्ञः च आसीत्। कृतज्ञराष्टेण 1957 तमे वर्षेः भारतसर्वकारस्यः सर्वोच्चेन नागरिक सम्मानेनः भारत-रत्नमित्युपाधिना अयं महापुरुषः सम्मानित्।

हे जिह्वे कटुकस्नेहे मधुरं कि न भाषसे।
मधुरं वद कल्याणि लोकोयं मधुर प्रिय॥

पण्डित जवाहरलाल नेहरू अस्य व्यक्तित्वसन्दर्भे उक्तवान् "पण्डित गोविन्दबल्लभपन्तः झंझावातेष अपि मार्गप्रदर्शकः दीपकंः आसीत" पं. गोविन्दबल्लभपन्तः 1961 तमे वर्षे मार्चमासस्य सप्तमे दिनाङ्के इह लोके परित्यज्य दिब जगाम परन्तु अस्य कीर्तिकौमुदी सदैव जनाना मार्गदर्शनः करिष्यति्।

गीता महरा

मानवजीवनस्यलक्ष्यम्

मानवजीवनं भगवता दत्तं वरदानम्। मनुष्य जीवनं दुर्लभूमस्ति। अतः दुर्लभूेण प्राप्तस्य अस्य जीवनस्य सदुप्रयोगः कर्तव्यः। प्रयोजनं विना जीवनं व्यर्थमस्ति। साधारण जनः प्रयोजनमुदिश्य जीवनं व्यापयति। पशवः तु लक्ष्यविहिनाः सन्ति पशुमानवयोः मध्ये अयं प्रमुखः भेदोअस्ति। यत मानव प्रयोजनम् उद्दिश्य कार्य कुर्वन्ति। तेषां पशवानां किमपि लक्ष्यं नास्ति।

मनुष्यः स्वभावतः सामजिको प्राणी अस्ति। सः विवेकशीलः अपि अस्ति तस्य कानिचित् निर्धारितानि लक्ष्याणि सन्ति। तस्यः एक परिवारः अस्ति परिवारस्य सुखं प्रमुखं लक्ष्यमस्ति निजपुत्राणाम् अध्ययनाय परिवारस्य कल्याणाय च सः अहर्निशं प्रयतते। वृद्ध जनानां सेवा अपि तस्य परम कर्तव्यं भवति।

मनुष्य जीवनस्य अन्यद् उद्देश्यम अस्ति समाजसेवा। यस्मिन समाजे स वसति तत्समाजस्य समुन्नतिः तस्य प्रमुखं लक्ष्यम्। यदि देशस्य प्रत्येकः नागरिक समाज सेवायां दृढनिश्चयो भवेत तर्हि समाजे सर्वैअपि सुखिनः भवन्ति। देशसेवा अपि मानव जीवनस्य उद्देश्यं खलु। अनेके देशभक्ता, देशरक्षणार्थ स्वप्राणान् अपि अत्यजन्। ते वीर पुरुषाः सर्वेषाम् आदर्शा सन्ति। अत मातृभूमि रक्षणं मानवजीवनस्य परमं लक्ष्यम्। सन्ति। अतः मातृ भूमि रक्षणं मानवजीवनस्य परमं लक्ष्यम्

स्वयं ज्ञानं गृहीत्वा, विधायाः प्रसार अपि मानवजीवनस्य लक्ष्यमस्ति अस्माकं देशे ग्रामीण विभागे बहवः जनाः निरक्षराः सन्ति। अतः ग्रामेषु विकासः न जातः। ग्रामे ग्रामे साक्षरता प्रसारः अति-आवश्यकः खलु

लक्ष्यविहीनानां जीवनं पशुवत भवति विद्यार्थिभिः तु कदापि लक्ष्यत्यागः न कर्तव्यः। यदि तेषां जीवने लक्ष्य भवति तर्हि ते सफलतां प्रान्पुवन्ति प्रयासेन तेषामुद्देश्यम अवश्यं पूर्ण भवति। यः स्वजीवन परजीवन च सुखसमृद्धियितु प्रयतते तस्य लक्ष्याणि सफलानि भवन्ति। ये समाजहितार्थ देशहितार्थ कार्याणि कुर्वन्ति् ते अवश्यं यशस्विनः भवन्ति।

प्रिया भट्ट
संकलन

विद्यार्थी जीवनस्य

एतत् कथ्यते मनुष्यः यावज्जीवं विद्यार्थी अस्ति। सत्यं खलु इदं वचनम्। यदि मनुष्यः विद्याम् अर्जितु तत्परः भवति तर्हि सः जीवने साफल्यं सुखं च प्राप्नोति। वस्तुतः प्रत्येक मनुष्यः पञ्चविंशतिवर्षः पर्यन्तं विद्यार्जनं करोति। विद्यार्थीजीवनस्य प्रारंभः शिशुविद्यालयात् भवति। ततः विद्यालयात् तत्पश्चात् च महाविद्यालयात् शिक्षा प्राप्नोति। प्राचीन काले छात्राः गुरूकुलं गच्छन्ति स्म तत्रैव ब्रह्मचर्य पालयन् विद्याप्राप्त कुर्वन्ति स्म। अधुना शिक्षानीतिः परिवति ंया। अधुना कतिपयाः छात्राः प्राथमिकिं शिक्षां गृहित्वा उच्चशिक्षार्थ परदेशगमनं कुर्वन्ति। विश्वविद्यालयेषु पठन छात्रावासेषु व सन्ति अधुना विद्यार्थिनां जीवनस्तर उच्चतरः अभवत् विद्यार्थीजीवने यादृशी शिक्षां प्राप्यते यान् संस्कारान् लभ्झते तेषाम् उपयोगः समस्तजीवने भवति। अतः विद्यार्थिनः प्रथमं कर्तव्य यत् विद्यापठने कदापि आलस्य भवति। विद्यार्थी जीवनं सदा अनुशासनपूर्ण भवेत् यदि छात्रः अनुशासितः भवति तदा तस्मे किमपि दुष्करं न भवति। छात्रेण सदैव प्रातः सूर्योदयात् पूर्व उतिष्ठनीयम् प्रात:काले कृतं सरण चिरकालं तिष्ठति। छात्रस्य पठने रुचिः स्वाभावि की भवेत् यदि प्रसननमनसा पठति तार्हि परीक्षायां श्रेष्ठान् अङ्कान् आप्नोति।

विद्यार्थीजीवने पठनेन सह क्रीडनमपि आवश्यकम्। शुद्धवातावरणे क्रीडनेनः शरीरं स्वस्थं भवति तथा मनः अपि पठने एकाग्रं भवति। यदि विद्यार्थी दिनचर्यानुसारं स्वकार्य समये करोति तार्हि सः जीवने साफल्यं प्राप्नोति।

विद्यार्थिन्ः देशस्य भावी नागरिकाः सन्ति आदर्शः छात्रः देशस्य आदर्शः नागरिकः खलु।

कु. चन्द्रा
संकलन

संस्कृत सुभाषित

कलहान्तनि हर्म्याणि कुवाक्यान च सौदम
कुराजान्तानि राष्ट्राणि कुकर्मान्तम् यशो नृणाम

अर्थात् झगड़ों से परिवार टूट जाते है गलत शब्द प्रयोग करने से दोस्त टूटते हैं। बुरे शासकों के कारण राष्ट्र का नाश होता है बुरे काम करने से यश दूर भागता है

दुर्लभ त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्व महापुरुष संश्रयः।।

अर्थात् मनुष्य जन्म, मुक्ति की इच्छा तथा महापुरुषों का सहवास यह तीन चीजें परमेश्वर की कृपा पर निर्भर रहते है।

सुखार्थी त्यजते विद्या विद्यार्थी त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।।

अर्थात् जो व्यक्ति सुख के पीछे भागता है उसे ज्ञान नहीं मिलेगा। तथा जिसे ज्ञान प्राप्त करना है वह व्यक्ति सुख का त्याग करता है। सुख के पीछे भागने वाले को विद्या कैसे प्राप्त होगी तथा जिसको विद्या प्राप्त करनी है उसे सुख कैसे मिलेगा।

कविता चौहान

आतंकवाद

आतंकवादः विश्वस्य गुरुतमा समस्या वर्तते। संसारस्य प्रत्येकं देशः अनेन येन-केन प्रकारेण पीडीतः अस्ति। आतंकवादः स्वविनाश लीलया विश्वं ग्रसितु तत्परोऽस्ति। अनेन विश्वस्य अनेकानि क्षेत्राणि रक्त लिप्तानि जातानि। अनेन अनेके निर्दोषः जनाः प्राणान् अत्यजन महिलाः विधवाः जाताः बालाश्च अनाथाः अभवन्। आतंवादे ते एवं जनाः सम्मिलिता भवन्ति ये स्वस्वार्थ पूर्ति कर्तुम् इच्छिन्ति संसारे च अशान्तेः वातावरणं स्थापयितु कामयन्ते। शान्तीच्छुकैः देशैः आतंकवादस्य विनाशाय मिलित्वा प्रयत्नं कर्त्तव्यम् अन्यथा एषा समस्या सुरसामुखमिव अनुदिनं वौर्द्धप्यति एवं।

विनीता भट्ट

व्यायामः

भ्रमण धावन्-क्रीड,नादिभिः शरीरम्, श्रान्तकरणन् व्यायाम कथ्यते। व्यायामः नित्यं करणीयः भवति। अस्य नित्यानुष्ठानेन गात्राणि पुष्ठानि भवन्ति। शरीरे द्रुतं रक्त सञ्चारः भवति। प्रस्वेदैः शरीरात् आमयं विषं चनिर्गच्छति। अनने पावनकर्म अपि सम्यक भवति। व्यवहितः व्यायामः यथैव अस्वास्थ्यप्रदः भवति तथैव अव्यवहित व्यायामः स्वास्थ्यकरःभवति स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थं मस्तिकं भवति। स्वस्थः जनः सुयोग्यः नागरिकः भवति। स्वस्थः जनः सुयोग्यः नागरिकः भवति। देश सेवां स्वस्थे एव नागरिकाः कुर्वन्ति। न चास्ति सदृशं तेनकिं चित्स्थौल्यापकर्षणम्। आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुप जायते। शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं
आरोग्यं परम भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।।

लीला

परोपकारः

परेषां उपकाराय कृतम् कर्म उपकारः कथयते। अस्मिन् जगति सर्वेजनाः स्वायं सुखं वाञ्छन्ति। अस्मिन् एवं जगति एव विधाः अपि जनाः सन्ति ये आत्मनः अकल्याणं कृत्वांऽपि परेषां कल्याणं कुर्वन्ति। ते एवम् परोपकारिणः सन्ति। परोपकारः दैव भावः अस्ति।

अस्य भावस्य उदयेन एव समाजस्य देशस्य च प्रग. तिः भवति। अचेतनाः परोपकर्मणि रताः दृश्यन्ते। मेघाः परोपकाराय जलं वहन्ति। नद्यः अपि स्वीय ं जलं न स्वयं पिबन्ति। वृक्षाः परोपकाराय एव फलानि दधति एवं हि सज्जनाः परोपकाराय एव जीवनम् धारयन्ति।

कुमारी चंद्रा

हिमालय पर संस्कृत में लेख

हिमालयस्य नाम्नि एव अस्य अर्थः विघते। अपं हिमस्य आलयः स्थानम् अस्ति अतः अयम हिमालयः कथ्यते हिमालयः भारतस्य उत्तरस्यां दिशि वर्तते। अयं पर्वतः अतीव विशालः अत्युन्नतः चास्ति। हिमालयः संसारे सर्वेभ्यः पर्वतेभ्यः यः उन्नतोऽस्ति अतः अयम् पर्वतराजोऽपि कथ्यते। अस्य अनेकोनि शिखराणि आकाशं स्पृशान्ति। हिमालयः भारतस्य रक्षकः अस्ति अयं भारतस्य प्रहरी इव उन्त दिशायां स्थितः रिपुभ्यः। भारतं रक्षति।

हिमालयं समारभ्य यावत इंद ु सरोवरम्।
तं देवनिर्मित ं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

हिन्दी अनुवादः हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है "हिन्दुस्तान" यही वह देश हे जहाँ ईश्वर समय-समय पर

जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते हैं।

हिमालय पर्वतात् अनेकाः नघः प्रवहन्ति। यथा गंगा, यमुना विपाशा, चन्द्रभागा इरावती प्रभृतयः एता नघः भारतस्यं भूस ंचने महत्यः उपयोगिन्यः सन्ति। भारतः कृषिप्रधान देशः अस्ति अतः नदीभिः सिंचित इय ं भूमिः शस्यश्यामला अन्नप्रदा च भवति। हिमालयात् वयं बहविघं काष्ठं नानाविधानि औषधानि च लभामहे अनेकानि बहुमूल्य रत्नानि अपि हिमालयात् एवं प्रामुमः। नूनं हिमालयः भारताय अतीव उपयोगी पर्वतः अस्ति। अस्मिन वर्पते अनेकानि। दर्शनीयानि तीर्थस्थानानि अपि सन्ति।

अस्त्युततरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयों नाम नगाधि राजः। पूर्वापरौ तोयानिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः

हिन्दी अनुवादः भारत देश के उत्तर दिशा में एक वर्तत है हिमालय, जो पर्वतों का राजा है यह पर्वत पूर्व और पश्चिम दोनों को फैला हुआ है। यह पर्वत पूर्व और पश्चिम के दोनों समुद्रों में घुसा हुआ है। यह दोनों समुद्रों में घुसकर पृथ्वी की गहराई को माप रहा है।

हिमालयः एकः पर्वतः अस्तिः। अयं पर्वतेषु महान् पर्वतः अस्ति। अत एव अयंपर्वतराज उच्यते। अस्मिन् पर्वते हिमालस्य अधिकता अस्ति। तेन अस्य हिमालय इति नाम अस्ति। अयं पर्वतः उच्चतमानि सन्ति अस्य अनेकोनि शिखराणि अतीव उच्चतमानि सन्ति अस्य गौरीशंकरनामकं शिखरं संसारस्य सर्वेषु शिखरेषु। उच्चतम मन्यते। अयं पर्वतः भारतस्य उत्तरर्दिशायाः महाबलवान् प्रहरी अस्ति अत्र नानाविधा वनतपस्यः विविधानि फलानि तथा नानाप्रकारणि खाद्यवस्तूनि च उपलभ्यते सन्ति।

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम् एको हि दोषों गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः ॥

हिन्दी अनुवादः हिमालय पर हमेशा बर्फ रहती है फिर भी हिमालय की खूबसूरती को कोई नष्ट नहीं पहुंचाती है इस पर एक उदाहरण दिया गया है कि बहुत सारे गुण होने पर एक अवगुण धुप जाता है, जैसे कि चंद्रमा की रोशनी में उसका खुद का धब्बा।

विमला भट्ट

अर्थविज्ञानम्

अर्थविज्ञानस्य स्वरूपम्शब्दार्थविषयक सर्वाङगीणं विवेचन अर्थ विज्ञानेन अवबोध्यते शब्द- अर्थयोर्मध्ये कः सम्बन्धः अर्थः कतिविधः अर्थस्य कतिविधो विकासः अर्थविकासस्य कानि कारणान्ति इत्यादयः विषयाः अर्थविज्ञाने विविच्यन्ते शब्दार्थयोः शब्दविदः अभेद सम्बन्ध स्वीकुर्वन्ति सर्वो शब्दाः सार्थका भवन्ति मानवाः तान्-तान् अर्थावोददिश्य तान् बोधयितु तेषा-तेषा शब्दानां प्रयोग कुर्वन्ति निरर्थकाना शब्दानामुच्चारणकारयिता विक्षिप्त अथवा मुर्ख इत्यभिधीयते।

शुश्रुषा श्रावणं चैव ग्रहणं धारणां तथा उहाँ पाहोऽर्थविज्ञानं तत्वज्ञान च धीगुणाः शब्दज्ञानार्थ विज्ञानशब्दौ शास्त्रे तथा यजुषामर्थविज्ञान नाकर्मज्ञस्य सिध्यति मौः शब्दस्य प्रयोगः गोत्वावाच्छिन्नायाः व्यक्ते बोध नाय एव क्रियते इव्यं ज्ञायते यत् यदि शब्दाः शरीरभूताः सन्ति। तदा अर्थाः तेषामात्मभूताः येन प्रकारेणात्यानं विना शरीर नाश्यति तेनैव प्रकारेण शब्दानामपि सार्थकता अथैश्वे भवति।

(1) वैदिक-संस्कृतसाहित्पम्

(2) लौकिक-संस्कृतसाहित्पम् इति भागदयस्य ज्ञानम् आवश्यकम् वैदिकसंस्कृतस्य स्वरूप वेदेषु तस्मिन् काले रचितेषु अन्येषु ग्रन्थेषु चोपलभ्यते। लौकिक संस्कृत प्रायः पाणिनीयव्याकरण-नियमानुसार भवति लौकिकसंस्कृते काव्यानि पुराणनि, धर्मशास्त्रम् अलंकारग्रन्थाः कोशाः गणित ज्योतिषम् इत्यादयोऽनेके विषयाः उपलभ्यन्ते। प्राचीनकाले संस्कृत न केवल साहित्यिकभाषा अपितु साधारणजनाना व्यावहारिकी भाषाय्यासीत्, धर्यस्य संरक्षणेन प्रोत्साहनेन च संस्कृत देवभाषा पदमलभत। धृर्मार्थकाममोक्षाणाम् उपदेशसमवितम्।

पूर्ववृत्तं कथायुक्तम् इतिहासं प्रचक्षते॥

राष्ट्र निमाणे भारतीयभाषायाः संरक्षणार्थ संस्कृतसा. हित्यस्य ज्ञानम् आवश्यकम्। सर्वासां भारतीय भाषाणां कृते संस्कृतभाषा जननीति। प्रादेशिक भाषायाः संरक्षणार्थ वृतयर्थ संकृत भाषाज्ञानमावश्यकम् 80-90% पदानि संस्कृतभाषासम्बदासनि एव अतः सर्वाः भारतीय-प्रादेशिक

आर्यभाषाः संस्कृतभाषया, समुत्पन्ना इति निश्चाप्रचं वक्यु शक्यते। अतः संस्कृतभाषायां सार्वभौमिकता वर्त्तते। मानवपरिवारवत भाषापरिवारे अपि परिवारान्तर्गत भाषाणां शब्दावलि' पदरचना सम्बन्धिसमादृश्य दृश्यते भारतीय संविधाने पञ्चविंशत-अध्याये संस्कृत-हिन्दी-मैथिली असमिपा बंगला-बोड़ो-डोगरी-गुजराती-कश्मीरी-कोकणी मणिपुरी-मराठी-नेपाल-उडिया-पञ्जाबी-संथाली सिन्धी-उर्दू इति च अष्टाश्य भाषाः भारोपीय-परिवारान्तर्गतासु मान्याः सन्ति। संस्कृत सर्वाया इण्डोरोपियन-भाषाणां जननी अस्ति एतानि सर्वाणि संस्कृत-साहित्यमवलमब्य एवं सम्यक् ज्ञातु शक्यते।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणा निट्रया कलहेन च॥

(हितोपदेश)

हिमानी भट्ट

परोपकारः

परेषाम् उपकारः परोपकारः इति अभिधीयते समाने मानवः परस्य हितसाधनार्थम् यत् किंचिद वितरति, मनसा वाचा वा प्रार्थम् समपादयति, परेषाम् हितै वाडनुतिष्ठति, तत् सर्वम परोपकारो गष्यते। संस्कृत साहित्ये अनेकाः स ूक्तयः वर्तन्ते।

"पिबति नद्यः स्वयमेवच नाभ्यः
स्वय ं न खादति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयता"

अस्मिन संसारे परोपकारस्य अनुपमा महिमा अस्ति। अनेन गुणेन नरस्य प्रतिष्ण वर्तते स नरः आत्म संतोष लभते। शरीरस्य सोभा चंदन लेपनेन न, अपितु परोपकारेण भवति।

"श्रोतं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पणिर्न न कंकडेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां
परोपकारैन तु चन्दनेन॥"

वर्य सर्वत्र पश्यामः यत् प्रकृति अपि अस्य परोपकारस्य एवं शिक्षा प्रददाति। भलभारैण समन्विताः वृक्षाः स्वर्थाय न फलन्ति, अपितु तेषाम् फलानि अन्येषां कृते एव जायन्ते।

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः
परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकाराय इदं शरीरम्॥"

सज्जनानाम् वसुधैव कुटुम्बकम् इति मन्यन्ते अतः एव ते सर्वान जीवान् समान दृष्टया पश्यन्ति। ते मनसा वाचा कर्मणा दरिदाणाम् दुखितानाम् च दुःखा अपहरणं सम्पादधन्ति समाजे राष्ट्रे च परोपकारस्य भावना अत्यपयोगी अस्ति। अस्य गुणस्य ग्रहणेन एव नरे समाज सेवाया भावना, देशप्रेम भावना, देशभक्ति भावना, प्रदुःखकतरता, सहानुभूति गुणस्य च सन्ता भवति। अस्य भावना परिपूर्णः जनाः दीनैभ्यो दानं ददाति, निर्धनैभ्यो धनं, वस्त्रहीनैभ्यो वस्त्रं, पिपासितेभ्यों जलं बुभुक्षितेभ्योऽन्नम्, अशिक्षितेभ्यों शिक्षाम्। ते स्वयं दुखम् न गणयन्ति, परं परोपकारेण एव प्रसन्ना भवति। आत्मार्थम् तु लोके प्रत्येको नरो, जीवति, किन्ततस्यैव जीवनं श्लाघं यः परार्थम् जीवति।

वर्तमाने कालेऽपि भारतवर्षे परोपकारस्य सुप्रभितानि, निदर्शनानि प्राप्नुवन्ति अनेन एव जगतः अभ्युदयो भवति। शान्तिः सुखं च वर्घते। एतएव भगवतः वेदव्यासस्य विषये महाभारते कभ्यते यत्

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनदयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥"

कविता चौहान संकलन

Importance of Education for Girl Child...

Introduction

Education is a fundamental right for every-one, regardless of gender. Denying Education to girl not only affects their future but also hinders the progress of an entire nation. In today's era importance of girl education is more significant than ever.

Importance of Girl Child Education

Empowerment and Independence - An educated girl becomes independent and aware of her rights she can make her own decisions and stand against any injustice.

Nation's Progress: Educated girls contribute to society, streng thening the economy and paving the way for national development.

Health and Family Welfare: An educated mother ensures a healthy lifestyle for her children leading to a healthier and more prosperous society.

Gender Equality: Education helps bridge the gap between boys and girls promoting equality and justice in society.

Prevention of Exploitation and Child Marriage: Educated girl can resist social evils like child marriage and dowry, securing a dignified and safe future for them selves.

Conclusion

Educating a girl child is not just about personal growth but also about the development of society and the nation. We must ensure equal opportunities for every girlso that she can reach her full potential and contribute to a better future.

Nisha

II Sem

Importance of Education for Girl Child

G. D. C. Amori (Champawat)

Swami Vivekananda

Swami Vivekananda was born in Calcutta (Kalkata) on January 12th 1863. His Real name was Narendranath Dutta. During his childhood days he was an intellectual keoal with good grasping power. After his schooling he studud B.A. and Law.

He was the disciple of Sri Ramakrishna Paramahansa. His Guru taught him that Good lives in every human being. "By Suruing mankind.

Serve God. He established "Ramakrishna Mission. Which renders the Socialservice to the poor and inneed. He was latter named as "Swami Vivedkananda" When he become a mauk. He participated in the world Religion parliament held in chicago. US Henu number of Americans and Indians become his disciples who joined Ramakrishna mission.

1. He passed away in 1902.
   - ❒ His famous quote is" Arise. Awake and stop not till the god is Reaches.
   - ❒ His birthday is celebrated as "National youth day" on every year of January 12th. 1. Swami Vivekananda was a great leader and philosopher.
2. He was born on 12 January 1863 in Kolkata.
3. His mother's name was Bhuvaneshvari Deve and his father's name was Vishwanath Datta. 4. His childhood name was Narendranath Datta.
5. He was Figure with high thinking and Simple living.
6. He is best known for his famous 1893 speech where he Introduced hinduism to western world in chicago.
7. He was the founder of Rama Krishna mission and Rama Krishna math in Kalkata. 8. Swami vivekananda's teachings not only motivated the youth but also the whole world. 9. Swami vivekananda breathed his last on 4 July, 1902.

Deeksha

राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में स्थापना वर्ष से ही राजनीति विज्ञान विषय का अध्ययन संचालित है वर्तमान में विभाग में केवल एक पद सृजित है जिसके सापेक्ष डॉ. संजय कुमार (विभागाध्यक्ष) कार्यरत है। महाविद्यालय में अभी स्नातक स्तर की कक्षा में संचालित हैं जबकि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक एवं परास्नातक में राजनीति विज्ञान पढ़ाया जाता है विदित है कि इस विषय की लोकप्रियता व वर्तमान की प्रासांगिकता को देखते हुए सर्वाधिक विद्यार्थियों द्वारा हम विषय का चुनाव किया जाता है। विषय के अन्तर्गत, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था से भारतीय व विश्व के प्रमुख संविधान, छह भारतीय पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तक, विश्व की प्रमुख विचारधारायें, लोक प्रशासन व उसके विभिन्न आयाम, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, भारत व विश्व के प्रमुख व ज्वलन्त मुद्दे, लोकतान्त्रिक प्रणाली जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को विषय के अन्तर्गत सरलता व प्रेरक प्रसंगों के साथ अध्ययन कराया जाता हैं। वर्तमान में डॉ. संजय कुमार के 06 शोध पत्र व 01 संकलित पुस्तक जिसका शीर्षक "Local Institution and Environmental Governeine in Himalaya" प्रकाशित हो चुकी है, तथा इनके निर्देशन में 02 विधार्थी शोध कर रहे हैं।

राजनीति विज्ञान में पिछले पाँच वर्षों के सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी

वर्ष	I	II	III
019-20	सुवर्णा	हमांशी भट्ट	रेनू चौहान
2021-22	रेखा भट्ट	शान्ति पाण्डेय	निर्मला
2021-22	अनीता	नेहा चौहान	नीमा भट्ट
2022-23	मनीषा	जानकी	कविता बोहरा
2023-24	किरण भट्ट	मंजू बोहरा विनीता	दीपा भट्ट

महाविद्यालय में स्थापना वर्ष के एक साल बाद दिसम्बर 2017 में स्वयं परीक्षा केंद्र स्थापित किया गया तब से लेकर अद्यतन कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सेमेस्टर प्रणाली तथा वार्षिक प्रणाली की परीक्षायें शान्तिपूर्ण ढंग से होती रही है। वर्तमान में महाविद्यालय सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा से सम्बद्ध है। बी.ए. प्रथम सेमेस्टर से लेकर षष्टम सेमेस्टर की परीक्षायें संचालित हो रही है। वर्षवार श्रेष्ठतम कार्य प्राप्त विद्यार्थी निम्नलिखित है:-

वर्ष-2018-19			
	नीषा चौहान	पुत्री श्री राम सिंह चौहान	2020/3000-73.32
	किरन	पुत्री श्री रघुवर सिंह	1949/3000-70.21
	जेन्द्र भट्ट	पुत्र श्री लीलाधर भट्ट	1922/3000-
वर्ष- 2019-20			
1.	हिमांशी	पुत्री श्री खुशाल सिंह महर	2023/3000
2.	रेनू चौहान	पुत्री श्री श्याम सिंह	1919/3000
3	सुमन	पुत्री श्री शंकर राम	1939/3000
वर्ष-2020-21			
1.	लीला	पुत्री श्री केदार दत्त	2040/3000
2.	रेखा भट्ट	पुत्री श्री तिलोमनी	2026/3000
3.	रविन्द्र कुमार	पुत्र श्री भुवन राम	2003/3000
वर्ष-2021-22			
1.	प्रिया भट्ट	पुत्री श्री जोगा दत्त	886/1500
2.	नेहा चौहान	पुत्री श्री विजय सिंह	865/1500
3.	अनीता	पुत्री श्री सुनील सिंह	855/1500
वर्ष-2022-23			
1.	किरन भट्ट	पुत्री श्री केशव दत्त भट्ट	2021/2900-73.14
2.	मन्जू बोहरा	पुत्री श्री दीवान सिंह बोहरा	2103/2900-72.52
3.	दीपा भट्ट	पुत्री श्री खुशाल दत्त भट्ट	2098/2900-72.34

विभागीय परिषद् गठन
विभाग- राजनीति विज्ञान

सन्	पदनाम	विद्यार्थी का नाम	कक्षा
2022-23	अध्यक्ष	किरन भट्ट	बी.ए. VI सेमेस्टर
	उपाध्यक्ष	मंजू भट्ट	बी.ए. VI सेमेस्टर
	सचिव	संगीता	बी.ए. IV सेमेस्टर
	कोषाध्यक्ष	मीना भट्ट	बी.ए. IV सेमेस्टर
	कक्षा प्रतिनिधि	1. गीता भट्ट	बी.ए. I सेमेस्टर
		2. निर्मला बिष्ट	बी.ए. II सेमेस्टर
		3. चन्द्रा बिष्ट	बी.ए. III सेमेस्टर
2023-24	अध्यक्ष	मन्जूला	बी.ए. V सेमेस्टर

सन्	पदनाम	विद्यार्थी का नाम	कक्षा
	उपाध्यक्ष	नीमा भट्ट	बी.ए. V सेमेस्टर
	सचिव	श्यामा बिष्ट	बी.ए. V सेमेस्टर
	कोषाध्यक्ष	मीना	बी.ए. III सेमेस्टर
	कक्षा प्रतिनिधि	1. इन्द्र बिष्ट	बी.ए. I सेमेस्टर
		2. रूकमणी	बी.ए. II सेमेस्टर
		3. सुनीता	बी.ए. III सेमेस्टर

सन्	पदनाम	विद्यार्थी का नाम	कक्षा
2024-25	अध्यक्ष	चांदनी बोहरा	बी.ए. पंचम सेमेस्टर
	उपाध्यक्ष	हंसा भट्ट	बी.ए. पंचम सेमेस्टर
	सचिव	रश्मि भट्ट	बी.ए. पंचम सेमेस्टर
	उप सचिव	अंजली	बी.ए. तृतीय सेमेस्टर
	कक्षा प्रतिनिधि	रेखा जोशी	बी.ए. पंचम सेमेस्टर

विभागीय गतिविधियाँ (विभाग- राजनीति विज्ञान)

सन्	आयोजित कार्यक्रम	दिनांक	
2019-20			
2020-21	क्विज प्रतियोगिता	17/03/2021	
2021-22			
2022-23	Quiz Competition	13/03/2022	(1) अंजली (प्रथम) (2) दीक्षा (द्वितीय) (3) नीमा भट्ट (तृतीय)
	Essay Competition	17/03/2023	(1) अंजली (प्रथम) (2) दीक्षा (द्वितीय) (3) नीमा भट्ट (तृतीय)
	Quiz Competition	16/11/2023	(1) चारू प्रखण्ड पाल (प्रथम) (2) ओम प्रकाश जोगी (द्वितीय) (3) संस्मा (तृतीय)
2023-24	Essay Competition	24/02/2024	(1) निर्मला बिष्ट IV सेमेस्टर (2) हंसा भट्ट IV सेमेस्टर (3) निर्मता II सेमेस्टर (1) नीमा भट्ट IV सेमेस्टर (2) निर्भता II सेम (3) बिमता भट्ट II सेमेस्टर
2024-25	Quiz Competition	27/02/2025	(1) हंसा भट्ट IV सेमेस्टर (2) रशिम भट्ट II सेमेस्टर (3) अंजली - IV सेमेस्टर

धूम्रपान निषेध समिति

महाविद्यालय में स्थापना वर्ष से ही घूम्रपान निषेध। एंटी ड्रग सेल की समिति कार्यरत है विद्यार्थियों को पुलिस प्रशासन, महाविद्यालय स्तर पर सदैव विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन से नशा मुक्ति, धूम्रपान निषेध तम्बाकू निषेध जैसे समस्याओं से दूर रहने एवं समाज को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है, निबन्ध प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, रैली निकाल कर समस्त विद्यार्थियों के साथ ही आस-पास के गांव-बाजार स्थानीय लोगों के सहयोग से क्षेत्र को नशामुक्त करने का प्रयास जारी है। विभिन्न प्रकार के नुक्कड़ नाटक भाषण, तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजन किया जाता रहा है। महाविद्यालय में संयुक्त निदेशक क्षेत्रीय कार्यक्रम देहरादून के आदेश क्रम से विद्यार्थियों को शपथ भी करवाया गया है। महाविद्यालय द्वारा डॉ. संजय कुमार के निर्देशन में ग्राम सभा-भुमटा को गोद लिया गया है। जहाँ नशा

मुक्ति स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी प्रौढ़ शिक्षा जैसे जागरूकता अभियान चलाया गया।

डॉ. संजय कुमार एंटी ड्रग सेल (प्रभारी)

Department of English the Foundation

- **A Brief Introduction:-** Department of English is running in the Institution from the year 2016, The Foundation year of the Institution. The departments, Primary goal is to enhance students reading, writing and speaking skills. It encourages scholars to engage with Contemporary issues through discussions and other smart learning methods of teaching-learning process
- **The Faculty:** The department is growing under the supervision of Dr. Ranjana Singh, Assistant Profession. since 2019.
- **Facilitation of Students:** The students of the deportment Continues good performance in academic and other activities held in The College. our students are thereby facilitated by the departmental Council every year, who got positions in multiple Competitions organized in the department.
- **Departmental Library:-** The department do not have any seprate library but the Common College library is secured a number of books according to the syllabus Prescribed by the University.
- **The Language Lab: -** The department is equipped with a full facilitated smart Class, commonly knowing the language lab. It is facilitated with one smart board, Computer system and other facilities including different software's to enhance the active and interactive teaching-learning process students. among all the colleges students
- **The Remedial Classes:** The Department is organizing remedial Classes in the departmental as well as other students of the Collage. 20 that they Could Iearn the basics of English language, and to improve their speaking skills in the language. The classes are being organized in the department since the year 2019.

क्रीड़ा विभाग - राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी

संक्षिप्त परिचय:

महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास एवं खेल प्रतिभा के दृष्टिगत प्राचार्य एवं क्रीड़ा प्रभारी के दिशा-निर्देशन में क्रीड़ा-विभाग निरन्तर सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। महाविद्यालय में प्रति वर्ष दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया जाता है। जिस हेतु विद्यार्थी निरन्तर अभ्यास भी करते हैं। वार्षिक क्रीड़ा समारोह में दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, भाला क्षेपण, गोला क्षेपण, चक्का क्षेपण आदि का आयोजन मुख्य रूप से किया जाता है। अन्तर महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं, क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता आदि में भी महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया है।

क्रीड़ा प्रभारी एवं कार्यकाल:

1.	डॉ संजय कुमार प्रोफेसर राजनीति विज्ञान	2017 से 2021 तक
2.	श्रीमती पुष्पा प्रोफेसर- इतिहास	2021से - 2024 तक
3.	डॉ. रंजना सिंह प्रोफेसर अंग्रेजी	2024 से अद्यतन

वार्षिक क्रीड़ा समारोह के चैंपियन विद्यार्थी

क्रम सं.	विद्यार्थी का नाम	वर्ग	सत्र
1.	नीरज कठायत	बालक वर्ग	2017-18
	विमला भट्ट	बालिका वर्ग	2017-18
2.	विपिन भट्ट	बालक वर्ग	2018-19
	कमला चौहान	बालिका वर्ग	2018-19
3.	मनीष कुमार	बालक वर्ग	2019-20
	निर्मला	बालिका वर्ग	2019-20
4.	मुकेश सिंह	बालक वर्ग	2020-21
	निर्मला	बालिका वर्ग	2020-21
5.	सचिन सिंह	बालक वर्ग	2021-22
	कमला चौहान	बालिका वर्ग	2021-22
6.	पवन सिंह	बालक वर्ग	2022-23
	निकिता बोहरा	बालिका वर्ग	2022-23
7.	आशीष सिंह चौहान	बालक वर्ग	2023-24
	निकिता बोहरा	बालिका वर्ग	2023-24

संक्षिप्त प्रगति आख्या-2017-2025

अन्तर महाविद्यालयी/क्रास कंट्री आदि में भी महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया है।

- वर्ष 2021-22 में एथलेटिक्स (महिला-पुरुष), राजकीय महाविद्यालय टनकपुर में आयोजित अन्तर महाविद्यालयी प्रतियोगिता में 04 विधार्थियों कविता चौहान, पुष्पा चौहान (महिला वर्ग), एवं सचिन सिंह रोशन सिंह (पुरुष वर्ग) ने प्रतिभाग करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
- वर्ष 2023-24 में अन्तर महाविद्यालयी पुरुष हाँकी प्रतियोगिता में मोहित सिंह बोहरा एवं बॉक्सिंग में अनुज सिंह चौहान द्वारा प्रतिभाग किया गया। अनुज सिंह चौहन द्वारा बॉक्सिंग (पुरुष वर्ग) 54-57 भार वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया गया।
- उक्त विद्यार्थी का चयन बॉक्सिंग (पु.) नॉर्थ ईस्ट इंटर यूनिवर्सीटी में प्रतिभाग करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।
- क्रॉस कंट्री (पुरुष) प्रतियोगिता में आशीष सिंह चौहान द्वारा प्रतिभाग करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।पूर्व में संसाधनों की कमी एवं वर्तमान में प्राकृतिक आपदा के चलते महाविद्यालय को खेल मैदान की क्षति का सामना करना पड़ा है। परंतु फिर भी प्राचार्य एवं समस्त महाविद्यालय परिवार निस्तर जनहित में क्रीड़ा के अनुसार उचित प्रयासों हेतु प्रतिबद्ध है।

इतिहास विभाग : एक झलक

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में इतिहास विभाग 2016 से संचालित है, विभाग में अभी तक प्रमोद जोशी, प्राध्यापक रवि कुमार व श्री अवधेश कुमार, अपनी सेवा दे चुके हैं। वर्तमान में श्रीमती पुष्पा इतिहास विभागाध्यक्ष हैं। इनकी योग्यताएँ एम.ए., यू.जी.सी.नेट, जे.आर.एफ. हैं, पी.एच.डी. अध्ययन कार्य जारी है। बी.ए. इतिहास में भारत कास, मध्यकालीन इतिहास आधुनिक इतिहास के साथ-साथ विश्व का इतिहास व उत्तराखण्ड का इतिहास विषय का अध्ययनः अध्यापन कार्य किया जाता है।

विषय

इतिहास छात्रों को उनके नैतिक और सामाजिक मूल्य स्थापित करने में मदद करता है। साथ ही अपने क्षेत्र व देश की विरासत व परम्परा के बारे में ज्ञान प्रात करने के साथ ही दूसरे देश के इतिहास, विरासत व परम्परा को समझने में भी मदद प्रदान करता है, ताकि हम विश्व में विद्यमान विभिन्न प्रकार की विविधताओं के बारे में जान सकें।

विभागीय गतिविधियाँ

इतिहास विभाग के अन्तर्गत समय-समय पर अनेक विभागीय गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जैसे क्विज प्रतियोगिता भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता। सत्र 2022-23 में विभागीय परिषद के तहत किरण भट्ट अध्यक्ष, भावना राणा उपाध्यक्ष नीमा नहर-सचिव पुष्मिता बोहरा कोषाध्यक्ष पद हेतु चयनित हुई। इस सत्र में आयोजित क्विज प्रतियोगिता में भावना राणा ने प्रथम, ओमप्रकाश ने द्वितीय तथा दीक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

साथ ही सत्र 2020-21 से 2023-24 तक आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत इतिहास विभाग के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम गतिविधियाँ आयोजित की गई जिसमें प्रमुख रूप से-रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता सांस्कृतिक कार्यक्रम, निबन्ध, भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। सत्र 2018-19 से 2023-24 तक इतिहास विभाग के निम्नलिखित विद्यार्थी टॉपर रहे

1. किरन जोशी - 2018-19
2. हिमांशु बिष्ट - 2019-20
3. सुनीता जोशी - 2020-21
4. संजय -2021-22
5. मनीषा -2022-23
6. भावना राणा - 2023-24

सत्र 2024-25 में इतिहास विभागीय परिषद के तहत चांदनी बोहरा अध्यक्ष, ऐसा भट्ट उपाध्यक्ष, पूजा बोहरा सचित व सपना कठायत कोषाध्यक्ष चुनी गई। और इस सत्र में आयोजित विभागीय निबंध प्रतियोगिता में चांदनी बोहरा ने प्रथम, हंसा भट्ट ने द्वितीय, जबकि रश्मि भट्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि निबन्ध प्रतियोगिता में चांदनी बोहरा ने प्रथम, विमला भट्ट ने द्वितीय तथा तुलसी भट्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रत्येक सत्र में विभागीय परिषद के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अवार्ड व सर्टिफिकेट प्रदान किए जाते हैं।

शिक्षा शास्त्र विभाग (आख्या)

महाविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग सन् 2016 से स्थापित है। वर्तमान में श्री संजय कुमार गंग. वार (असि. प्रोफेसर) विभाग प्रभारी के रूप में कार्य. रत हैं। पूर्व में डॉ. श्याम वचन (एसो. प्रोफेसर) श्री रवि कुमार जोशी (नितान्त अस्थाई) अपनी गरिमामयी भूमिका का निर्वाह कर चुके हैं। शिक्षाशास्त्र विभाग में समय-सारिणी के अनुसार नियमित कक्षाएँ संचालित होती हैं एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता है। प्रत्येक सत्र में विभागीय परिषद् का गठन किया जाता है, जिसके अन्तर्गत प्रतियोगिताओं व कैरियर कॉउंसिलिंग का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिताओं व अन्य कार्यक्रमों में विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग करते हैं व सहयोग भी प्रदान करते हैं। सत्र के अन्त में पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय के अन्य कार्यक्रमों व क्रिया. कलापों में शिक्षाशास्त्र विभाग के प्रभारी व विद्यार्थी अपना अमूल्य योगदान देने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं व महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

सत्र	पद का नाम	पदाधिकारी का नाम	कक्षा
2022-23	अध्यक्ष	कु. अंजली	बी.ए. तृतीय वर्ष
	उपाध्यक्ष	मंजू	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	सचिव	कमला	बी.ए. प्रथम वर्ष
	संयुक्त सचिव	रश्मि भट्ट	बी.ए. प्रथम वर्ष
	कोषाध्यक्ष	तुलसी भट्ट	बी.ए. तृतीय वर्ष
	कक्षा प्रतिनिधि	(*i*) सचिन सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष
		(*ii*) संदीप सिंह	बी.ए. प्रथम वर्ष
		(*iii*) अनिल भट्ट	
2023-24	अध्यक्ष	संदीप सिंह	बी.ए. तृतीय वर्ष
	उपध्याक्ष	कमला	बी.ए. तृतीय वर्ष
	सचिव	तुलसी भट्ट	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	संयुक्त सचिव	भागीरथी भट्ट	बी.ए. प्रथम वर्ष
	कोषाध्यक्ष	अनीता कठायत	बी.ए. प्रथम वर्ष
	कक्षा प्रतिनिधि	(i) संदीप सिंह	बी.ए. तृतीय वर्ष
		(ii) रश्मि भट्ट	बी.ए. द्वितीय वर्ष
		(iii) ऊषा भट्ट	बी.ए. प्रथम वर्ष
2024-24	अध्यक्ष	रश्मि भट्ट	बी.ए. तृतीय वर्ष
	उपायाध्याक्ष	तुलसी भट्ट	बी.ए. तृतीय वर्ष
	सचिव	भागीरथी भट्ट	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	संयुक्त सचिव	लक्ष्मण सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	कोषाध्यक्ष	सपना भट्ट	बी.ए. प्रथम वर्ष
	कक्षा प्रतिनिधि	(i) चारू काण्डपाल	बी.ए. तृतीय वर्ष
		(ii) अनीता कठायत	बी.ए. द्वितीय वर्ष
		(iii) आरती भट्ट	बी.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षाशास्त्र विभागीय परिषद् आख्या/रिपोर्ट

शिक्षाशास्त्र विभाग में प्रत्येक सत्र में विभागीय परिषद् का गठन किया जाता है, जिसका विवरण निम्न है:-

विभागीय परिषद् के अन्तर्गत आयोजित की गई प्रतियोगिताओं व क्रियाकलापों का विवरण।

सत्र	प्रतियोगिता / क्रियाकलाप का नाम	दिनांक	पुरस्कृत प्रतिभागी
2022-23	1. क्विज प्रतियोगिता	08-2-2023	1. सचिन सिंह 2. रश्मि भट्ट 3. चारू काण्डपाल 4. तुलसी भट्ट 5. गीता महराना
	2. निबन्ध प्रतियोगिता	13-02-2023	1. अंजली 2. प्रियंका बोहरा
	3. कॅरिअर काउंसिलिंग	27-02-2023	3. मंजू
	4. विषय सम्बन्धी सामान्य जानकारी प्रदान करने हेतु कार्यक्रम	03-10-2023	4. संदीप सिंह 5. तुलसी भट्ट

2023-24	1. क्विज प्रतियोगिता	23-02-2014	1. ऊषा भट्ट 2. चारू काण्डपाल 3. भागीरथी भट्ट 4. लक्ष्मण सिंह 5. सरिता
	2. निबन्ध प्रतियोगिता	26-02-2024	1. सरिता 2. कमला भट्ट 3. चारू काण्डपाल 4 तुलसी भट्ट
	कैरियर काउंसिलिंग व पुरस्कार वितरण समारोह	30-04-2024	5. रश्मि भट्ट ———
	1. क्विज प्रतियोगिता	21-02-2025	1. निशा 2. उषा भट्ट 3. सपना भट्ट 4. भागीरथी भट्ट 5. रश्मि भट्ट
	2. निबन्ध प्रतियोगिता	24-02-2025.	1. कमला भट्ट 2. ऊषा भट्ट 3. भागीरथी भट्ट 4. सपना भट्ट
	3. कॅरियर काउंसिलिंग व पुरस्कार वितरण समारोह	03-03-245	5. निशा –

1. महाविद्यालय की अपनी वैबसाइट है, जो 2019 में अपने अस्तित्व में आई। जो आधुनिक डिजाइन से निर्मित है।
2. महाविद्यालय को पोर्टल AISHE में सत्र 2017-18 में पंजीकृत किया गया। इसके नोडल ऑफिसर डॉ. संजय कुमार असि. प्रो. राजनीति शास्त्र, व वर्तमान मे डॉ. अतुल कुमार मिश्र है।
3. महाविद्यालय में श्री संजय कुमार गंगवार के समन्वय में MIS पोर्टल सफलता पूर्वक संचा. लित है, जिसमें राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी से संबंधित सूचनाए अद्यतन है।
4. महाविद्यालय में वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम श्रीमती पुष्पा के नेतृत्व मे संचालित है, इसके पूर्व यह कार्यभार अंग्रेजी विषय की प्राध्यापिका डॉ रंजना सिंह के कंधों पर रहा। महाविद्यालय में रा.से.यो. इकाई सत्र से संचालित हो रहा है। सर्वप्रथम डॉ. दुर्गा तिवारी कार्यक्रम अधिकारी (रा.से.यो.) थी।
5. महाविद्यालय में क्रीड़ा कार्यक्रम का संचालन क्रीड़ा प्रभारी (सचिव) डॉ रंजना सिंह व सह प्रभारी डॉ. संजय कुमार के निर्दशन में संचालित हो रहा है। डॉ. संजय कुमार वर्ष 2017 से वर्तमान तक क्रीड़ा प्रभारी रहे हैं।
6. महाविद्यालय में रोवर-रेंजर इकाई सत्र 2020 से प्रारम्भ हो गई है। वर्तमान में रोवर प्रभारी प्रो. (डॉ.) अतुल कुमार मिश्र व रेंजर प्रभारी श्रीमती पुष्पा (असि. प्रो.) हैं।
7. महाविद्यालय में समस्त कार्यालयी कार्य वरिष्ठ सहायक श्री हरीश चन्द्र जोशी के व्यवहार कुशल कार्यक्षमता से संचालित हो रहा है।

महाविद्यालय में श्री दशरथ सिंह बोहरा अनुसेवक के पद पर कार्यरत हैं। ये दोनों बहुत ही योग्य एवं कर्मठ हैं जिनकी कार्यकुशलता के कारण महाविद्यालय में चतुर्थ कर्मी स्टाफ कम होने के बावजूद कभी इस बात की कमी महसूस नहीं हुई।

8. महाविद्यालय में वर्तमान में विद्यार्थियों की कुल संख्या 190 है। बी.ए. प्रथम सेमेस्टर में 79 छात्र-विद्यार्थी बी.ए. द्वितीय वर्ष में 63 विद्यार्थी एवं बी.ए. पंचम सेमेस्टर में 41 विद्यार्थी पंजीकृत हैं। महाविद्यालय में शोध-छात्र पंजीकृत हैं, जिसमें प्राचार्य डॉ. कमला जोशी के कुशल निर्देशन में विषय संस्कृत से 05 विद्यार्थी तथा प्रो. (डॉ.) सिद्धेश्वर सिंह वरिष्ठ प्राध्यापक हिन्दी के दिशा-निर्देशन में 02 विद्यार्थी शोध पूर्ण कर चुके हैं। महाविद्यालय में शोध कार्य निरन्तर जारी है।
9. महाविद्यालय में वर्तमान में 07 विषय स्वीकृत हैं हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र व शिक्षाशास्त्र।

संस्कृत विभाग आरब्या

राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी में संस्कृत विभाग की स्थापना वर्ष 2016 में हुई थी। संस्कृत विभाग छात्रों को संस्कृत भाषा, वेद, उपनिषद्, पुराण, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र और दर्शन आदि विषयों में गहन ज्ञान प्रदान करने के साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा और शास्त्रीय अध्ययन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संस्कृत विभाग स्थापना के समय से ही विभाग उच्च स्तर के विद्वान और समर्पित प्राध्यापकों के सानिध्य में निरन्तर पुष्पित एवं पल्लवित होता रहा हैं, विभाग छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास एवं नवाचार के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहता है। विभाग भारतीय ज्ञान प्रणाली और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभाग नियमित रूप से प्रतिष्ठित विद्व ानों के व्याख्यान आयोजित करता है, जिससे छात्रों को वेद, उपनिषद, भाषा, दर्शन और अन्य शास्त्रों की गहरी समझ मिलती है। विभाग ने एन.आई.पी. 2020 के तहत संस्कृत अध्ययन को आधुनिक दृष्टिकोण से समृद्ध करने के लिए नए विकसित पाठ्यक्रम को अंगीकार किए हैं, जो चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित हैं। संस्कृत विभाग भारतीय शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण को समाहित करने का प्रयास कर रहा है, जिससे छात्रों को न केवल शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त हो, बल्कि वे इसे समकालीन संदर्भों में भी लागू कर सकें। सस्कृत विभाग स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का पठन-पाठन का कार्य निरन्तर होता रहा है। विभाग के विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों में जाते है। विभाग के कई विद्यार्थी शिक्षा, सेना आदि में अपनी सेवा प्रदान कर रहे है। प्रत्येक वर्ष विभागीय परिषद् का चुनाव होता है। विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान में प्रत्येक वर्ष शिक्षणेतर गतिविधियाँ करायी जाती हैं। संस्कृत सप्ताह का कार्यक्रम, निबन्ध, प्रश्नोत्तरी (क्विज), श्लोक-गायन, आशु-भाषण आदि अनेक प्रतियोगितायें करवायी गयीं हैं। कोविड-19 महामारी के कारण कुछ सत्र बाधित भी हुए। प्रत्येक वर्ष प्रतियोगितायें करवाये जाने के उपरान्त विभ. ागीय समारोहों में विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। संस्कृत विभाग द्वारा उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के सहयोग से विविध संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है। विभागीय समारोह में करायी गयी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दिनाँक 17/03/2023 को प्रत्येक वर्ष के भाँति इस वर्ष भी "समाजस्य हितं संस्कृते निहितम्" विषय पर विभाग द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। समिति के मूल्यांकन के उपरान्त उत्कृष्ट प्रतिभागियों को निम्नवत पुरस्कृत किया गया-

क्र. सं.	छात्र/ छात्रा का नाम	कक्षा	पुरस्कार
1.	प्रेमा विष्ट	बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर	प्रथम पुरस्कार
2.	ज्योति	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	द्वितीय पुरस्कार
3.	पूजा	बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर	तृतीय पुरस्कार
4.	संध्या	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	सांत्वना पुरस्कार
5.	सीमा	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	सांत्वना पुरस्कार

❐ दिनाँक 08/02/2024 को प्रत्येक वर्ष के भाँति इस वर्ष भी "भारतीय मूल्यभावना एवं संस्कृत" विषय पर विभाग द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। समिति के मूल्यांकन के उपरान्त उत्कृष्ट प्रतिभागियों को निम्नवत पुरस्कृत किया गया–

क्र. सं.	छात्र/ छात्रा का नाम	कक्षा	पुरस्कार
1	ज्योति	बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर	प्रथम पुरस्कार
2	सुनीता	बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर	द्वितीय पुरस्कार
3	संध्या	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	तृतीय पुरस्कार
4	सुनीता जोशी	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	सांत्वना पुरस्कार
5	संगीता	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	सांत्वना पुरस्कार

दिनाँक 09/11/2023 को प्रत्येक वर्ष के भाँति इस वर्ष भी "जनकल्याणकारी योजना विषयक सामान्य अध्ययन प्रतियोगिता" विषय पर विभाग द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। समिति के मूल्यांकन के उपरान्त उत्कृष्ट प्रतिभागियों को निम्नवत पुरस्कृत किया गया–

जनकल्याणकारी योजना विषयक सामान्य अध्ययन प्रतियोगिता

परिणाम

क्रम सं.	छात्र/ छात्रा का नाम	कक्षा	पुरस्कार
1	दीक्षा	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	प्रथम पुरस्कार
2	भागीरथी भट्ट	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय पुरस्कार
3	सुमन	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	तृतीय पुरस्कार
4	सरिता जोशी	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	तृतीय पुरस्कार
5	भावना राणा	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	तृतीय पुरस्कार
6	नीमा भट्ट	बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	सान्त्वना पुरस्कार
7	दीक्षा	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	सान्त्वना पुरस्कार
8	नीतू चौहान	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	सान्त्वना पुरस्कार

विभाग में निरन्तर शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षणेतर क्रियाकलाप प्राय: प्रत्येक वर्ष होते हैं। विभाग के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय परिसर में वृक्ष. रोपण, स्वच्छता, सौन्दर्यीकरण आदि का कार्य किया। विभाग के प्राध्यापक ने अनेक प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुति, तथा मुख्यवक्ता के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस प्रकार विभाग में शैक्षिक गतिविधियों के साथ साथ नि. रन्तर शिक्षणेतर क्रियाकलाप भी संचालित होते रहे हैं।

डॉ. अतुल कुमार मिश्र
सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत)

हिन्दी विभाग

हिंदी विभाग (परिषद गठन) द्वारा गठित परिषदों का विवरण निम्नवत है-

परिषद प्रभारी: डॉ. रेखा मेहता

सत्र: 2022-2023

क्रम	संख्या	पदनाम	नाम कक्षा
01	अध्यक्ष	दीपा भट्ट	दीपा भट्ट
02	उपाध्यक्ष	रीता भट्ट	रीता भट्ट
03	सचिव	भावना राणा	भावना राणा
04	संयुक्त सचिव	कु. नीमा भट्ट	कु. नीमा भट्ट
05	कोषाध्यक्ष	कु. हसं ा भट्ट	कु. हसं ा भट्ट
06	कक्षा प्रतिनिधि	1- कु. किरण भट्ट	1- कु. किरण भट्ट
		2- कु. तनीषा भट्ट	2- कु. तनीषा भट्ट
		3- कु. रश्मि भट्ट	3- कु. रश्मि भट्ट
			बी. ए. पंचम सेमेस्टर
			बी. ए. पंचम सेमेस्टर
			बी. ए. तृतीय सेमेस्टर
			बी. ए. तृतीय समेस्टर
			बी. ए. प्रथम सेमेस्टर
			बी. ए. पंचम सेमेस्टर
			बी.ए.तृतीय समस्टर
			बी. ए. प्रथम सेमेस्टर

हिंदी विभाग (परिषद गठन)

परिषद प्रभारी : डॉ. रेखा मेहता सत्र: 2023-2024

क्रम	संख्या	पदनाम	नाम कक्षा
01	अध्यक्ष	भावना राणा	बी. ए. पंचम सेमेस्टर
02	उपाध्यक्ष	मंजुला	बी. ए. पंचम सेमेस्टर
03	सचिव	देवेंद्र	बी. ए. तृतीय सेमेस्टर
04	संयुक्त सचिव	हंसा भट्ट	बी. ए. तृतीय समेस्टर
05	कोषाध्यक्ष	लक्ष्मण नेगी	बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर
06	कक्षा प्रतिनिधि	1- माया	बी. ए. पंचम सेमेस्टर
		2- राधा भट्ट	बी. ए. तृतीय समेस्टर
		3- भागीरथी भट्ट	बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

हिंदी विभाग (परिषद गठन)

परिषद प्रभारी: डॉ. अर्चना वर्मा

सत्र : 2024-2025

कम	संख्या	पदनाम	नाम कक्षा
01	अध्यक्ष	बृजेश चंद्र जोशी	बी. ए. पंचम सेमेस्टर
02	उपाध्यक्ष	भागीरथी भट्ट	बी. ए. तृतीय सेमेस्टर
03	सचिव	चारु कठायत	बी. ए. प्रथम सेमेस्टर
04	संयुक्त सचिव	पूजा भट्ट	बी. ए. प्रथम सेमेस्टर
05	कोषाध्यक्ष	विमला भट्ट	बी. ए. तृतीय सेमेस्टर
06	कक्षा प्रतिनिधि	(1) ममता पाण्डे	बी. ए. पंचम सेमेस्टर
		(2) अंजली	बी. ए. तृतीय सेमेस्टर
		(3) भावना	बी. ए. प्रथम सेमेस्टर

हिंदी विभाग

आख्या (वर्ष 2019-20 से 2025 तक)

महाविद्यालय का हिंदी विभ. ाग अपने छात्र - छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न प्रतियो. गिताओं, गोष्ठिया. ं, सुलेख कलाओं आदि का संचालन करता रहता है। सत्र 2019-2025 के मध्य विभाग द्वारा हिंदी दिवस पर गोष्ठी व्यक्तित्व कौशल विकास, आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आशु भाषण, कविता पाठ प्रतियोगिता आदि का आया. ेजन किया गया। प्रतिवर्ष हिंदी दिवस और पखवाड़े के अन्तर्गत हिंदी भाषा पर केन्द्रित विविध विषयां पर निबन्ध लेखन, क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। विद्यार्थियां के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन भी किया जाता है।

अर्थशास्त्र विभाग

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी चम्पावत में अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही सत्र 2016 से हुई है। प्रारंभ से विभाग मे डॉ. गणेश चंद्र व डॉ अन्नू पांडे अपनी सेवाएं दे चुके हैं । विभाग में वर्तमान में डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत), उत्तराखंड में अर्थशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर सत्र 2023-24 से कार्यरत हैं, जिनके पास 10 से अधिक वर्षों का शैक्षिक, सहशैक्षिक और शोध कार्य का अनुभव है। वे अर्थशास्त्र विषय में बजट, कर प्रणाली, बाजार सिस्टम, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, लोक राजस्व और भारतीय अर्थव्यवस्था में विशेषज्ञता रखते हैं। इसके साथ ही इनके पास नैक प्रत्यायन कार्य, उद्यमिता, कैरियर काउन्सिलिंग, आई0एफ0एम0एस0, आई0सी0टी0 के क्षेत्र मे व्यापक अनुभव व दक्षता सिद्ध हैं। आपके द्वारा 28 से अधिक पीयर रिव्यूड, केयर, और स्कॉपस-निर्देशित जर्नलों में शोध पत्र प्रकाशित कराये जा चुके है। जिनके द्वारा अद्यतन 14 पुस्तके प्रकाशित करायी जा चुकी है जिसमें ट्रान्सफार्मिंग इंडिया, भारत 75, इम्पावरिंग इंडिया, सशक्त भारत, जी 20, विकसित भारत नयी आशाएं व सम्भावनाएं सर्वप्रमुख है साथ ही डॉ0 गुप्ता के पास 25 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी और फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यक्रमों में संलग्नता उनके प्रोफेशनल विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। वर्तमान में वे उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड आर्थिक संघ और भारतीय आर्थिक संघ के आजीवन सदस्य हैं।

विभाग द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों का विवरण

- भारत 75 की समावेशी वृद्धि, स्तंभ और संभावनाएं, भारतीय आर्थिक संघ पत्रिका, खंड-1 दिसम्बर 2022 आईएसएसएन 0019-4662 यूजीसी केयर
- मेक इन इंडिया कार्यक्रम और भारत की आर्थिक संवृद्धि यूपीया जर्नल, खंड-19, अप्रैल 2024 आई. एस.एस.एन.-0975-2382 पीयर रिव्यूड
- भारत में शिक्षा, रोजगार और समावेशी वृद्धि, एक समीक्षा, केयर लिस्टेड जर्नल्स, दिसम्बर 2024, आई.एस.एस.एन. 0019-4662 यूजीसी केयर
- नवाचार से एकीकरण तक, यूपीया का भारत के आर्थिक भविष्य को आकार देने में भूमिका, जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, नवम्बर 2024 आई0एस0एस0एन0 1936-6264 यूजीसी केयर
- भारत में ग्रामीण विकास एक विश्लेषण यूपीया जर्नल, नवम्बर 2024 0975-2382आई0एस0एस0एन0 पीयर रिव्यूड

सेमिनार में प्रतिभागिता-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा का दृष्टिकोण, उच्च शिक्षा की उत्कृष्टता उभरती चिंताएँ और आगे का रास्ता, सत्र 2023 सुल्तानपुर उ0प्र0
- भारत 75 की समावेशी वृद्धि स्तंभ और संभावनाएं भारतीय आर्थिक संघ की वार्षिक सम्मेलन, 27-29 दिसम्बर 2023 ओडिशा

फैकल्टी डेवलपमेन्ट कार्यक्रम

- फैकल्टी मेंटरशिप विकास कार्यक्रम, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखंड द्वारा अहमदाबाद से 10 दिसम्बर 2023 लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सम्पन्न किया।

- ❒ लैंगिक समानता पर लघु अवधि प्रशिक्षण दिनांक 03 जनवरी 2025 से दिनांक 09 जनवरी 2025 तक
- ❒ एन0ई0पी0 थीम प्रशिक्षण दिनांक 22 जनवरी 2025 से दिनांक 30 जनवरी 2025 तक

पुस्तक संपादन

- ❒ भारत में सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन जी20, सह-सम्पादक आईएसबीएन978-81-966425-7-0 प्र0दिनांक 27-10-2023 कुनाल बुक्स नई दिल्ली
- ❒ भारत 75 और जी 20 के सांस्कृतिक एवं आर्थिक संभावनाएं, आईएसबीएन 978-81-966425-5-6 प्र0तिथि 01-11-2023 कुनाल बुक्स नई दिल्ली
- ❒ भारत 75, सांस्कृतिक और आर्थिक वृद्धि आईएसबीएन 978-81-967381-6-7प्र0तिथि 22-11-2023 कुनाल बुक्स नई दिल्ली
- ❒ इम्पॉवरिंग लाइव फार ए प्राशपरस ग्रोथ, विकसित भारत 2047 आईएसबीएन 978-81-973258-0-9 प्र0तिथि 15-12-2024 राइटवे प्र0 दिल्ली
- ❒ विकसित भारत 2047 नई आशाएं और अवसर, आईएसबीएन 978-81-973258-7 -804-02-2025 राइटवे प्रकाशन, दिल्ली

अन्य प्रमुख कार्य-

1. देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत अहमदाबाद उद्यमिता विकास संस्थान में 7 दिवसीय उद्यमिता प्रशिक्षण प्राप्त किया।
2. महाविद्यालय में अन्तरिम बजट 2024 पर दिनांक 02 फरवरी 2024 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया।
3. महाविद्यालय में 12 दिवसीय ई0डी0पी0 प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। योजना के तहत प्रशिक्षुओं को मधुमक्खी पालन कार्य के प्रशिक्षण हेतु श्यामलाताल को भ्रमण कराने में योगदान किया।
4. आई0क्यू0ए0सी0/नोडल के रूप में महाविद्यालय का नैक प्रत्यायन कार्य सम्पन्न कराने में योगदान किया महाविद्यालय को नैक बी ग्रेड तथा सीजीपीए 2.22 प्राप्त हुआ।
5. एन0ई0पी0 2020 के तहत आच्छादित कम्प्यूनिकेशन स्किल्स, कैरियर प्लेसमेन्ट, ई -कन्टेनट्स का विकास व प्रसार, वोकेशनल कोकरिकुलर एक्टीविटी आदि पर राजकीय महाविद्यालय टनकपुर व अर्थशास्त्र विषय मे बनबसा से,, के0आई0टी0एम0 कालेज खटीमा, किच्छा, पाटी, सरस्वती इण्टर कालेज आनन्दपुरी खटोली से समझौता पत्र पर करार कराकर महाविद्यालय को अन्य संस्थानों से लिंक कराया गया।
6. अकादमिक कैलेन्डर, अकादमिक आडिट, इन्टरनल आडिट जैसे अति महत्वपूर्ण कार्यो को पूर्ण कराया।
7. महाविद्यालय के आन्तरिक सौन्दर्यीकरण, स्लोगन, विजन, मिशन व महापुरुषों के विचारों को महाविद्यालय में लिखवाकर छात्र/छात्राओं को प्रेरित करने के लिए कार्य किया।
8. महाविद्यालय में अभिभावक शिक्षक संगठनों, पुरातन छात्र इकाई को कार्यशील कराने में अपना योगदान किया।
9. समान नागरिक संहिता पर एकदिवसीय गोष्ठी दिनांक 06/02/2024 को आयोजन कराया।
10. महाविद्यालय के पुस्तकालय को 14 जर्नल्स व संपापित पुस्तकें दान स्वरूप प्रदान किया।
11. महाविद्यालय में शिक्षकों के लिए ईकन्टेन्ट विकास हेतु कार्यशाला आयोजित कराया। नैक प्रक्रिया पर डॉ. आर.के.गुप्ता रिर्सोस पर्सन के रूप में, आई.पी.आर. संगोष्ठी में प्रो0 नमिता मिश्रा आई.टी.एस.कालेज गाजियाबाद को आमन्त्रित कर संगोष्ठी का आयोजन, तथा विकसित भारत, एआई रिसर्च व इन्नोवेशन पर संगोष्ठी का आयोजन कराया। जिसमे राष्ट्रीय पटल से क्रमश से 105 व 250 प्रतिभागी प्रतिभाग किये जिन्हें प्राचार्य द्वारा प्रमाणपत्र भी दिये गये। इन कार्यक्रमों

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता की पुस्तक का लोकार्पण - निदेशक वी. एन. खाली, प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित, प्रो. आनंद प्रकाश सिंह, प्रो. राकेश पांडे, प्रो. शर्मिला सक्सेना, प्रो. आर. के. गुप्ता, प्रो. आर. सी. पुरोहित, प्रो. मुकेश कुमार, श्री कैलाश थपलियाल, डॉ. राजीव सक्सेना, डॉ. बी. एन. दीक्षित एवं डॉ. सुशीला आर्या की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

में उच्च शिक्षा विभाग से निदेशक डॉ. अन्जू अग्रवाल, उपनिदेशक डॉ. आर.एस.भाकुनी, सहायक निदेशक डॉ. दीपक पाण्डेय सहित कई गणमान्य शामिल हुए।

12. बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान के तहत सी. सी.सी. कोर्स समन्वयक के रूप में कोर्स का सफल संचालन कराया।
13. महाविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय के पठन पाठन में नियमित कक्षाएं लेना, छात्र/छात्राओं को ईकन्टेन्ट देना, यूट्यूब चेनल के माध्यम लेक्चर रिकार्डिंग देना जिससे वे कई बार अध्ययन को पढ़ और समझ सकें।

अर्थशास्त्र विभाग के छात्रा-छात्राओं के परीक्षा परिणाम सत्रवार निम्नलिखित हैं।

सत्र 2023-24 में बीए अंतिम सत्र में सुमन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिन्होंने 74.00 प्रतिशत अंक हासिल किए। इसके बाद मनोहर भट्ट ने 73.33 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान और भावना राणा ने 72.67 प्रतिशत के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह, सत्र 2022-23 में हिमांशु जोशी ने प्रथम स्थान पाया, जिनके अंक 74. 00 प्रतिशत थे, जबकि प्रियंका और पंकज जोशी ने क्रमशः 71.33 प्रतिशत के साथ द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किए। सत्र 2020-21 में रविंद्र कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिन्होंने 76.00 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, वहीं रेखा भट्ट और निर्मला ने क्रमशः 74.00 और 73.33 प्रतिशत अंकों के साथ दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2019-20 में, छात्रा सुमन ने 105 अंक (70.00 प्रतिशत) प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि पुष्कर दत्त ने 96 अंक (64.00 प्रतिशत) एवं संजय जोशी ने 93 अंक (62.00 प्रतिशत) लेकर क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किए। यह परिणाम छात्रों की मेहनत और विभाग की उच्च गुणवत्ता का प्रमाण हैं।

संक्षेप में अर्थशास्त्र विषय का औसत परीक्षा परिणाम

- सत्र 19-20 अन्तिम सत्र का औसत प्रतिशत = 65.33प्रतिशत
- सत्र 2020-21 अन्तिम सत्र का औसत प्रतिशत = 74.44प्रतिशत
- सत्र 2022-23 अन्तिम सत्र का औसत प्रतिशत = 72.22प्रतिशत
- सत्र 2023-24 अन्तिम सत्र का औसत प्रतिशत = 72.67 प्रतिशत

अर्थशास्त्र विभाग परिषदीय कार्यक्रम -

सत्र 2023-24 में निबंध प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड में पलायन, छात्रवृत्ति, पेन्शन एवं कल्याण योजनाओं विषयक में बीए द्वितीय सेमेस्टर में सरिता जोशी ने प्रथम स्थान, भागीरथी भट्ट ने द्वितीय व अंजली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी सेमेस्टर के माइनर विषय में गीता भट्ट, निर्मला बिष्ट और अनीता कठायत क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं। बीए चतुर्थ सेमेस्टर में प्रकाश जोशी ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि षष्ट सेमेस्टर में भावना राना, दीक्षा और सुमन क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं।

सत्र 2024-25 में बीए चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों ने 'उत्तराखण्ड' में हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों का आर्थिक महत्व विषय पर हिमांशु विष्ट ने प्रथम, भागीरथी भट्ट ने द्वितीय और सरिता जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बीए द्वितीय सेमेस्टर में 'भारत में वैकिंग प्रणाली विषय पर राम सिंह ने प्रथम, रोशनी ने द्वितीय तथा विनीता भट्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी सेमेस्टर के माइनर विषय में 'उत्तराखण्ड' में पर्यटन और इसकी महत्ता पर निबंध में चारू कठायत, पूजा भट्ट और भावना विष्ट क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं।

रोवर्स और रेंजर्स आरम्भ

डॉ. अतुल कुमार मिश्र,
रोवर लीडर एवं श्रीमती पुष्पा, रेंजर लीडर

राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी में रोवर्स की स्थापना दिनाँक 13/07/2020 को पंजीकरण संख्या 1252 के रूप में किया गया, तथा रेंजर्स की स्थापना दिनाँक 07/07/2020 को पंजीकरण संख्या 1263 के रूप में किया गया। महाविद्यालय में रोवर्स और रेंजर्स का कार्यक्रम स्नातक स्तर के छात्रों हेतु संचालित है। वीर सावरकर रोवर्स क्रू (छात्र के लिए) गौरा देवी रेंजर्स टीम (छात्रा के लिए) संचालित है, रोवर्स और रेंजर्स स्काउटिंग और गाइडिंग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो युवाओं को नेतृत्व, सेवा, और अनुशासन के गुण सिखाने पर केंद्रित हैं। जिससे वे समाज सेवा और व्यक्तित्व विकास में योगदान दे सकें। रोवर्स और रेंजर्स के दीक्षा, प्रवीण के प्रशिक्षण महाविद्यालय में ही सम्पन्न किए जाते है, निपुण आदि उत्कृष्ट स्तर के प्रशिक्षण विशेष शिविरों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

भारत स्काउट एंड गाइड्स की शुरुआत लॉर्ड बैडेन-पॉवेल द्वारा की गई थी, जिन्होंने 20वीं सदी की शुरुआत में स्काउटिंग आंदोलन की नींव रखी। भारत में, रोवर्स और रेंजर्स को भारत स्काउट एंड गाइड्स संगठन के तहत संचालित किया जाता है। यह कार्यक्रम युवाओं को समाज सेवा, नेतृत्व विकास, और राष्ट्रीय निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। भारत में रोवर्स रेंजर्स का योगदान राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण माना जाता है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में रोवर्स रेंजर्स के शिविर आयोजित किए जाते हैं, जहां प्रतिभागियों को अनुशासन, सेवा, और नेतृत्व कौशल सिखाए जाते हैं। राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी रोवर्स रेंजर्स के स्वयंसेवियों ने कई महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं, विशेष रूप से पर्यावरण, राष्ट्र निर्माण और समाज सेवा के क्षेत्रों में। कुछ उल्लेखनीय उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

- **स्वच्छ भारत अभियान** - राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी रोवर्स रेंजर्स ने विभिन्न स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है, जिससे युवाओं को स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जा सके।
- **राष्ट्र और समाज निर्माण** - राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी रोवर्स रेंजर्स के स्वयंसेवियों ने पांच दिवसीय निपुण जांच शिविर राजकीय स्नातकोत्तर महा. विद्यालय, लोहाघाट में आयोजित शिविर में प्रतिभाग किया था, जिसमें प्रतिभागियों को कुशल नेतृत्व, सेवा, और अनुशासन के गुण सिखाए गए।
- **पर्यावरण संरक्षण** - राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी एवं रोवर्स रेंजर्स के संयुक्त तत्त्वावधान में वृक्षारोपण और जल संरक्षण अभियान चलाया गया। प्रतिभागियों ने पौधों को पानी देने और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी रोवर्स रेंजर्स न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका नि. भाते हैं।

Rovers/ Rangers

उद्देश्य व सिद्धान्त–

- राष्ट्र की सेवा करना
- राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन
- ईश्वर के प्रति कर्तव्य का पालन
- दूसरों के प्रति कर्तव्य पालन
- दूसरों की निःस्वार्थ सेवा करना
- स्वयं के प्रति कर्तव्य पालन

महाविद्यालय में रोवर्स रेन्जर्स इकाई कार्यरत है।

प्राचार्य

छात्र संघ

महाविद्यालय में सत्र- 2018-19 से छात्र संघ चुनाव के तहत सांस्कृतिक अकादमिक परिषद का गठन किया गया। प्राचार्या प्रो. कमला जोशी, छात्र संघ प्रभारी संजय कुमार के नेतृत्व 2019-20 परिषद का गठन किया गया। सत्र-2018-19 सांस्कृतिक अकादमिक परिषद के प्रतिनिधियों के नाम इस प्रकार हैं-

मनोनीत सत्र: 2018-19			
पद	**नाम**	**पिता का नाम**	
अध्यक्ष	मनीषा चौहान	श्री राम सिंह चौहान	Vth sem-
उपाध्यक्ष	(छात्र) राजेन्द्र भट्ट (छात्रा) किरण	श्री लीलाधर भट्ट श्री रघुवर सिंह	Vth sem- Vth sem-
सचित	किरण जोशी	श्री शंकर दत्त जोशी	IIIrd sem-
सांस्कृतिक	ममता		
सचिव -			
कोषाध्यक्ष	रविन्द्र कुमार		1st sem
संयुक्त सचिन	1- लता नेगी		vth sem
	2- अजू		vth sem
सत्र: 2019-20			
अध्यक्ष	किरण	श्री शकेर सिंह	vth sem
उपाध्यक्ष (छात्रा)	सुमन	श्री शंकर राम	
उपाध्यक्ष (छात्रा)	मुकेश कुमार	श्री जोगा राम	
सचिव	रेखा	श्री तिलोमनी	IIIrd sem
संयुक्त सचिव	नेहा चौहान	श्री विजय सिंह	Ist Sem
कोषाध्यक्ष	प्रियंका बोहरा	श्री अर्जुन सिंह	IIIrd
सांस्कृतिक सचिव	बीना नायक	श्री पुष्कर सिंह	vth

महाविद्यालय में सत्र-2018-19, 2019-20 में छात्रों की सहमति के आधार पर सांस्कृतिक आकादमिक परिषद का गठन किया गया किन्तु सत्र 2020-21, व 2021-22 में कोरोना काल के कारण छात्र सांस्कृतिक अकादमिक परिषद का गठन नहीं हो सका। सत्र 2022-23, 2023-24 में पुनः विद्यार्थियों की

सहमति पर छात्र संघ चुनाव शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराए गए। सत्र 2021-22 से वर्तमान तक छात्रसंघ प्रभारी श्रीमती पुष्पा है। दोनों सत्र में निर्वाचित पदाधिकारियों की सूची निम्न प्रकार से है:

सत्र: 2022-23			
	पद	**नाम**	**कक्षा**
1.	अध्यक्ष	सूरज सिंह	vth sem
2.	उपाध्यक्ष	दीपा भट्ट	
3.	छात्रा उपाध्यक्ष	रीता भट्ट	
4.	सचिव	तनीषा भट्ट	IIIrd sem
5.	संयुक्त सचिव	ओमप्रकाश जोशी	
6.	कोषाध्यक्ष	आशा नेगी	Ist sem
7	सोस्कृतिक सचिव	मन्जू बोहरा	vth sem
8.	संकाय प्रतिनिधि	हंसा भट्ट	Ist sem
10.	विश्वविद्यालय प्रतिनिधि	किरण भट्ट	vth sem
सत्र: 2023-24			
1.	अध्यक्ष	नीमा भट्ट	vth sem
2.	छात्रा उपाध्यक्ष	भावना राणा	
3.	सचिव	सुनीता	
4.	सचिव	श्यामा बिष्ट	vth sem
5.	सांस्कृतिक सचिव	निशा जोशी	IIIrd sem

छात्र संघ 2025-26

छात्र संघ 2023-24

नीमा भट्ट
छात्र संघ- अध्यक्ष

छात्र संघ
उपाध्यक्ष

सुनीता
छात्र संघ-सचिव

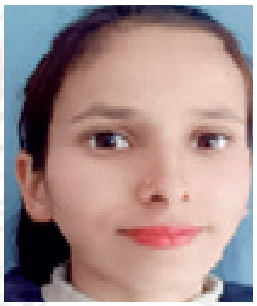

निशा जोशी
सांस्कृतिक सचिव

श्यामा विष्ट
विश्वविद्यालय
प्रतिनिधि

छात्र संघ 2022-23

सुरज सिंह नेगी
छात्र संघ-अध्यक्ष

रीता भट्ट
छात्रा उपाध्यक्ष

किरण भट्ट
विश्वविद्यालय
प्रतिनिधि

मंजू बोहरा
सांस्कृतिक सचिव

तानिया भट्ट
सचिव

ओमप्रकाश जोशी
संयुक्त सचिव

आशा नेगी
कोषाध्यक्ष

हंसा भट्ट
संकाय प्रतिनिधि

दीपा भट्ट
उपाध्यक्ष

कैरियर काउंसिलिग (आख्या)

महाविद्यालय में कैरियर काउंसिलिंग और प्लेसमेंट सेल समय-समय पर कैरियर काउंसिलिंग कक्षाएँ आयोजित करता है। जिसकी प्रभारी श्रीमती पुष्पा (असि. प्रो इतिहास) हैं। कैरियर काउंसिलिंग कक्षाओं के तहत विभिन्न रोजगार के स्रोतों होने पर चर्चा की जाती है ताकि छात्रों को उनके भविष्य के कैरियर काउंसिल विकल्पों के बारे में जागरूक किया जा सके। कुछ प्रमुख रोजगार के क्षेत्र जिन्हें बताया व समझाया जाता है, इस प्रकार से हैं-

1. **शिक्षा क्षेत्र** - शिक्षक, व्याख्याता और प्रशासनिक पदों के लिए कैरियर विकल्प, टी.ई.टी., सी.टी.ई. टी., नेट, जे आर.एफ. और Ph.D. अन्य शिक्षक पात्रता परीक्षा की जानकारी।
2. **सरकारी सेवाएँ**- यू.पी.एस.सी., राज्य सेवा आयोग PCS, SC, रेलवे, बैंकिंग व विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए मार्गदर्शन।
3. **निजी क्षेत्र (कॉरपोरेट)**- एम.एन.सी., आई. टी. कम्पनियों, और विभिन्न कॉरपोरेट नौकरियों में अवसरों के बारे में बताया जाता है, साथ ही आवश्यक स्किल्स जैसे कम्यूनिकेशन विकल्प, सॉफ्ट स्किल्स, और डिजीटल लिटरेली पर जागरूक किया जाता है।
4. **स्वरोजगार व उद्यमिता**-स्टार्टअप, छोटे व्यवसाय व उद्यमिता में रूचि रखने वाले छात्र-छात्राओं को जागरूक किया जाता है। साथ ही स्वरोजगार के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता इत्यादि के बारे में भी बताया जाता है।
5. **सशस्त्र बल व रक्षा सेवाएँ**- भारतीय सेना, नौ सेना, वायुसेना व अर्थ सैनिक बलों में रोजगार के अवसर के साथ एन.डी.ए., सी.डी.एस. और अन्य रक्षा परीक्षाओं की जानकारी दी जाती है।
6. **कला व संस्कृति क्षेत्र**- संगीत, नृत्य, पेंटिंग, साहित्यिक लेखन और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में कैरियर विकल्प की जानकारी दी जाती है।
7. **पर्यटन व आतिथ्य प्रबंधन** - होटल, रिसॉर्टस, ट्रैवल कम्पनियों में रोजगार, पर्यटन क्षेत्र में गाइड टूर मैनेजर, हस्तलिपि के लिखित कोर्स नौकरियों की जानकारी प्रदान की जाती है।
8. **कृषि व कृषि व्यावसाय**-कृषि विज्ञान, पशुपालन कृषि व्यवसाय आधुनिक जैविक खेती व कृषि आधारित उद्योगों की जानकारी दी जाती है।
9. **सामाजिक कार्य व एन.जी.ओ.** - सामाजिक, NGO, ग्रामीण विकास महिला सशक्तिकरण व शिक्षा के क्षेत्र में योगदान आदि कैरियर विकल्पों की जानकारी प्रदान की जाती है।

कैरियर काउंसिलिग व प्लेसमेंट सेल के तहत अभी तक 10 विद्यार्थी अग्निवीर में चयनित हो चुके है, जबकि 02 विद्यार्थी ITBP कांस्टेबल में चयनित हुए हैं। जबकि 02 विद्यार्थी बैंकिग क्षेत्र में कार्यरत है। जिनका विवरण निम्न प्रकार से हैं-

1. अमन सिंह
2. प्रदीप सिंह
3. सचिन सिंह
4. जोगा सिंह
5. अमित सिंह चौड़ाकोटी
6. अमित सिंह बिष्ट
7. सागर सिंह बिष्ट
8. रोशन सिंह बिष्ट
9. अजय सिंह
10. अनुज सिंह

ITBP में चयनित विद्यार्थी

(1) पवन सिंह
(2) कविता चौहान

बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत विद्यार्थी

(1) निर्मला
(2) रविन्द्र

इसके अतिरिक्त अन्य विद्यार्थी भी कहीं न कहीं रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। कई विद्यार्थी प्राइवेट शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। और 01 विद्यार्थी रविन्द्र कुमार किसी विभाग में संविदा पर पर कार्यरत है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (आख्या)

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई सत्र 2017-2018 से संचालित है। सत्र 2017-2018 कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दुर्गा तिवारी व 2018-19 में डॉ. संजय कुमार रहे। जबकि सत्र 2019-20 से सत्र 2020-23 तक डॉ. रंजना सिंह कार्यक्रम अधिकारी रहींवर्तमान मे श्रीमती पुष्पा प्रभारी का दायित्व निभा रही है इस इकाई के तहत प्रत्येक वर्ष 5 नियमित शिविर व एक सात दिवसीय विशेष शिविर आयोजित होते रहे हैं। महाविद्यालय स्तर पर यह इकाई एक सतत् क्रियाशील इकाई है, जिसके तहत नियमित व विशेष शिविर आयोजित करने के अलावा वृक्षारोपण, नशा मुक्ति कार्यक्रम, विभिन्न जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। डॉ. रंजना सिंह के कार्यक्रम अधिकारी कार्यकाल में सत्र 2021-22 में करोना महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के 5 स्वयं सेवकों व कार्यक्रम अधिकारी को जिला स्तर पर बेहतरीन कार्य करने के लिए सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। सत्रः 2023-24 से वर्तमान में श्रीमती पुष्पा कार्यक्रम अधिकारी हैं। महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में सहिष्णुता, सहभागिता, सेवाभाव, स्वावलम्बन, स्वदेश-प्रेम जैसे गुणों को समाहित करने का प्रयास करती है। साथ ही इकाई का उद्देश्य है स्वयं सेवक अपने समाज की आवश्यकताओं व कठिनाइयों को पहचानते हुए उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने व कठिनाइयों को दूर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें। यह इकाई स्वयं सेविकों में सामाजिक एवं नागरिक दायित्वों की भावना का विकास करती है। साथ ही स्वयं सेविकों में नेतृत्व गुणों का विकास करती है।

महाविद्यालय स्तर पर यह इकाई बेहतरीन तरीके से कार्य करती है। महाविद्यालय में नैक पलायन के साथ एन.एस.एस. के स्वयं सेवकों ने महाविद्यालय साज-सज्जा के तहत महाविद्यालय की सीढ़िया. ं में शौर्य दीवार के पास कुमाऊंनी संस्कृति में ऐपण बनाकर सबका मन मोहा। सभी अतिथियों द्वारा इस कला को सराहा गया। इस वर्ष राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा दिनांक 05 दिसम्बर से 11 दिसम्बर 2024 तक एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उ.प्र.) में आयोजित राष्ट्रीय एकीकरण शिविर में महाविद्यालय के दो एन.एस.एस स्वयं सेवकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रतिभागी स्वयंसेवकों के नाम हैं। चांदनी बोहरा 5वां सेमेस्टर व ओमप्रकाश जोशी 5वां सेमेस्टर। महाविद्यालय के इन दोनों स्वयं सेवकों ने इस शिविर में बेहतरीन प्रदर्शन किया। चांदनी बोहरा ने समूह नृत्य में प्रथम स्थ. ान प्राप्त किया। सत्र 2023-24 के 7 दिवसीय विशेष शिविर में औचक निरीक्षण करने हेतु जिला समन्वयक डॉ. सुमन पाण्डेय आईं। एन.एस.एस. स्वयं सेवकों का अनुशासन, नशा मुक्त पर नाटक मंचन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति देखकर उनकी प्रशंसा की गई। इस वर्ष 2024-25 सत्र में भी स्वयं सेवकों द्वारा स्वच्छता ही सेवा है, एक पेड़ माँ के नाम साइबर सुरक्षा, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण संरक्षण, माई भारत पोर्टल का प्रचार-प्रसार, डिजीटल साक्षरता इत्यादि जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

आजादी का अमृत महोत्सव

दिनांक- 24 मार्च 2021 को 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का समापन प्राचार्य डॉ. कमला जोशी द्वारा किया गया। प्राचार्य द्वारा युवा पीढ़ी से आजादी के इतिहास को आत्मसात करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापक, शिक्षणत्तर कर्मचारी एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित थे।

दिनांक 15 मार्च 2021 के आजादी का 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वाधीनता संग्राम से सम्बन्धित देशभक्ति एक गीत, नृत्य, लोकगीत एवं लोकनृत्य कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया गया। विद्यार्थियों द्वारा 'सारे जहाँ ये देश है वीर- हिन्दुस्तान हमारा', 'मस्तानो का' इत्यादि देशभक्ति गीत के साथ लोकगीत 'बेडू पाको बारामासा' प्रतिभागी विद्यार्थियों में नीमा, पूषा, निर्मला, नेहा, रीता, गाया गया। रविन्द्र कुमार, बबिता, इत्यादि थे। इस कार्यक्रम की संयोजक डॉ. रंजना सिंह थी।

दिनांक- 16 मार्च 2021 को अमृत - महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसके संयोजक डॉ. अतुल कुमार मिश्र थे। विद्यार्थियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित विभिन्न नेताओं जैसे- महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस का चित्र बनाने के साथ-साथ शिक्षा, स्वतन्त्रता व पर्यावरण से सम्बन्धित 'स्लोगन पोस्टर में लिखकर लाए व गाए गए। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रवीन्द्र कुमार ने प्राप्त किया।

दिनांक - 17 मार्च 2021 को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसके संयोजक- डॉ. संजय कुमार थे। विद्यार्थियों द्वारा बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया गया जिसमें प्रथम स्थान सीमा भट्ट द्वितीय स्थान रवीन्द्र कुमार तथा तृतीय स्थान बबिता चौहान को प्राप्त हुआ।

आख्या

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में 'आजादी अमृत महोत्सव' कार्यक्रम दिनांक मार्च (12 का मार्च 2021 से 05 अप्रैल 2021 तक)

दिनांक12 मार्च 2021 से 05 अप्रैल 2021 तक राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में 'आजादी का अमृत' महोत्सव कार्यक्रम बड़े हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया, जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम/ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। सर्वप्रथम 12 मार्च 2021 को प्राचार्य की अक्ष्यक्षता में दीप प्रज्ज्वलित कर व विद्यार्थियों द्वारा गायन व सरस्वती वन्दना करते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम समन्वयक श्रीमती पुष्पा द्वारा स्वतन्त्रता की 75वीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य में आयोजित किए जा रहे इस 25 दिवसीय कार्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों को विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए गांधी जी की ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा - (मार्च) एवं भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापको एवं विद्यार्थियों द्वारा भी स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित विचार साझा किए गए। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. कमला जोशी द्वारा कार्यक्रम के शुभारम्भ की हार्दिक बधाई' हुए युवाओं में देशभक्ति जोश जगाने के देते लिए आजादी के महत्व के बारे में बताया तथा युवाओं से आजादी के इतिहास को आत्मसात करने का आहवान किया।

दिनांक 18 मार्च 2021 को आजादी का 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसके संयोजक डॉ. सिद्धेश्वर सिंह। प्रतियोगिता का विषय था 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में युवाओं की भूमिका' नीमा, पूजा, निर्मला,

भावना भट्ट, बबीता, नेहा, रीतू मुकेश, रवीन्द्र कुमार कविता चौहान इत्यादि विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें बबीता ने प्रथम स्थान, कविता चौहान ने द्वितीय एवं भावना भट्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दिनांक- 19 मार्च 2021 को 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अन्तर्गत अतिथि वक्ताओं के सम्बोधन कार्यक्रम में महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापकों डॉ सिहेश्वर सिंह, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, डॉ. अतुल कुमार मिश्र एवं डॉ. पुष्पा द्वारा स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में युवाओं की भूमिका एवं वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर अपने विचार साक्षा किए। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. कमला जोशी ने विद्यार्थियों को बताया कि किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्जवल होता है जब वे अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है।

मार्च 2021 को 10 अमृत महोत्सव के अन्तर्गत रंगोली/ ऐपण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसकी संयोजक डॉ. पुष्पा थी। विद्यार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए तिरंगा के रंगों से सुन्दर रंगोली बनाई। प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों में जीमा, पूषा, भावना, निर्मला रविन्द्र कुमार प्रमुख थे। प्रथम स्थान निर्मला द्वितीय स्थान एवं तृतीय स्थान निर्मला 75% ने प्राप्त किया।

स्वीप कार्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में भारत निर्वाचन आयोग के स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत श्री एस. के. गंगवार के समन्वयन में मतदाता जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जाती है। इन कार्यक्रमों में रैलियाँ, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर, स्लोगन एवं ई.वी.एम. का प्रदर्शन किया जाता है, जिनका उद्देश्य विशेष रूप से युवाओं एवं प्रथम बार मतदान करने वालों को उनके मताधिकार के महत्व, त्रि-स्तरीय निर्वाचन प्रणाली तथा लोकतांत्रिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना है। प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के द्वारा सक्रिय सहभागिता करते हुए लोकतांत्रिक चेतना को सशक्त बनाया जाता है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान

किरण काण्डपाल,
कक्षा-बी.ए. तृतीय समेस्टर

बेटा नहीं, बेटी है बदलाव का प्रतीक!

प्रस्तावना- बेटा बेटी का फक्र मिटाने के बाद ही सही मायने में नारी सशक्तिकरण की अवधारणा चरितार्थ होगी। आज बेटियां हर क्षेत्र में बेटों से आगे हैं। समाज में आज भी लोग बेटों को अधिक महत्व देते हैं, लेकिन अगर बेटों की तरह बेटियों को भी समान शिक्षा और समान अवसर दिया जाए,तो बेटियां सफलता का परचम लहरा सकती हैं। समाज को अपनी रुढ़िवादी सोच बदलनी होगी। इसके लिए हम महिलाओं को सामाजिक वर्जनाओं को तोड़कर अपनी बेटियों को उचित अवसर दिलाने का प्रयास करना होगा। शिक्षित तथा सभ्य समाज का निर्माण तभी होगा, जब बेटियां हर क्षेत्र में बिना किसी भेदभाव के बराबरी का अधिकार प्राप्त कर सकें।हर माता-पिता को अपनी बेटियों को उचित शिक्षा देनी चाहिए। तभी बेटियां सफल होकर अपने माता-पिता का मान बढ़ाएंगी। बेटियां आत्मनिर्भर बनेंगी, तो दहेज और बाल-विवाह जैसी समस्या खुद व खुद समाप्त हो जाएगी।

बेटियां हैं स्वर्ग की सीढ़ी,
पढ़ेगी तभी बढ़ेगी अगली पीढ़ी।

बेटा नहीं, बेटी है बदलाव का प्रतीक! इसका उद्देश्य बेटियों की शिक्षा के प्रति समाज के लोगों को जागरूक करना है। लोगों को यह बात समझनी होगी कि यदि बेटी पढ़ी-लिखी होगी तो वह बेटों की अपेक्षा समाज में ज्यादा बदलाव ला सकती है क्योंकि बेटियां दो-दो परिवारों को संभालती हैं। इसीलिए समाज को बेटों की अपेक्षा बेटियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

बेटा करेगा रोशन एक ही कुल को,
पर बेटियां करेंगी रोशन दो कुलों को।

मैं अपने समस्त शिक्षकों का आभार व्यक्त करती हूं। साथ ही बेटियों पर एक महत्वपूर्ण कविता--

- ❐ परिवार का शान होती हैं, सभ्यताओं का श्रृंगार होती हैं
- ❐ बेटियां होती हैं पाग बापू की, नकारात्मकता का प्रतिकार होती हैं

- शक्ति का प्रतीक बनकर, जीवन भर पीड़ाओं में पलकर
- संघर्षों की फुलवाड़ी में महकती हैं बेटियां
- आशाओं की किरण बनकर, परिश्रम की भट्टी में तपकर
- सूर्य की किरणों सा चमकती हैं बेटियां
- साहस भरा प्रकाश होती हैं, जीत का विश्वास होती हैं
- बेटियां होती हैं सृष्टि की सृजनकर्ता भी, सुख का आभास होती हैं
- खुद पर उठने वाले हर सवाल को सहकर
- निज जीवन में उठने वाले तमस को अलविदा कहकर
- अग्नि के स्वरुप सी पवित्रता धारण करती हैं बेटियां
- अविरल नदियों की कल-कल धाराओं में बहकर
- कुरीतियों के तीव्र तूफानों से सीधा उलझकर
- समाज को सद्मार्ग दिखाने में प्रयासरत रहती हैं बेटियां...

सत्र 2024-25

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान

सपने साकार: बेटियों का कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम

नाम- सपना भट्ट

कक्षा- बी0ए0 प्रथम सेमेस्टर

आजकल तकनीकी युग मे कम्प्युटर ज्ञान न केवल आवश्यक हो गया है बल्कि यह जीवन के अनेक संभावनाओ और अवसरों के द्वार खोलता है। कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम बेटियों के जीवन को नयी दिशा प्रदान करते है जिसमें बेटिया समाज में भी प्रेरणा का एक स्रोत बन जाती है।

- इसी प्रकार सभी ने एक दूसरे की उत्साह व रूची बढ़ायी तथा सहयोग प्रदान किया।
- आजकल बहुत से आनलाइन और तकनीकी आधारित रोजगार के अवसर हैं बेटियॉ इस प्रशिक्षण से अपनी कार्य क्षमता को बढ़ा सकती है व आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकती हैं।

सत्र 2024-25

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान: समद्ध बेटियां व समृद्ध समाज

हंसा भट्ट - बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

बेटियों को सम्मान और आत्मनिर्भरता प्रदान करना हमारे समाज की जिम्मेदारी है। ष्बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,अभियान के अंतर्गत, यह आवश्यक है कि हम अपनी बेटियों को शिक्षा प्रदान करें और उन्हें सशक्त बनाएं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा हमें एकजुट करता है। तीन महीने के कंप्यूटर प्रशिक्षण के दौरान, हम बेटियों को कंप्यूटर की बुनियादी बातों से परिचित कराते हैं। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के विभिन्न टूल्स और इंटरनेट का उपयोग सिखाकर, हम उन्हें ज्ञान की गहराई में ले जाते हैं। इस पहल से बेटियां प्रगति के पथ पर बढ़ेंगी जब वे सशक्त और आत्मनिर्भर बनेंगी। महाविद्यालय द्वारा बेटियों को अवसर प्रदान करना, शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देना, जागरूकता पैदा करना, और आर्थिक आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना है। बेटियों का डिजिटल मंच पर प्रवेश सिर्फ उनके लिए नहीं, बल्कि समग्र समाज के लिए लाभकारी हैं। इस प्रशिक्षण से तकनीकी दक्षता में वृद्धि, रोजगार के नए अवसर, शैक्षणिक उन्नति, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है। बेटियाँ सुरक्षित इंटरनेट का उपयोग करना भी सीखाती हैं, साथ ही डॉक्यूमेंट्स बनाना, डाटा एंट्री, चार्ट बनाना, और ई-मेल उपयोग करना भी सिखाया जाता है। तीन माह के कंप्यूटर प्रशिक्षण ने बालिकाओं के लिए रोजगार के नए अवसरों, शैक्षणिक उन्नति, और सामाजिक विकास के रास्ते खोले हैं। वे आत्मनिर्भर और सशक्त होकर अपने जीवन में आगे बढ़ सकेंगी।

सत्र 2024-25

कम्प्यूटर ज्ञान से बेटी का भविष्य एक नयी शुरूआत

नाम - विमला भट्ट
कक्षा- बी.ए. तृतीय (सेमेस्टर)

महिला की सुरक्षा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई थी। यह योजना तीन मंत्रालयों-महिला और बाल विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, और मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाई जाती है। कम्प्यूटर ज्ञान से बेटियों का भविष्य बहुत ही बेहतर बन सकता है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य बेटियों में कम्प्यूटर ज्ञान से रुचि लाना और उनकी समस्याओं का समाधान करना है।

सत्र 2024-25

शीर्षक महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

नाम अनीता कठायत
कक्षा बी .ए तृतीय (सेमेस्टर)

आज कल तकनीकी युग में कंप्यूटर न केवल आवश्यक हो गया है बल्कि यह जीवन के अनेक संभावनों व द्वार खोलता है! जिसका उद्देश्य है समान अवसर प्रदान करना शिक्षा और कौशल विकास सुरक्षा और जागरूकता आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रेरणा और मार्गदर्शन बेटियों का डिजिटल मंच पर प्रवेश न केवल उनके लिए बल्कि पुरे समाज के लिए लाभकारी है! प्रशिक्षण की अवधि 3 माह जिसमें कम्प्यूटर का परिचय, एम.एस. ऑफिस, सोशल व गर्वनेन्स प्रशिक्षण से रोजगार के अवसर, आत्मनिर्भरता डिजिटल साक्षरता,समाज मै बदलाव शैक्षिक और व्यवसायिक विकास आदि का अनुभव हुआ।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी), राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत में गुणवत्ता संवर्धन एवं सतत सुधार की संस्कृति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रकोष्ठ शिक्षण, अधिगम एवं प्रशासनिक कार्यों में श्रेष्ठ प्रथाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से शैक्षणिक उत्कृष्टता सुनिश्चित करता है। प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित, प्राचार्य, के अध्यक्षत्व में तथा समन्वयक डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता के कुशल रणनीति, सूझबूझ व तकनीकी दक्षता से आईक्यूएसी द्वारा क्षमता-वर्धन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है तथा सतत मूल्यांकन तंत्र के माध्यम से संस्थान की गुणवत्ता को सुदृढ़ किया जाता है। हितधारकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर शिक्षण-प्रशासनिक सुधार हेतु ठोस एवं प्रभावी निर्णय लिए जाते हैं।

संस्थान के आईक्यूएसी का उद्देश्य एक समावेशी, छात्र/छात्रा/शिक्षार्थी-केन्द्रित एवं नवाचारी शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण करना है, जिसमें आईसीटी आधारित कार्यप्रणाली, संकाय विकास एवं सहयोग. त्मक अधिगम को पूर्ण प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार आईक्यूएसी महाविद्यालय को शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में निरंतर अग्रसर करता है। इन्ही रणनीतियों व उद्देश्यों व कार्यशैली से महाविद्यालय को 30 अक्टूबर 2024 को नैक द्वारा बी ग्रेड कुल सीजीपीए 2.22 से प्रत्यायित किया गया।

आईक्यूएसी द्वारा आयोजित संगोष्ठी:

- **राष्ट्रीय वेबिनार - विकसित भारत 2047 (25 फरवरी 2025) :** राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी और बनबसा के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस वेबिनार में युवाओं में शोध और नवाचार पर प्रो. नमिता मिश्रा (गाजियाबाद) और डॉ. स्वेता चौहान (एलनहाउस, कानपुर) ने प्रेजेंटेशन दिया। तत्कालीन उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. (डॉ.) अंजू अग्रवाल, डॉ. खेमराज भट्ट, डॉ. दीपक कुमार पांडेय, प्रो. (डॉ.) हरीश चंद्र जोशी ने अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिनेश कुमार

गुप्ता ने किया, सह-संयोजक सुशीला आर्या रहीं, और अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. डॉ. अजिता दीक्षित व प्रो. डॉ. आनंद प्रकाश सिंह ने की।

- **नैक कार्य की तैयारी एवं प्रस्तुतिकरण पर संयुक्त ऑनलाइन संगोष्ठी (30 सितम्बर 2024)**- राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी एवं किच्छा के संयुक्त आयोजन में मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) आर.के. गुप्ता ने एसएसआर एवं दस्तावेजीकरण पर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित एवं डॉ. राजीव रतन की सहभागिता रही, जिससे नैक प्रत्यायन हेतु समन्वय सुदृढ़ हुआ।
- **पेटेंट योग्य विचार विकास एवं फाइलिंग पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार (26 अगस्त 2024)** - महाविद्यालय में आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि डॉ. आर.एस. भाकुनी (उप निदेशक, उच्च शिक्षा) एवं मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) नमिता मिश्रा ने आई पी आर, पेटेंट प्रक्रिया एवं नवाचार पर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. डी.के. गुप्ता द्वारा किया गया, जिससे प्रतिभागियों में पेटेंट एवं शोध के प्रति जाग. रूकता बढ़ी।
- **सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय स्थापना दिवस एवं ई-कन्टेन्टख्रशोध लेखन संगोष्ठी (13 अगस्त 2024)** - प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अजिता दीक्षित की अध्यक्षता में स्थापना दिवस मनाया गया तथा संगोष्ठी में संसाधन व्यक्ति डॉ. विवेक सक्सेना एवं डॉ. इन्दरनाथ गोस्वामी द्वारा आई, आई पी आर एवं शोध उपकरणों पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की शोध क्षमता विकसित हुई।
- **नैक प्रत्यायन विषयक एक दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला (08 सितम्बर 2023)**- इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) आर.के. गुप्ता ने नैक के सातों मानदण्डों एवं गुणवत्ता सुधार पर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. डी.के. गुप्ता द्वारा किया गया, जिससे नैक कार्य को दिशा मिली।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
is pleased to declare
Rajkiya Mahavidyalaya, Amori (Champawat)
Amori, Champawat,
affiliated to Soban Singh Jeena University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 2.22 on four point scale
at B grade
valid up to October 29, 2029

Date : October 30, 2024

Director

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

Quality Profile

Name of the Institution : Rajkiya Mahavidyalaya, Amori (Champawat)
Place : Amori, Champawat, Uttarakhand

Criteria	Weightage (W_i)	Criterion-wise Weighted Grade Point ($CI \times WGP_i$)	Criterion-wise Grade Point Average ($CI \times WGP_i / W_i$)
I. Curricular Aspects	100	180	1.80
II. Teaching-Learning and Evaluation	350	997	2.85
III. Research, Innovations and Extension	110	145	1.32
IV. Infrastructure and Learning Resources	100	240	2.40
V. Student Support and Progression	140	145	1.04
VI. Governance, Leadership & Management	100	261	2.61
VII. Institutional Values and Best Practices	100	250	2.50
Total	$\sum W_i = 1000$	$\sum (CI \times WGP_i) = 2218$	

Institutional CGPA = $\frac{\sum (CI \times WGP_i)}{\sum W_i} = \frac{2218}{1000} = 2.22$

Grade = B

Date : October 30, 2024

Director

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन प्रकोष्ठ
Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
आई० क्यू० ए० सी० आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन प्रकोष्ठ महाविद्यालय मे एक समिति/इकाई है जो महाविद्यालय में शैक्षणिक, सहशैक्षणिक गतिविधियों तथा प्रशासनिक कार्य पद्धति में सुधार करने, नवीन कार्य पद्धति सीखने हेतु कार्य योजना बनाने पर कार्य करती है। साथ ही महाविद्यालय के उद्देश्यों तथा सकारात्मक परिणामों को प्राप्त करने हेतु प्रयासरत रहती है।
-संदृष्टि-
1. आन्तरिक व बाह्य सहयोग व मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से उच्च गुणवत्तापूर्ण पठन पाठन के उत्कृष्ट मानक को प्राप्त करना तथा समावेशी व सतत विकास हेतु प्रयासरत रहना।
2. महाविद्यालय के शैक्षणिक, सहशैक्षणिक और प्रशासनिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए सचेत, सुसंगत और उत्प्रेरक कार्यक्रम हेतु एक गुणवत्तापरक प्रणाली विकसित करना तथा प्राचार्य महोदय के समक्ष संस्तुति हेतु प्रस्तुत करना।
-उद्देश्य-
Planning
Evaluation
Analysis
Improve
Internal Quality Assurance Cell

ONE DAY WORKSHOP
ON TITLE
WELCOME
HOW TO PREPARE FOR NAAC ACCREDITATION
Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)
Joint
Rajkiya Mahavidyalaya Kichha (U.S.Nagar)
Date: 30-09-2024 (Monday) 02:00PM– 3:30PM
Date: 30-09-24 02:00PM– 3:30PM
Google Meet Video link:
https://meet.google.com/ ues-okmo-gkc
PROF. R.K. GUPTA
Prof. (Dr.) R.K. Gupta
Resource Person & NAAC Assessor
Dr. D.K. Gupta
Organising Secretary and Coordinator, IQAC, Rajkiya Mahavidyalaya Amori
Dr. P.C. Bhatt
Joint Organising Secretary & Coordinator IQAC, Rajkiya Mahavidyalaya Kichha
Prof. (Dr.) Ajita Dikshit
Principal
Rajkiya Mahavidyalaya Amori
Prof. (Dr.) Rajeev Rattan,
Principal
Rajkiya Mahavidyalaya Kichha
Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)
IQAC CELL
Rajkiya Mahavidyalaya Kichha (U.S.Nagar)

महाविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियाँ व गतिविधियाँ

माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी व अन्य गणमान्य का स्वागत व अभिनंदन

माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी का स्वागत व अभिनंदन

माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा महाविद्यालय परिसर मे पौधरोपण

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ धन सिंह रावत जी का स्वागत व अभिनंदन

माननीय उच्च शिक्षा सचिव डॉ. रनजीत सिन्हा जी का स्वागत व अभिनंदन

आदरणीय जिलाधिकारी श्री नवनीत पांडे जी का स्वागत व अभिनंदन

अपर जिलाधिकारी चम्पावत श्री जयवर्धन शर्मा, महाविद्यालय मे एड्वान्स कंप्यूटर कोर्स का शुभारंभ करते हुए।

संबद्धता कार्य : सोबन सिंह जीना वि. वि. का पैनल निरीक्षण

❐ प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी, चम्पावत को महिला सशक्तिकरण व बाल विकास जनपद चम्पावत द्वारा बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओ अभियान में उत्कृष्ट कार्य हेतु 15000 रूपये व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

Excellence Award By Hon. Minister Smt. Rekha Arya,for the "Beti Bachao Beti Padhao" as Women Empowerment to the Principal Prof. (Dr.) Ajita Dikshit, Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat). 15000 Rs and Letter of Appreciation

देवभूमि की विकास यात्रा

देवभूमि उत्तराखंड का गठन 9 नवंबर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में हुआ, जो दशकों तक चले जनसंघर्ष और बलिदानों का परिणाम था। 1994 का राज्य आंदोलन, जिसमें महिलाओं, युवाओं और पर्वतीय समाज की भूमिका निर्णायक रही। भौगोलिक कठिनाइयों, सांस्कृतिक पहचान, शिक्षा-स्वास्थ्य की कमी, प्रशासनिक उपेक्षा और बढ़ते पलायन के कारण एक सशक्त जनआंदोलन बनकर उभरा। खटीमा गोलीकांड और रामपुर तिराहा की घटनाओं ने इस आंदोलन को ऐतिहासिक गति प्रदान की। महिलाओं की लगभग 70 प्रतिशत भागीदारी तथा गौरा देवी, टिंचरी माई, तीलू रौतेली और कमला पंत जैसी प्रेरणादायी हस्तियों के साथ-साथ इंद्रमणि बडोनी, चंडी प्रसाद भट्ट, सुंदरलाल बहुगुणा और गिरदा जैसे जननायकों के नेतृत्व ने आंदोलन को वैचारिक और नैतिक आधार दिया। राज्य गठन के 25 वर्षों में उत्तराखंड ने अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, किंतु गंभीर पलायन के साथ रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता इसके प्रमुख कारण हैं। इस दिशा में नंदा गौरा योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, देवभूमि उद्यमिता योजना जैसी पहलों ने महिला सशक्तिकरण, युवा उद्यमिता और स्वरोजगार को नया आयाम दिया है। फिर भी असमान क्षेत्रीय विकास, सीमित औद्योगीकरण, प्राकृतिक आपदाएँ और पर्वतीय भूगोल की जटिलताएँ राज्य के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। उत्तराखंड का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करते हुए स्थानीय संसाधनों, आधुनिक तकनीक और जनभागीदारी आधारित विकास मॉडल को कितनी प्रभावी ढंग से अपनाता है। ऐसे उत्तराखंड का निर्माण जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन विकास-यात्रा की धुरी बनें और देवभूमि सांस्कृतिक गौरव एवं आर्थिक प्रगति के संतुलित संगम के रूप में स्थापित हो।

अंजली एवं भागीरथी भट्ट बी.ए. पंचम सेमेस्टर

विश्व पर्यावरण दिवस :

राष्ट्रीय सेवा योजना :

शैक्षिक भ्रमण हेतु छात्र/छात्राएं श्यामलाताल हेतु प्रस्थान

रोवर्स रंजर्स :

2020: अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम

मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा स्कालरशिप योजना

अन्तर्राष्ट्रीय एड्स दिवस कार्यक्रम:

गणतंत्र दिवस, 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस:

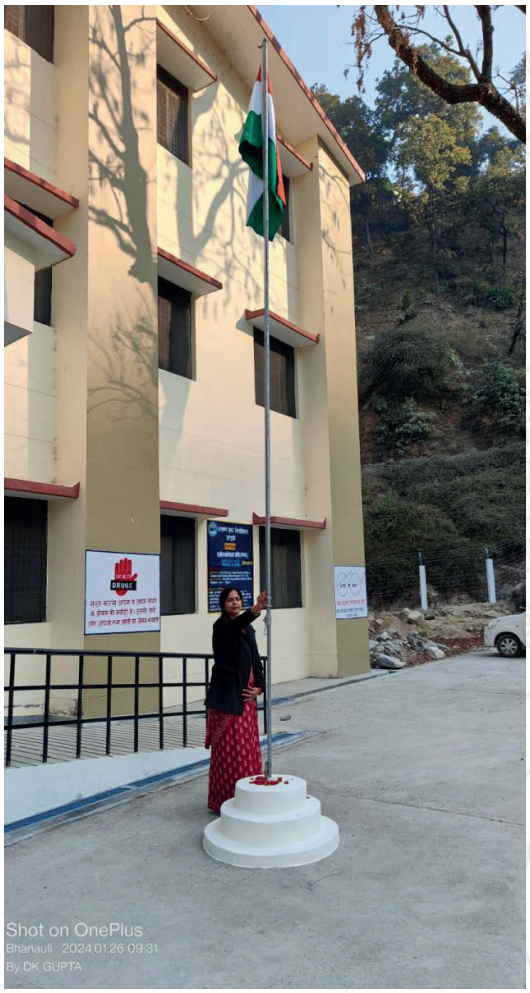

शिक्षक दिवसः

नशा-मुक्त अभियान :

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना: कंप्यूटर प्रशिक्षण अभियान

विधिक एवं साइबर जागरूकता कार्यक्रम :

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता :

अनुज सिंह चौहान, कक्षा बी0ए0 प्रथम सेमेस्टर सत्र 2023-24, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा से वि0वि0 स्तरीय क्रीड़ा बॉक्सिंग में 54-57 किग्रा. भार सर्वाधिक उठाकर गोल्ड मेडल पदक प्राप्त किया।

देवभूमि उद्यमिता योजना :

पाठशाला — राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण जारी

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण से स्वरोजगार देने का प्रयास

संवाद न्यूज एजेंसी

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत सातवें दिन उद्यमिता प्रशिक्षण जारी रहा। इसमें मधुमक्खी पालन की जानकारी दी गई।

सोमवार को श्यामलाताल से मधुमक्खी पालन उद्योग के उद्यमी हरीश चंद्र जोशी ने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने मधुमक्खी पालन की प्रक्रिया, शहद के विभिन्न प्रकार, उनके उपयोग और इस उद्यम से होने वाले लाभों के बारे में बताया।

मधुमक्खी पालन के कम खर्च में सही तरीके, मधुमक्खियों की देखभाल, शहद की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाने के तरीके बताए। इसमें आयुर्वेदिक चिकित्सा में उपयोग, खाद्य पदार्थों में स्वाद बढ़ाने और विभिन्न ब्यूटी प्रोडक्ट्स में इसके फायदों को बताया।

प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. अजिता दीक्षित ने प्रतिभागियों को उत्साहित कर कहा कि उद्यमिता के इस क्षेत्र में आगे बढ़ने से उन्हें आत्मनिर्भर बनने का महत्वपूर्ण अवसर मिलेगा। इस दौरान डीयूवाई केंद्र के समन्वयक डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, पुष्पा, डॉ. अतुल कुमार मिश्र, संजय कुमार गंगवार आदि रहे।

डिग्री कॉलेज अमोड़ी में मधुमक्खी पालन की जानकारी देते उद्यमी। स्रोत : कॉलेज

करियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल :

कॉफी विथ जिलाधिकारी चम्पावत :

राजनीतिशास्त्र विभाग-विभागीय परिषद: गतिविधियां

इतिहास विभाग-विभागीय परिषद : गतिविधियां

हिन्दी विभाग-विभागीय परिषद : गतिविधियां

अंग्रेजी विभाग-विभागीय परिषद गतिविधियां:

अर्थशास्त्र विभाग : विभागीय परिषद गतिविधियां:

शिक्षाशास्त्र विभाग : विभागीय परिषद गतिविधियां

अभिभावक शिक्षक संघ

युवा संसद मंचन

पुरातन छात्र संघ :

ALUMNI ASSOCIATION 2024-25

NEEMA BHATT	BABITA CHAUHAN	PRIYA BHATT	MAYA	RITU
PRESIDENT	VICE- PRESIDENT	SECRETARY	TRESURER	ASTT SECRETARY

प्रवेश प्रचार प्रसार कार्य

नैक पीयर टीम का निरीक्षण : 23-24 अक्टूबर 2024

❐ शैक्षणिक उत्कृष्टता टनकपुर, बनबसा, पाटी, किच्छा, सरस्वती इंटर कॉलेज खटोली, केआईटीएम डिग्री कॉलेज खटीमा तथा उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के साथ समझौता (एमओयू):

अमोड़ी डिग्री कॉलेज-खटोली के बीच हुआ समझौता

संवाद न्यूज एजेंसी

चंपावत। जिले के राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी और सरस्वती इंटर कॉलेज आनंदपुरी खटोली के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते का उद्देश्य नई शिक्षा नीति 2020 के तहत छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है।

एमओयू के तहत शैक्षणिक और कौशल विकास के क्षेत्र में सहयोग करते हुए ई-लर्निंग, कौशल प्रशिक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, डिजिटल साक्षरता, पर्यावरण जागरूकता और नैतिक मूल्यों के प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इससे दोनों संस्थान मिलकर ई-कंटेंट विकसित करेंगे।

मॉक टेस्ट, वर्कशॉप और कॅरिअर काउंसलिंग सत्र के साथ ही छात्रों को उद्यमिता, स्वरोजगार और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करेंगे। प्रोफेसर डॉ. अजिता दीक्षित और प्रधानाचार्य देवी प्रसाद शर्मा ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। पांच वर्ष की अवधि तक छात्रों के समग्र विकास पर काम होगा। संवाद

उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी अध्ययन केंद्र 18037:

महिला सशक्तीकरण

शोध व नवाचार

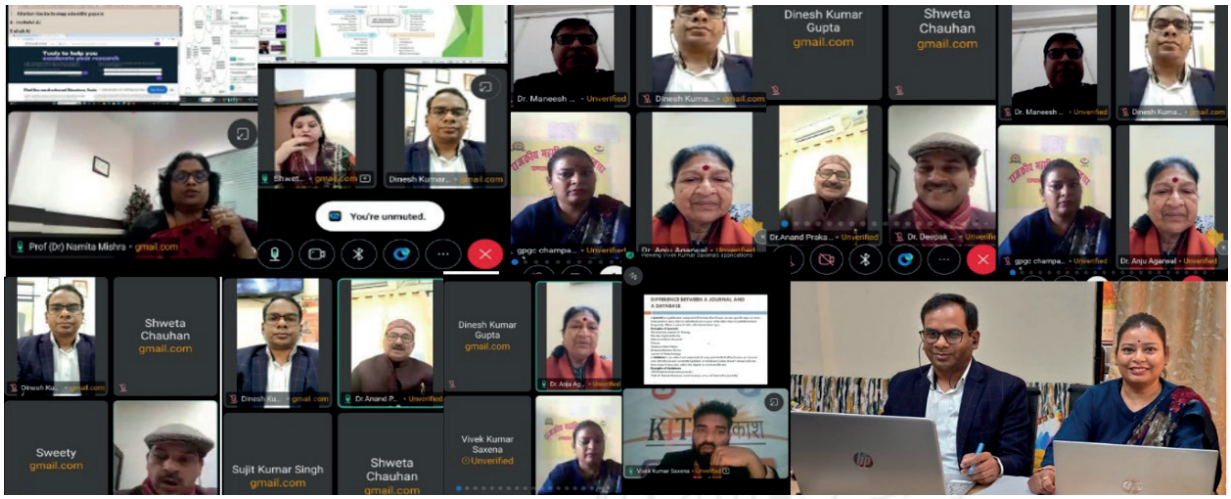

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयन्ती समारोह-

रोवर्स प्रशिक्षण शिविर

संस्कृत विभाग – प्रमाण पत्र वितरण

तत्कालीन माननीय विद्यालय श्री कैलाश चंद्र गहतोड़ी, वार्षिक क्रीड़ा सत्र 2021, का शुभारंभ करते हुए।

Eco Club:

शिक्षक दिवस

हिन्दी दिवस

आजादी का अमृत महोत्सव

एक भारत श्रेष्ट भारत

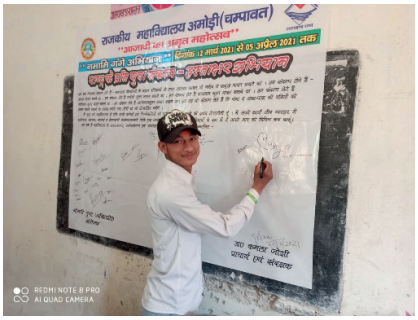

कविता पाठ प्रतियोगिता

एन एस एस विशेष शिविर–
जन जागरूकता अभियान

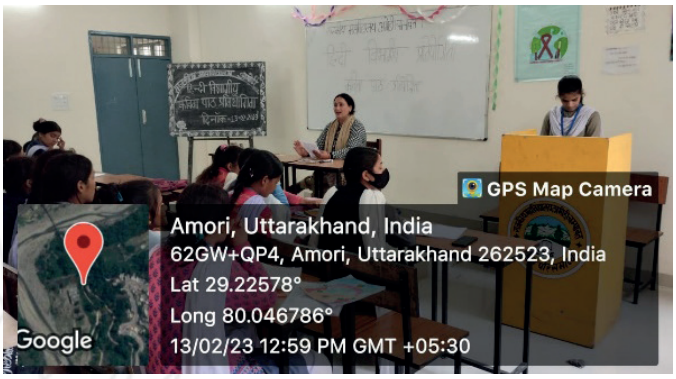

शैक्षिक भ्रमण

रंगोली प्रतियोगिता

माननीय मंत्री जी एवं माननीय विधायक श्री
कैलास चंद्र गहतोड़ी जी

समाचार पत्रों में महाविद्यालय की खबरें

राष्ट्रीय वेबिनार का हुआ आयोजन

चंपावत। अमोड़ी महाविद्यालय मे पेटेंटेबल आइडिया का विकास और पेटेंट को फाइल करना विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उपनिदेशक डॉ. सर्वजीत सिंह और विशिष्ट अतिथि कमल सिंह बिष्ट रहे।

सीएमआर विवि बेंगलुरु प्रो. भूपेंद्र बहादुर तिवारी ने पेटेंट के प्रारूप, विचार पर विस्तार से व्याख्यान दिया। डॉ. आरएस भाकुनी ने आईपीआर के आशय, सीएम शोध प्रोजेक्ट, सीएम उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति की जानकारी दी।

आईटीएस स्कूल आफ मैनेजमेंट गाजियाबाद प्रो. नमिता मिश्रा ने पेटेंट आवेदन, ग्रांट, विचारों की सुरक्षा, आवेदन करने का तरीका आदि के बारे में बताया। संचालन संयोजक सचिव डॉ. डीके गुप्त,ा किरन शर्मा ने किया।

प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित ने सभी का आभार जताया। यहां डॉ. संजय कुमार, डॉ. पुष्पा, डॉ.रंजना, सिंह, अतुल मिश्र, संजय कुमार गंगवार ने प्रतिभाग किया। संवाद

अमोड़ी डिग्री कॉलेज–खटोली के बीच हुआ समझौता

संवाद न्यूज एजेंसी

चंपावत। जिले के राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी और सरस्वती इंटर कॉलेज आनंदपुरी खटोली के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते का उद्देश्य नई शिक्षा नीति 2020 के तहत छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है।

एमओयू के तहत शैक्षणिक और कौशल विकास के क्षेत्र में सहयोग करते हुए ई-लर्निंग, कौशल प्रशिक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, डिजिटल साक्षरता, पर्यावरण जागरूकता और नैतिक मूल्यों के प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इससे दोनों संस्थान मिलकर ई-कंटेंट विकसित करेंगे।

मॉक टेस्ट, वर्कशॉप और कॅरिअर काउंसलिंग सत्र के साथ ही छात्रों को उद्यमिता, स्वरोजगार और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करेंगे। प्रोफेसर डॉ. अजिता दीक्षित और प्रधानाचार्य देवी प्रसाद शर्मा ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। पांच वर्ष की अवधि तक छात्रों के समग्र विकास पर काम होगा। संवाद

33 छात्राओं को मिलेगा निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण

चंपावत। महाविद्यालय अमोड़ी में विशेष कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी है। केआईटीएम के प्रबंध निदेशक कमल सिंह बिष्ट ने बताया कि अब 33 छात्राओं को तीन माह का निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित ने कहा कि प्रशिक्षण से छात्राओं को डिजिटल कौशल में निपुण बनाकर उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त करना है। महिला सशक्तीकरण और बाल विकास अधिकारी राजेंद्र सिंह बिष्ट ने कहा कि छात्राओं को कंप्यूटर और डिजिटल शिक्षा में निपुण होने के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए महाविद्यालय को पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं।

इसका लाभ लेकर छात्राएं अपना ज्ञान बढ़ाएंगी। बाल विकास अधिकारी पुष्पा चौधरी ने छात्राओं को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान कार्यक्रम संयोजक डॉ. डीके गुप्ता, डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, अतुल मिश्र, संजय कुमार गंगवार आदि मौजूद रहे। संवाद

05 Oct 2024 Amar Ujala

एनएसएस स्वयंसेवी भी बने कोरोना वारियर्स

चम्पावत | हमारे संवाददाता

जागरूकता

- सोशल मीडिया और घर-घर जाकर कर रहे हैं जागरूक
- आरोग्य सेतु की दी जा रही है जानकारी

कोरोना से जंग में एनएसएस शिवरार्थी भी अपनी भागीदारी दे रहे हैं। स्वयं सेवी घर-घर जाकर लोगों को जागरूक कर रहे हैं। साथ ही लोगों को आरोग्य सेतु एप की जानकारी दी जा रही है।

अमोड़ी डिग्री कॉलेज के एनएसएस स्वयंसेवी भी कोरोना की जंग में आगे आ गए हैं। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रंजना सिंह ने बताया कि स्वयंसेवी सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को घरों में ही रहने का संदेश दे रहे हैं। स्वयंसेवी घर-घर जाकर लोगों को घरों में ही रहने के फायदे, हाथ धोने के तरीके, मास्क और आरोग्य सेतु एप की आवश्यकता को समझा रहे हैं। उन्होंने संदेशात्मक बैनर व पोस्टर तैयार किए हैं। अभियान में निर्मला, रविंद्र, मुकेश, मनीष, पूजा, रीता, बीना, सुमन, रश्मि, मनीष, ममता, सुवर्णा, गीता आदि सहयोग कर रहे हैं।

प्राधिकरण के उद्देश्य बताए

चंपावत। अमोड़ी डिग्री कॉलेज में राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रोफेसर अजीता दीक्षित ने प्राधिकरण के उद्देश्यों, महत्व की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्राधिकरण गरीब, मजदूर, असहायों को कानूनी जानकारी देना है। कार्यक्रम संचालक डॉ. संजय कुमार ने बताया कि नौ नवंबर 1987 में प्राधिकरण लगातार समाज हित में कार्य कर रहा है। संवाद

27-11-2024 Amar Ujala local

अमोड़ी कॉलेज में सात दिनी प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

चंपावत के अमोड़ी कॉलेज में सात दिनी प्रशिक्षण में शामिल प्रतिभागी। संवाद

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में कौशल विकास को लेकर सात दिनी प्रशिक्षण का समापन हो गया है।

प्रशिक्षण में महाविद्यालय के 45 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्राचार्या अजीता दीक्षित ने बताया कि महिंद्रा प्राइड क्लासरूम की ओर से आयोजित सात दिनी प्रशिक्षण में अनेक प्रकार की जानकारी प्रदान की गई।

इस दौरान कार्यक्रम समन्वयक संजय कुमार, डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, डॉ. रंजना सिंह, अतुल कुमार मिश्र, पुष्पा नेगी, संजय कुमार गंगवार, डॉ. रेखा मेहता, हरीश चंद्र जोशी, महेश सिंह कन्याल, दशरथ बोहरा मौजूद रहे। संवाद

सुरक्षित ऑनलाइन खरीदारी के प्रति किया जागरूक

चंपावत। जिले के राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में पुलिस ने महिला और साइबर सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान चलाया। इस दौरान छात्र-छात्राओं को महिला और साइबर सुरक्षा को लेकर जागरूक किया गया। सोमवार को डॉ. प्राचार्य अजिता दीक्षित की अध्यक्षता में चल्थी चौकी प्रभारी निर्मल सिंह लटवाल ने विद्यार्थियों को सोशल मीडिया प्लेटफार्मों फेसबुक, व्हाट्सएप, और इंस्टाग्राम पर प्रोफाइल सेटिंग्स से पहले सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने हाउस, डिजिटल अरेस्ट के जोखिमों पर चर्चा की और छात्रों को स्नैपडील, फ्लिपकार्ट और मीशो आदि शॉपिंग साइट्स पर सुरक्षित खरीदारी के लिए भी जागरूक किया। संचालन डॉ. डीके गुप्ता ने किया। यहां डॉ. एसके गंगवार, डॉ. पुष्पा ,डॉ. अतुल कुमार मिश्र, हरीश चंद्र जोशी, दशरथ सिंह बोहरा, महेश लाल और हेड कांस्टेबल भुवन लाल आदि मौजूद रहे। संवाद03-12-2024Amar

– मनोरमा जोशी, समाजसेविका

साइबर अपराधों के प्रति सजग रहें विद्यार्थी

अमोड़ी कालेज में विद्यार्थियों को जागरूक करते चल्थी चौकी प्रभारी निर्मल • सौ. कालेज

संस, जागरण • चंपावत : राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में महिला एवं साइबर सुरक्षा विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। आइक्यूएसी के तत्वावधान में एनएसएस विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चल्थी चौकी प्रभारी निर्मल सिंह लटवाल रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को फेसबुक, वाट्सएप और इन्स्टाग्राम पर प्रोफाइल सेटिंग्स, मित्रता अनुरोधों को स्वीकार करने की प्रक्रिया और व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से पहले सतर्क रहने की सलाह दी।

उन्होंने छात्रों को स्नैपडील, फ्लिपकार्ट और मीशो जैसी साइटों पर सुरक्षित खरीदारी के लिए जागरूक किया। एंड्रायड फोन का सुरक्षित और उचित उपयोग करने के तरीके बताए। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि विद्यार्थियों को अपने व्यक्तिगत और वित्तीय डेटा की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित व संचालन डा. डीके गुप्ता ने किया। डा. एसके गंगवार, कार्यक्रम अधिकारी डा. पुष्पा व विद्यार्थियों में हंसा भट्ट, भावना और देवेन्द्र सिंह नेगी ने भी विचार रखे।

03-12-2024 Dainik Jagran

बसंत पांडय, बचो सिंह आदि ने सहयोग किया। संवाद

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। संवाद

अमोड़ी में सूरज बने अध्यक्ष

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में शनिवार को छात्रसंघ चुनाव निर्विरोध हुआ जिसमें सर्वसम्मति से सूरज सिंह अध्यक्ष, दीप भट्ट उपाध्यक्ष, रीता भट्ट छात्रा उपाध्यक्ष, तनीषा सचिव, आशा नेगी कोषाध्यक्ष, ओमप्रकाश जोशी संयुक्त सचिव, हंसा भट्ट संकाय प्रतिनिधि, किरन भट्ट विश्वविद्यालय प्रतिनिधि चुनी गईं। निर्वाचन अधिकारी पुष्पा ने बताया कि सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित आदि ने सहयोग किया। संवाद

अमोड़ी डिग्री कॉलेज में छात्रसंघ के मनोनीत पदाधिकारी। संवाद

एड्स रोगी से भेदभाव नहीं करना चाहिए : डॉ. अनीता

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में विश्व एड्स दिवस पर रविवार को शिविर का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित और एनएसएस संयोजक पुष्पा ने बताया कि प्रथम सत्र में स्वयंसेवियों की ओर से साफ-सफाई की गई। द्वितीय बौद्धिक सत्र में डॉ. अनीता चंद ने कहा कि हमें एड्स रोगी से भेदभाव नहीं, बल्कि हमें रोग से लड़ना है। वहां हरीश चंद्र जोशी, दशरथ सिंह बोहरा, राम सिंह आदि रहे। संवाद

04-12-2024 Amar Ujala

अमोड़ी के कॉलेज ने नैक मूल्यांकन में बी ग्रेड पाया

23, 24 अक्तूबर को टीम ने महाविद्यालय में किया था निरीक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

चंपावत। महाविद्यालय अमोड़ी ने नैक मूल्यांकन में बी ग्रेड हासिल किया है। महाविद्यालय में 23 और 24 अक्तूबर को नैक की टीम ने गहन निरीक्षण किया। इसमें पिछले पांच वर्षों के शैक्षणिक परिणाम, विद्यार्थियों को उपलब्ध सुविधाएं, आधारभूत संसाधन व अन्य कार्यों का मूल्यांकन किया गया।

चंपावत के अमोड़ी कॉलेज में नैक टीम के साथ प्राध्यापक व छात्र छात्राएं। संवाद

प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. अजिता दीक्षित ने बताया कि महाविद्यालय ने अपने आशानुरूप ग्रेड प्राप्त किया है। उन्होंने केआईटीएम के प्रबंधक कमल सिंह बिष्ट का एमओयू के क्रम में सहयोग करने के लिए आभार जताया।

कहा कि महाविद्यालय के आईक्यूएसी, नैक टीम के संयोजक डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता और नैक स्क्रीनिंग समिति के सदस्यों डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, डॉ. पुष्पा, डॉ. अतुल मिश्र और डॉ. संजय गंगवार के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

इस मौके पर नोडल डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता ने कहा कि यह केवल एक ग्रेड नहीं है। यह हमारे सामूहिक प्रयास, ईमानदारी, समर्पण का प्रतीक है।

वहां वरिष्ठ सहायक हरीश चंद्र जोशी, दशरथ बोहरा, महेश लाल, दिनेश रावत आदि रहे।

न्यूज डायरी

विद्यार्थियों को एनईपी की जानकारी दी

चंपावत। जिले के राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। सोमवार को प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला में कार्यक्रम संयोजक संजय कुमार गंगवार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की जानकारी दी। डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, डॉ. संजय कुमार ने भी कई महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। प्राध्यापक अतुल कुमार मिश्र ने एनईपी से संबंधित तकनीकी बिंदुओं के बारे में बताया। यहां गीता, भागीरथी, देवेंद्र, विमला, निर्मला, चारू, सपना, रश्मि आदि मौजूद रहीं। संवाद

आपदा से महाविद्यालय को मिले 'जख्म' अब भी हरे

संवाद सहयोगी, जागरण • चंपावत : जिले में हुई अतिवृष्टि के कारण सरकारी और निजी संपत्ति को पहुंचे नुकसान के निशान अभी भी ज्यों के त्यों हैं। आपदा ने राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी के भवन और परिसर को भी गहरे जख्म दिए हैं। महाविद्यालय में पानी के साथ मलबा घुसने से व्यापक नुकसान हुआ है। प्राचार्य ने प्रशासन को पत्र भेजकर नुकसान की जानकारी देते हुए मरम्मत कार्य शुरू करने की मांग की है।

महाविद्यालय अमोड़ी परिसर के पास बना रोखड़ और भवन के पास पहुंचा मलबा • सौ. महाविद्यालय

महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित ने बताया कि पास में बहने वाली नदी के उफान में आने से पूरा महाविद्यालय परिसर पानी में डूब गया था। मलबा शैक्षणिक ब्लाक की खिड़कियों को तोड़कर भवन में घुस गया। जिससे ग्राउंड फ्लोर में स्थित प्राचार्य कक्ष, कार्यालय, कक्षा कक्षों, स्टाफ कक्ष, प्रशाधन कक्ष सहित सभी कमरों में बाढ़ का पानी भर गया। उन्होंने बताया कि 13 सितंबर को रात में अत्यधिक बाढ़ के कारण नदी ने एक बार फिर अपना रास्ता बदल कर महाविद्यालय की ओर रुख कर लिया। मैदान के बीचों बीच नदी का बहाव आने से सीसी रोड क्षतिग्रस्त हो गई और प्रवेश गेट तथा गार्ड रूम जमींदोज हो गया। प्राचार्य ने बताया कि प्रवेश गेट और सड़क पूरी तरह टूटने से महाविद्यालय तक पहुंचना मुश्किल हो गया है। किसी तरह महाविद्यालय के कार्मिक एवं विद्यार्थी महाविद्यालय में पहुंच रहे हैं। यही नहीं महाविद्यालय परिसर में लगे पेड़-पौधे, ट्री गार्ड, एनएसएस के बोर्ड, वाटर मोटर, पानी की लाइन व स्टैंड पोस्ट आदि सभी बाढ़ में बह गए हैं। उन्होंने बताया कि प्रशासन को महाविद्यालय में पहुंचे नुकसान की जानकारी दे दी गई है। उन्होंने प्रशासन से जल्द टीम भेजकर नुकसान का आंकलन कर सुधारीकरण कार्य शुरू करने की मांग की है।

दैनिक जागरण दिनांक 22/9/2024

अमोड़ी महाविद्यालय में किया पौधरोपण

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में एनएसएस इकाई ने प्राचार्य प्रो. अजिता दीक्षित के नेतृत्व में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण किया गया। एनएसएस अधिकारी पुष्पा नेगी की देखरेख में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न प्रजाति के पौधे लगाए गए। यहां हंसा भट्ट, विमला, राधा, रश्मी, देवेंद्र सिंह नेगी, ओमप्रकाश जोगी, हरीश जोशी, डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, डॉ. रंजना, डॉ. संजय सिंह, संजय गंगवार, अतुल कुमार मिश्रा आदि रहे। संवाद

Amar Ujala 20-07-2024

हिन्दुस्तान

अमोड़ी में एंटी रैगिंग की जानकारी दी

01-12-2022

चम्पावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में रैगिंग और एंटी रैगिंग विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। मंगलवार को कार्यशाला की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ.अजीता दीक्षित ने की। प्राचार्य ने छात्र-छात्रओं को कॉलेज में हर नए सत्र में भरे जाने वाले एंटी रैगिंग फार्म की उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

प्राचार्य ने एंटी रैगिंग के ऑनलाइन आवेदन की जानकारी के साथ एंटी रैगिंग आवेदन की गंभीरता के बारे में सचेत किया। इस अवसर पर डॉ.रेखा मेहता और डॉ.संजय गंगवार ने अपने विचार व्यक्त किए। यहां डॉ. संजय कुमार, डॉ.अतुल मिश्र, हरीश जोशी, महेश लाल, दशरथ बोहरा रहे।

अमर उजाला

छात्र-छात्राओं को दी एंटी रैगिंग की जानकारी

01-12-2022

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को रैगिंग व एंटी रैगिंग के संबंध में जानकारी दी गई। प्राचार्य डॉ. अजीता दीक्षित की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में संयोजक पुष्पा ने छात्र-छात्राओं को रैगिंग क्या है, यह अपराध क्यों है और महाविद्यालय में प्रत्येक नए सत्र में भरे जाने वाले एंटी रैगिंग फार्म को भरने और उसकी उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की।

उन्होंने छात्रों को एंटी रैगिंग फार्म कैसे भरना है, उसमें कौन कौन सी जानकारी दी जानी है इसके बारे में बताया। इस मौके पर डॉ. रेखा मेहता, संजय गंगवार, अतुल कुमार मिश्र, हरीश जोशी, महेश लाल और दशरथ बोहरा आदि ने विचार रखे। संवाद

क्विज में भावना राणा ने बाजी मारी

चंपावत। अमोड़ी डिग्री कॉलेज में पुरस्कार वितरण समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। शुक्रवार को प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित की अध्यक्षता में हुए पुरस्कार वितरण समारोह में क्विज में भावना राणा ने प्रथम, ओम प्रकाश जोशी दूसरा और दीक्षा को तीसरा स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया। निबंध में चांदनी ने पहला, नीमा भट्ट ने दूसरा, निर्मला ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस दौरा पर राजनीति विज्ञान और अंग्रेजी विषय के पुरस्कारों का वितरण भी किया गया है। छठे सेमेस्टर के विद्यार्थियों को विदाई दी गई। यहां डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, डॉ. रेखा मेहता, हरीश जोशी, महेश लाल, दशरथ सिंह बोहरा, ओमप्रकाश, देवेंद्र नेगी, हिमांशु, नीमा भट्ट रहीं। संवाद

राष्ट्रीय वेबिनार में पेटेंट विषय पर हुई चर्चा

चंपावत। अमोड़ी महाविद्यालय में पेटेंटेबल आइडिया का विकास और पेटेंट को फाइल करना विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उपनिदेशक डॉ. आरएस भाकुनी और विशिष्ट अतिथि डॉ. सर्वजीत सिंह और कमल सिंह बिष्ट रहे। डॉ. भाकुनी ने आईपीआर के आशय, सीएम शोध प्रोजेक्ट, सीएम उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति की जानकारी दी। आईटीएस स्कूल ऑफ मैनेजमेंट गाजियाबाद प्रो. नमिता मिश्रा ने पेटेंट आवेदन, ग्रांट, विचारों की सुरक्षा, आवेदन करने का तरीका आदि के बारे में बताया। संचालन संयोजक सचिव डॉ. डीके गुप्ता, किरन शर्मा ने किया। संवाद

Amar Ujala, Date 28-08-2024

महाविद्यालय अमोड़ी परिसर का निरीक्षण करते एडीएम जयवर्धन शर्मा व अन्य • सौ. प्रशासन

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी को नदी से बचाने के लिए सुरक्षात्मक कार्य करें : शर्मा

संवाद सहयोगी, जागरण • चंपावत : प्रशासन ने मानसून से पूर्व चंपावत-टनकपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बेहतर यातायात प्रबंधन की तैयारियां तेज कर दी हैं इसी कड़ी में गुरुवार को अपर जिलाधिकारी जयवर्धन शर्मा ने स्वाला डेंजर जोन का निरीक्षण किया। साथ ही उन्होंने राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी का स्थलीय निरीक्षण कर संबंधितों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने सुरक्षा के दृष्टिगत स्वाला में हो रहे सड़क सुधारीकरण और पहाड़ी ट्रीटमेंट के कार्यों का जायजा लिया। एनएच के अधिकारियों से स्वाला डेंजर जोन काम की प्रगति और पहाड़ी की सुरक्षा के लिए किए जा रहे उपायों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि पहाड़ी ट्रीटमेंट और सुधारीकरण के सभी कार्य मानसून काल शुरू होने से पहले ही पूर्ण कर लिए जाएं, ताकि राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात किसी प्रकार से बाधित न हो। राष्ट्रीय राजमार्ग के अधिकारियों ने बताया कि विभिन्न स्थानों में सुरक्षात्मक एवं रोड सेफ्टी के कार्य किए जा रहे हैं, जो मानसून के प्रारंभ होने से पहले ही पूर्ण कर लिए जाएंगे। एडीएम ने राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी को पास में बहने वाली नदी से हो रहे खतरे का निरीक्षण किया। नदी से हो रहे कटान के संबंध में भी जानकारी ली। इस दौरान एसडीएम, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी आदि मौजूद रहे।

अर्थशास्त्र परिषद की अध्यक्ष बनीं भागीरथी

चंपावत। डिग्री कॉलेज अमोड़ी में सत्र 2025-26 के लिए शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन के लिए अर्थशास्त्र विभागीय परिषद का गठन किया गया। प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित की अध्यक्षता में विभाग प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता ने प्रक्रिया शुरू कराई। इसमें बीए पंचम सेमेस्टर की भागीरथी भट्ट को अध्यक्ष, बीए तृतीय सेमेस्टर के राम सिंह को उपाध्यक्ष, बीए तृतीय सेमेस्टर की रूचि बोहरा को कोषाध्यक्ष बनाया गया। बीए प्रथम सेमेस्टर की चंद्र राणा को सचिव, बीए प्रथम सेमेस्टर की पूजा भट्ट को उपसचिव चुना गया। डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता ने परिषद की संरचना, शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों, प्रशासनिक भूमिकाओं के बारे में जानकारी दी। वहां कविता भट्ट, मीनाक्षी भट्ट, सपना भट्ट, निशा नेगी आदि रहे। संवाद

Amar Ujala 03-12-2025

अमोड़ी में निकली मतदाता जागरूकता रैली

चंपावत। महाविद्यालय अमोड़ी में मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। निष्पक्ष मतदान करने की शपथ दिलाई पोस्टर प्रतियोगिता में अंजली पहले, ओम प्रकाश दूसरे और हरीश जोशी तीसरे स्थान पर रहे। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. अजिता दीक्षित, डॉ. पुष्पा, संजय कुमार, डॉ. रेखा मेहता रहे।

रोवर रेंजर शिविर शुरू

चंपावत। डिग्री कॉलेज अमोड़ी में बुधवार से स्काउट गाइड का तीन दिनी रोवर रेंजर शिविर शुरू हो गया है। उद्घाटन प्राचार्या डॉ. कमला जोशी और डॉ. बीसी जोशी ने किया। सरस्वती वंदना के साथ प्रथम दिवस के कार्यक्रम में स्काउड गाइड टीम ने आकाश के प्रतीक नीला रंग, ऊर्जा के प्रतीक लाल रंग के महत्व की जानकारी देने के साथ निरंतर कार्य करते रहने की प्रेरणा दी। दूसरे सत्र में लार्ड ब्रेडन पावेल को याद किया गया। वहां प्रभारी सिद्धेश्वर सिंह, अनिल राणा, महेश लाल, मुकेश कुमार, रविंद्र कुमार, रेखा, निर्मला थे। संवाद

अमोड़ी डिग्री कॉलेज में हुआ तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम

चम्पावत। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत डिग्री कॉलेज अमोड़ी में शुक्रवार को कार्यशाला का आयोजन किया गया। यहां विद्यार्थियों को तंबाकू के दुष्प्रभाव बताए गए। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रबन्धक प्रेम बल्लभ भट्ट ने बताया कि छात्र-छात्राओं को स्वास्थ्य मिशन के तहत संचालित कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यशाला में निबन्ध, भाषण, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस मौके पर प्राचार्या डॉ. कमला जोशी, हेमचन्द्र बहुगुणा, हरीश पाण्डे, हरीश भट्ट मौजूद रहे।

चम्पावत के अमोड़ी कॉलेज में शुक्रवार को छात्र-छात्राओं को जानकारी देते स्वास्थ्य कर्मी।

छात्राओं को दिया स्मार्ट बोर्ड संचालन का प्रशिक्षण

चंपावत। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत महिला और बाल विकास विभाग के सहयोग से आईक्यूएसी सेल की ओर से छात्राओं को स्मार्ट बोर्ड संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। शुक्रवार को प्रशिक्षक राखी गुप्ता, आईटीएम कॉलेज के बीएससी आईटी और बीसीए के अंतिम सेमेस्टर के छात्र निखिल धौनी, शिवम बिष्ट और राहुल चौसाली ने भी अपना योगदान दिया। यहां संयोजक डॉ. डीके गुप्ता, डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रंजना सिंह, डॉ. पुष्पा, डॉ. अतुल कुमार मिश्र रहे। संवाद